

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.

CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 5 अंक 11, नवम्बर 2021

<http://www.kilol.co.in>

स्कूली शिक्षा में समर्पण हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,

दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर

ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य

वार्षिक - 720/-

आजीवन - 10000/-

अनुक्रमणिका

मेरी शाला.....	7
अंगना मा शिक्षा.....	9
तिरंगा.....	11
पंचतंत्र की कथाएँ.....	12
नेक कर्म.....	14
मेरा पुस्तकालय.....	15
चिड़िया	17
अधूरी कहानी पूरी करो	18
अमित के गणित शिक्षक	18
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी.....	19
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी.....	21
कौवा और मोर.....	21
टेलीविजन	22
रात	23
दीपावली	24
जंगल में बाढ़.....	25
प्रभु.....	27
अंगना म शिक्षा.....	28
प्रकृति.....	30
आई दीपावली.....	31
पंखुड़ी और पारुल	32
फल	34
जंगल	35
मत रोको गंगा की धारा	36
महिला	37
सूरज	39
तितली.....	40

अहंकारी खरगोश	41
खूब पढ़े हिंदी	43
बच्चे मन के सच्चे	44
कबाड़ में जुगाड़	46
बापू	49
A Beacon of Hope	51
पितर देव को प्रणाम	52
हिंदी	54
बनोगे लाजवाब	56
पितृपक्ष	57
तर्पण	60
हमारे अपने पेड़	61
कबाड़ ले जुगाड़	63
भूखा शेर	64
सत्य अहिंसा के तुम पुजारी	66
परम पूज्य चिकित्सक-गण	68
पढ़ना जरूरी है	69
शुभता की जिज्ञासा	70
विज्ञान पहेलियाँ	72
पानी	74
शिक्षा जन जागरण	75
दादा जी	77
बेटियाँ	78
भारत ल स्वच्छ बनाना है	79
नदियों की धारा	81
काला बन्दर	82
रेल	83
शेर का शिकार	84
गप्पू जी	86

में किसान हूँ.....	87
घड़ी	89
फुगड़ी	90
बाड़ी मेरी कितनी प्यारी.....	91
पतंग	92
गुब्बारा.....	93
सूरज से सीख	94
हिंदी भारत की शान	95
बेटी	96
बंदर	98
छत्तीसगढ़ के भुइयाँ	100
पितृ पक्ष.....	102
नीम का पेड़.....	103
नन्हा चित्रकार.....	104
फूल.....	106
तितली रानी.....	107
बदलाव	108
मच्छर	110
कौआ.....	111
पुस्तक दिवस.....	112
पुराना जुता	113
मेरे मन को	116
महादेव.....	117
मेरी बगिया	118
बहन का स्नेह.....	120
सुंदर और सजीला आम	121
पितृगण	122
चिड़िया	124

बाल पहेलियाँ	125
आओ ज्ञान का दीप जलाएं	127
तितली रानी	129
बचपन	131
हे नवदुर्गे माँ	132
नारी जाति का अस्तित्व	133
दीवाली आई	135
मेंढक और साँप	137
गुड़िया रानी	138
आकर्षक खेलौने	139
दीपावली	141
काँटन कैडी	142
झूठ - फरेब की दुनिया	143
चूहा और कबूतर	145
शेरावाली	147
चिंटी	148
यादें मेरे गाँव के	149
पापा के सपने	151
मौसम	153
यूँ ही नहीं मिलती मंजिल	155
मेरा एक घर है	156
डिबिया का रहस्य	157
हे अविनाशी, हे अनंत	159
राम	161
नारी	162
हमारे प्रेरणा स्रोत	164
हाथी आया	166
चलो दीपावली मनाएंगे	168

ये भोले भाले बच्चे	169
भगवान का स्वरूप	171
पाप के घड़ा	173
दीपावली	174
गुपचुप वाला	176
तेरी महिमा अपरंपार है.....	178
नन्ही चींटी.....	179
सरदी आई	181
चित्र देख कर कहानी लिखो	182
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी.....	182
कुम्हार और कबूतर.....	182
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	183
भाखा जनऊला	184

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू,
नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा,
राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

इस माह हम चाचा नेहरू जी की याद में बाल दिवस मनाएंगे. बाल दिवस में बच्चों को इससे बेहतर और क्या उपहार होगा कि हम उन्हें पढ़ने के लिए किलोल का वार्षिक अथवा आजीवन सब्सक्रिप्शन लेकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करें. अब किलोल का चंदा देना और आसान कर लिया गया है. आप पेमेंट गेटवे में जाकर उसे दे सकते हैं. आप सभी से अपील है कि अपने-अपने स्कूलों में बच्चों को पढ़ने, उनकी एवं शिक्षकों की रचनाओं को किलोल में प्रकाशित कर उसे पढ़ने का आनन्द लेने चंदा भेजने की प्रक्रिया से अवगत होकर इस माह अधिक से अधिक संख्या में सब्सक्रिप्शन लेवें.

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी,
आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक
डॉ. आलोक शुक्ला

मेरी शाला

रचनाकार- अशोक कुमार पटेल



मेरी शाला है, विद्या का मंदिर
यही ज्ञान-अर्जन की है, मंजिल.

मेरे शिक्षक इसके पुजारी
ये सदज्ञान बांटते न्यारी.

ये उजले चाक दिखाते नई राह
ये श्यामपट भी दिलाते नई चाह.

शाला के बच्चे देवता स्वरूप
शाला की बच्ची देवी स्वरूपा.

मेरी शाला बच्चों की फुलवारी
ये फूल हैं इन्हीं से किलकारी.

मेरी शाला शिक्षा-संस्कार की धानी
शिक्षक सुनाते नैतिकता की कहानी.

मेरी शाला के भविष्य निर्माणकर्ता
हर शिक्षक इनकी मंजिल को गढ़ता.

मेरी शाला मेरी आन-बान-शान है
मेरी शाला ही मेरी स्वाभिमान है.

मेरी शाला ने सिखाया स्वावलम्बन है
यही मेरे जीवनभर का आलम्बन है.

यही राष्ट्रीयता सद्भावना का ज्ञान
यहीं मानवता समानता का होता भान.

अंगना मा शिक्षा

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार



अब जाग भी जाओ माताओ,
शिक्षा की अलख जगानी है.
अंगना में शिक्षा की ज्ञान लिए,
भोला बचपन तुम्हें बुलाती है.

खेल खेल में ज्ञान की सीख मिले,
वह राह, हमें अपनानी है.
रोजमर्रा की चीजों से ही हमें,
ज्ञान ढूँढ़ ढूँढ़ निकालना है.
अंगना.....

अब लक्ष्य हमारा दूर नहीं,
हर घर आंगन, ज्ञान का मंदिर है.

मां की ममता, है प्रथम गुरु,
बने ध्रुव, प्रहलाद सा वीर है.
अंगना.....

अज्ञान अंधेरा को जीत सके,
हमे ऐसी ज्योत जलानी है.
माता गार्गी, के ही वंशज है,
गुरु ज्ञान की प्रथम अनुगामिनी है.
अंगना.....

लाल छत्तीसगढ़ के विद्वान बनें,
हमें युक्ति ऐसी लगानी है.
ममता की, आंचल छांव तले,
अब ज्ञान की गंगा बहानी है.

अंगना.....

तिरंगा

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार



माँ मुझे तिरंगा ला दो, मैं कश्मीर में फहराऊंगा.
सीमा के रखवालो को, मैं नमन कर आऊंगा.

या तिरंगे से लिपटकर, मैं शहीद हो जाऊंगा.
खाते भारत के गाते गुण पाक, प्यार से न समझाऊंगा.
जयचंद जो वतन के अन्दर, सबक उन्हें सिखाऊंगा.
माँ.....

आजाद सुभाष का सपना, सच करके दिखलाऊंगा,
मनोबल जो सेना का तोड़े, नामों निशान मिटाऊंगा.
माँ.....

सेना की वर्दी पहनकर, सीमा पार कर जाऊंगा.
सर्व समर्पण कर, माँ तेरा ऋण चुकाऊंगा.
माँ.....

हाथ में बन्दूक आंख में शोले, RDX कमर में लटकाऊंगा.
पाक को मिला के खाक में, मैं अखण्ड भारत बनाऊंगा.
माँ.....

पंचतंत्र की कथाएँ

मूर्ख बगुले की कथा



एक समय की बात है. किसी नगर से थोड़ी दूर पर एक बहुत विशाल बरगद का वृक्ष था. उस वृक्ष पर बहुत से बगुले निवास करते थे. उनके दिन अत्यंत आनंदपूर्वक व्यतीत हो रहे थे. किंतु एक बहुत दिन एक सर्प कहीं से उस बरगद तक आया. उसने वृक्ष पर बगुलों को देखा. वह बड़ा ही आनंदित हुआ. "इतना भोजन एक साथ, अहा, अब उसे कहीं और भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी." ऐसा विचार करके उसने उस बरगद के समीप ही दीमकों की एक बाँबी को अपना घर बना लिया. दिन में जब बगुले भोजन की व्यवस्था के लिए उड़कर चले जाते तो वृक्ष पर उनके छोटे-छोटे बच्चे रह जाते थे. इसी समय वह साँप वृक्ष पर चढ़ता और बगुले के बच्चों को खा लेता.

बगुलों को बहुत शीघ्र ही यह बात ज्ञात हो गई. वे बहुत चिंतित हो गए. साँप से अपने बच्चों की रक्षा कैसे करें यह प्रश्न उन्हें निरंतर कष्ट देने लगा.

उन्हीं बगुलों में से एक बगुला एक दिन एक तालाब के किनारे चिंतित मुद्रा में बैठा था. एक केकड़ा पानी से बाहर निकला और बगुले को चिंतामग्न देख पूछा, "क्या बात है बगुले मामा, आज तो आप बड़े व्यथित दिखाई पड़ रहे हैं?"

बगुले की आँखों में आँसू आ गए. उसने बड़े ही दुखी मन से उत्तर दिया, "क्या बताऊँ भांजे, हम जिस वृक्ष पर रहते हैं उसके नीचे एक साँप भी वास करने लगा है. वह नित्य ही हमारे बच्चों को खा जाता है. हम कैसे इस संकट से बाहर निकलें, यही चिंता निरंतर सताती रहती है."

केकड़ा मन-ही-मन प्रसन्न हुआ. उसने सोचा, यह बगुला हमारा जन्म-जन्म का बैरी है. इससे प्रतिकार लेने का यह अच्छा अवसर है. उसने दुःखी होने का अभिनय करते हुए कहा, "ओह, यह तो बहुत ही विषादपूर्ण है. मैं कैसे आपकी सहायता करूँ? कुछ सोचते हुए उसने फिर कहा, "एक

उपाय है मामा, वह जो पीपल का वृक्ष देख रहे हो न? वहीं नीचे एक बिल में एक नेवला रहता है. नेवला तो साँप का महाशत्रु है. तुम नेवले के बिल के समीप कुछ मछलियाँ डाल दो. और इसी प्रकार साँप के बिल तक मछलियाँ डाल दो. नेवला मछलियाँ खाता हुआ कभी-न-कभी साँप के बिल तक पहुँच ही जाएगा. जिस दिन भी वह साँप को देखेगा, उसे मार डालेगा."

दुखी बगुला केकड़े की चतुराई समझ न सका. और बिना कुछ आगा-पीछा सोचे उसने केकड़े के कहे अनुसार नेवले के बिल से साँप के बिल तक मछलियाँ फैला दीं. उसने अपने साथी बगुलों से भी सलाह नहीं ली.

जैसी संभावना थी वैसा ही हुआ. नेवला साँप के बिल तक पहुँच गया. जैसे ही साँप बिल से बाहर आया, नेवले ने अपने नुकीले दांतों से उसे मार डाला. परंतु उसने पेड़ पर बगुले के नन्हे बच्चों को भी देख लिया. अब वह धीरे-धीरे उन्हें भी खाने लगा. बगुलों की समस्या और भी बड़ी हो गई.

सच ही कहा है- "बिना उचित विचार के किया गया कार्य दुख का कारण बनता है."

"बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय."

नेक कर्म

रचनाकार- सीमा यादव



हे नर, असत् का दमन कर,
और तू सत् को नमन कर.

द्वेष, कपट, निंदा का त्याग कर,
दया, प्रेम और अहिंसा की पूजा कर.

अक्षय, निर्भय, अजय होकर,
निज जीवन सफल कर

सदा सर्वदा सत्य का मनन कर,
करुणा, निष्ठा और शान्ति का चिंतन कर.

अपने नर तन का हेतु जानकर,
कर लेना तू अपना जीवन उद्धार.

जग में रहकर नाम अमर कर,
ऐसा कुछ तू नेक कर्म कर.

मेरा पुस्तकालय

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मेरा पुस्तकालय सुंदर,
अध्ययन कक्ष के है अंदर
छोटी-बड़ी पुस्तकों से
सजी हुई आलमारी है
रंगबिरंगी खिली-खिली सी
जैसे कोई फुलवारी है
मोहक चित्र बने हैं उनमें
रोचक कलात्मक अक्षर.

लगें पुस्तकें शिक्षक जैसी
वे तो कभी नहीं डांटें
पढ़े प्रेम से हम सबको
सदैव विपुल ज्ञान बाँटें
प्रसन्नता से हाथ मिलाती
जिसको मैं छू लूँ हँसकर.

झाड़-पोंछकर स्वच्छ रखूँ मैं
कभी-कभी दिखलाऊँ धूप
लोग माँगकर ले जाते हैं
अपनी-अपनी रुचि अनुरूप
मित्रों से कह दिया-भेंट में
दें पुस्तक, जब हो अवसर.

गीत, कहानी, बाल पहेली
गणित, कला, हिंदी, विज्ञान
पढ़ते हैं सब मित्र चाव से
पाते हैं रुचिकर नव ज्ञान
अति प्रसन्न मैं हो जाता हूँ
सबसे शाबाशी पाकर.

पुस्तक के पन्ने मत फाड़ें
करें न अण्डरलाइन
काट-पीट न करें कहीं पर
नहीं तो ले लूँगा फाइन
समय से पुस्तक लौटा देंगे
करने होंगे हस्ताक्षर.
मेरा पुस्तकालय सुंदर.

चिड़िया

रचनाकार- ईनुदीन कोहरी नाचीज़ बीकानेरी



चूँ-चूँ चीं-चीं करती चिड़िया,
सबके मन को हरती चिड़िया.

फुदक-फुदक कर आती है वह,
नहीं पकड़ में आती चिड़िया.

सुन्दर-सुन्दर पंखों वाली,
तिनका चुन-चुन लाती चिड़िया.

जोड़ जोड़कर तिनका तिनका,
सुंदर नीड बनाती है चिड़िया.

फुर्र-फुर्र, उड़ इधर-उधर से,
दाना चुन-चुन खाती चिड़िया.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

अमित के गणित शिक्षक



रजनी अपनी मित्र लीला के घर गई थी. दोनों साथ-साथ बाजार जाने वाले थे. लीला ने रजनी को बताया कि आज ही अमित का रिजल्ट आ गया है. अमित स्कूल से आ जाए फिर चलते हैं. दोनों बैठकर अमित की प्रतीक्षा करने लगे. रजनी ने लीला से मिठाई तैयार रखने को कहा, क्योंकि अमित हमेशा अच्छे नंबरों से पास होता रहा है.

थोड़ी ही देर में अमित स्कूल से आ गया. उसका चेहरा उतरा हुआ था. उसने अपना रिपोर्ट कार्ड माँ को देते हुए कहा कि मैंने आपसे पहले ही गणित की ट्यूशन लगवाने को कहा था.

लीला ने रिपोर्ट कार्ड देखा तो अमित को गणित में केवल 72 अंक मिले थे. लीला बोली कि तुमने तो सारे सवाल ठीक किए थे. तुम्हें कम से कम पंचानवे नंबर मिलने चाहिए थे. रजनी ने लीला से लेकर रिपोर्ट कार्ड देखा. अन्य विषयों में अमित को क्रमशः 86, 80, 88, 82, 90 अंक मिले थे. सबसे कम अंक गणित में मिले थे.

अमित गुस्से व दुख से कहने लगा कि सर बार-बार गणित की ट्यूशन लगवाने कहते थे तथा न लगाने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी देते थे. पर माँ ने ट्यूशन नहीं लगवाई.

लीला ने कहा कि यह तो अंधेरगर्दी है. रजनी ने अमित से बातचीत कर सारी बातों की जानकारी ली.

उसे पता चला कि अमित के गणित शिक्षक मिस्टर पाठक हर बच्चे को ट्यूशन लेने के लिए कहते हैं. अमित के छमाही परीक्षा में छियानबे नंबर आए थे. पाठक सर ने फिर भी उसे ट्यूशन आने के लिए कहा था.

अमित इस स्थिति के लिए अपनी माँ को जिम्मेदार मान रहा था. रजनी ने उसे समझाया कि उसे इस बारे में अपने शिक्षक से बात करनी चाहिए. रजनी ने लीला से कहा कि उसे अगले दिन अमित के स्कूल जाकर पाठक सर से मिलना चाहिए.

यह सुनकर अमित डर गया और उन्हें स्कूल जाने के लिए मना करने लगा.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

रजनी और लीला अपने दोस्त अमित को समझाकर स्कूल जाने के लिए मना लेता है. वे सब स्कूल में पाठक सर से मिलकर अमित के गणित विषय के बारे में चर्चा किया. पाठक सर समझ गया कि बच्चों को अमित के गणित विषय में कम अंक आने के कारण मुझे दोषी समझ रहे हैं. वह कुछ ना कहते हुए अमित द्वारा बनाए हुए गणित विषय के उत्तर पुस्तिका को लाकर दिखाया. उत्तर पुस्तिका को देखकर रजनी और लीला की आंखें खुली रह गई. उत्तर पुस्तिका को देखने से पता चला कि वास्तव में अमित कुछ गणित के सवालों को हल ही नहीं कर पाया है और कुछ प्रश्नों को हल करते समय अधूरा ही छोड़ दिया गया है. जिसके कारण अमित के गणित विषय में कम अंक आया है. अमित के दोस्त समझ जाते हैं कि वह अपने स्कूल आने के लिए इसी कारण से डर रहा था.

पाठक सर उनके दोस्त रजनी और लीला को बताया कि अमित पिछले कुछ दिनों से पढ़ाई में कमजोर हो गया है जिसके कारण मैं उसे बार-बार ट्यूशन पढ़ने के लिए कहता था. मुझे जिस चीज का डर था वही हुआ. अमित सभी विषय का पढ़ाई तो ठीक से किया है लेकिन गणित विषय की पढ़ाई में अभ्यास न करने के कारण उसका अंक कम आया है. मैं उसे कहा था ट्यूशन के लिए पैसा नहीं है तो कोई बात नहीं, मैं सभी बच्चों को निशुल्क पढ़ाऊँगा. अमित को गणित विषय का अभ्यास जारी रखना था. अमित ने छमाही परीक्षा तक अपनी गणित विषय की पढ़ाई ठीक किया. जिसकी वजह से गणित में 96 अंक प्राप्त किया था. मैंने देखा गणित की क्लास में अमित और उसके कुछ साथी पढ़ाई में ध्यान नहीं देते थे जिसके कारण

इन सभी बच्चों को ट्यूशन करने की सलाह दिया था. लेकिन मेरी यह कही हुई बातों को बच्चे कुछ और समझ रहे हैं.

यह सब बातों को सुनकर अमित की आंखों में आँसू बहने लगा. शिक्षक अमित को समझा कर कहता है- बेटा अमित जो हो गया सो हो गया उसकी चिंता ना करो, आगामी कक्षा के लिए अभी से तैयारी शुरू करो. अगर पढ़ने में कुछ भी समस्या आए तो मुझसे संपर्क कर पढ़ाई जारी रखोगे तो निश्चित ही अच्छे अंको से उत्तीर्ण होगे. रजनी और लीला अपने मन में आए हुए विचार पर शर्मिंदा होकर पाठक सर से क्षमा याचना कर वे सब घर वापस चले जाते हैं. अमित को अपनी गलती का एहसास होता है अब वह अपनी पढ़ाई निरंतर जारी रखते हुए पूर्ण करता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

कौवा और मोर



जंगल में रहने वाला काला कौवा न अपने रूप रंग से संतुष्ट था, न ही अपनी बिरादरी से. वह मोर जैसा सुंदर बनना चाहता था.

जब वह दूसरे कौवे से मिलता, तो कौवों के रूप रंग की बुराई कर अपनी किस्मत को कोसता कि उसने कौवा बनकर इस धरती पर क्यों जन्म लिया. साथी कौवे उसे समझाते कि जैसा रूप रंग मिला है, उसके साथ संतुष्ट रहो. पर वह किसी की बात नहीं मानता और उनसे लड़ता.

एक दिन कौवे को एक स्थान पर बिखरे हुए ढेर सारे मोर पंख दिखाई पड़े.

आगे क्या हुआ होगा, इसके बारे में आप सोचना शुरू करें और इस कहानी को पूरा कर हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

टेलीविजन

रचनाकार- ईनुदीन कोहरी नाचीज़ बीकानेरी



मैं हूँ बच्चों टेलीविजन,
मेरा कोई नहीं है सीजन.

मैं चलता रहता हरदम,
भुला देता हूँ सारे ग़म.

खबरें सुनो या नाटक देखो,
अपनी पसंद के चैनल देखो.

कार्टून चाव से देखे बच्चे बूढ़े,
नेताओं के भाषण सच्चे झूठे.

गीत-गज़ल-फिल्में बहस,
खोज खबर देखें तहस नहस.

आओ देखें अजब गजब की बातें,
मैं चलता, दिन देखूँ ना रातें.

रात

रचनाकार- ईनुदीन कोहरी नाचीज़ बीकानेरी



रात हुई भई रात हुई,
दिन हो गया जैसे छुई मुई.

रात हुई अंधेरा साथ लाई,
आसमान में तारों की बारात आई.

टिमटिम- टिमटिम तारे चमके,
गिनते- गिनते आँखें झपके.

छोटे- छोटे झुरमुट से तारे,
कुछ पगडंडी जैसे लगते तारे.

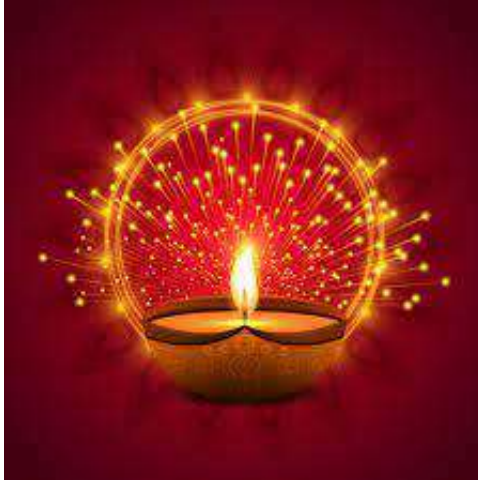
इनमें सबसे चमकीला तारा,
उत्तर दिशा में दिखता ध्रुवतारा.

अलग-अलग समय कुछ दिखते तारे,
सप्त ऋषिमण्डल कीर्ति कुछ तारे.

तारे देख दादी-नानी समय बताती,
रात जाते-जाते तारे साथ ले जाती.

दीपावली

रचनाकार- सीमा यादव



खुशियों का पर्व है दीपावली,
जो लाती है घर-घर खुशहाली.
घर, आँगन, चौरा-चबूतरा और गली,
साफ-सुथरा, सुन्दर-स्वच्छ कर मनाते हैं दीपावली.

अँधेरे में ही उजाला छिपा होता है,
दीपावली का पर्व यही संदेश देता है.
अपना जीवन सुन्दर बने, हर पल यही कोशिश करना,
खुश होकर औरों को भी सुन्दर बनाने की प्रेरणा देना.

दीपावली पर्व में छिपी हैं खुशियाँ अपार,
यही है मस्त, खुशहाल जीवन जीने का सार.
मन में उत्साह भरकर आओ हम सब कर्मयोगी बनें,
सारा जग सुख-शान्ति, प्रेम बंधुत्व की मिसाल बने.

मन में अमन दीप जला, शान्ति का मंदिर बना लेना,
चारों कोने में सत्य, अहिंसा, प्रेम की मूर्ति बना लेना.
अंधेले में भी होती हैं खुशियाँ अपार,
इस मंत्र को गाँठ बाँधकर कर लो अपना जीवन पार.

जंगल में बाढ़

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



एक जंगल था. जंगल में बहुत सारे जानवर, पक्षी और जलीय जंतु भी रहते थे. वैसे तो सबकुछ ठीक ही था परंतु सभी जानवर शेर से बहुत परेशान थे. शेर किसी भी जानवर को मारकर खा जाता था. जंगल में चारों तरफ भय का वातावरण था. जंगल के सभी जानवर शेर से बचकर रहते थे. जंगल का राजा शेर था. सियार मंत्री बना हुआ था. एक दिन जंगल में बाढ़ आ गई. अनेक जानवर, पेड़-पौधे और जलीय जंतु बाढ़ में बहने लगे. कुछ जानवर एवं जलीय जंतु पेड़ों से टकराकर मर गए तथा कुछ जानवर एवं जलीय जंतु बाढ़ के पानी में बह गए. पेड़ों की शाखाओं पर बने हुए पक्षियों के घोंसले टूट गए और बाढ़ में बह गए. सारे पक्षी आसमान में उड़ते हुए ऊँचे वृक्षों पर जाकर बैठ गए. पक्षियों को जाते हुए हाथी देख रहा था. कुछ चूहे और साँप अपने-अपने बिलों में थे और कुछ बाढ़ के पानी में तैर रहे थे. कुछ जानवर, जलीय जंतु, चूहा, साँप बाढ़ के पानी में बहते हुए जा रहे थे. बचे हुए जानवर सोचने लगे कि इस बाढ़ से कैसे बाहर निकलें? हाथी ने एक तरकीब सोची. 'जिस ऊँची भूमि पर पक्षी गए हुए हैं उसी वृक्ष की डाल को पकड़कर ऊँची भूमि पर क्यों ना मैं भी पहुँच जाऊँ?'

हाथी ने अपनी सूंड से एक पेड़ की डाल पकड़ ली और उस ऊँचे स्थान पर जा पहुँचा जहाँ पर पहले से ही पक्षी जा पहुँचे थे. वहाँ बाढ़ का पानी नहीं पहुँच रहा था. फिर हाथी ने एक पेड़ से लिपटी लताओं को तोड़ा और बाढ़ के पानी में फेंक दिया. अन्य जानवर भी उस लता को पकड़कर ऊपर चढ़ गए. शेर भी सोचने लगा मैं कैसे ऊपर चढ़ूँ? शेर ने कहा-'मैं अभी तुरंत छलांग लगाकर उस पार चला जाता हूँ.' शेर की बात को सियार सुन रहा था. जैसे ही शेर ने छलांग लगाने की कोशिश की वैसे ही सियार ने शेर की पूँछ पकड़ ली.

शेर और सियार दोनों जहाँ हाथी और अन्य जानवर थे वहीं पहुँच गए. सियार ने कहा-'आज तो हम सभी जानवर मरते-मरते बचे हैं. यदि बाढ़ के पानी में बह जाते तो हम लोग जिंदा नहीं

बच पाते।' शेर, हाथी और अन्य सभी जानवरों ने हां में हां मिलाई. फिर सियार ने कहा-'अब हम लोग नए स्थान पर आ गए हैं. जिस जंगल में हम लोग रहते थे वहां का राजा शेर था. अब यहाँ का राजा शेर ही बनेगा. सियार की बात सुनकर सभी जानवरों, ने असहमति जताई. कहा-'शेर तो हमको मारकर खा जाता है. हमारी जान तो हाथी ने बचाई है क्यों न अब हाथी को राजा बनाया जाए?' जानवरों की बात सुनकर सियार शेर के पास पहुँचा और कहा-'महाराज! जंगल के सभी जानवर बागी हो गए हैं वे कहते हैं कि जिसने हमारी जान बचाई है वही जंगल का राजा बनेगा.' सियार की बात सुनकर शेर ने कहा-'ऐसी बात है, कह दो उनसे जो जीतेगा वही जंगल का राजा बनेगा. जो हारेगा वह जंगल छोड़कर चला जाएगा.' सियार ने जाकर हाथी तथा दूसरे जानवरों को शेर द्वारा कही गई बात बताई.

सभी जानवर शेर की कही गई बात सुनकर घबरा गए. तब हाथी ने कहा-'मैं शेर से मुकाबला करूंगा. मैं भी देखता हूँ वह मुझे कैसे हराएगा? जाओ कह दो उनसे अभी आ जाए मुझसे लड़ने.' शेर भी हाथी की बात सुन रहा था. अचानक वह झाड़ियों से बाहर निकला और दहाड़ने लगा. शेर और हाथी आमने-सामने खड़े थे. शेर दहाड़ते हुए हाथी की ओर आया. शेर जैसे ही हाथी के नज़दीक पहुँचा हाथी ने अपना पैर उठाकर शेर को जोर से लात जमाई. शेर वहीं धराशायी हो गया और दोबारा नहीं उठ सका. सभी जानवरों ने तालियाँ बजाई. शेर और सियार उस जगह को छोड़कर चले गए. सभी जानवरों ने हाथी की जय-जयकार की और हाथी को जंगल का राजा बना दिए. अब सभी जानवर स्वतंत्रतापूर्वक रहने लगे.

प्रभु

रचनाकार- अजय कुमार यादव



किसने यह संसार बनाया,
प्रभु मन में आपका नाम आया.
हमको दिया उजालों का संसार,
हमको दिया जीवन का उपहार.

पेड़ पौधों और, जीव जंतु में,
हर पल हमें एहसास कराया.
आप हमें जीवन देने वाले,
प्रभु आप हैं सबके रखवाले.

प्रभु अपना आशीर्वाद हमें दीजिए,
हम सबका जीवन सफल कीजिए.

प्रार्थना बस इतनी है हमारी
सबके दुःखों को दूर कर दीजिए.

अंगना म शिक्षा

रचनाकार- पेश्वर राम यादव



लइकामन के घर-घर के
अंगना म शिक्षा होवत हे.
गुरु बनके दीदी बहिनी महतारी ह
नोनी बाबू ल पढ़ावत हे.
महतारी के कोरा में बैइठे लइका ह
अब नवा नवा गोठ ल गोठियावत हे.
खठीया म बैइठे दाई-ददा बबा मन ह
लइका ल संस्कार सिखावत हे.
हाथ के अंगरी म होथे जोड़ना घटाना
अउ इही हाथ ले गिनती तको बतावत हे.
काम बूता करत-करत महतारी ह
संगे म लइका ल पढ़े बर सिखावत हे.
चाउंर निमारत की दार पलियारत
जिनिस के वर्गीकरण करवावत हे.
रंधनी खोली म रांधत गढ़त
किसम किसम के साग भाजी ले
रंग के नांव ल बतावत हे.
खाये बेरा म कटोरी थाली गिलास ले
ददा ह गणित के आकृति ल बतावत हे.
खाली थारी म भात परोसत सुआरिन ह
नोनी बाबू ल बढ़ते करम ल सीखावत हे.
कोंरा लेवत थारी के भात ह सिरावत हे

त दीदी ह लइका ल घटते करम ल बतावत हे.
अब तो छत्तीसगढ़ के गाँव गाँव म
घर अंगना में होही पढ़ाई
अउ महतारी के काम बूता संग
लइका ह घलो पढ़त लिखते जाही.

प्रकृति

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



झरने की आवाज से, होते जग में शोर.
पक्षी गाते गीत है, होता हैं जब भोर.

सुंदर सी साड़ी पहन, बैठी गोरी आज.
मन उसका क्यों शांत है, करे नहीं कुछ काज.

खनकती चूड़ी हाथ में, दिखे होठ भी लाल.
नयनों में काजल लगे, लम्बे उनके बाल.

हरियाली चहुँ ओर है, बहते झरने धार.
कितना सुंदर दृश्य है, गोरी करती प्यार.

पैरों में घुँघरू सजे, नाचे मन में मोर.
छम छम की आवाज से, जियरा लेत हिलोर.

आई दीपावली

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



जगमग-जगमग दीपों वाली
जगमगाती आई दीपावली.

खील-बतासे और संग लाई
भर-भर थाली में है मिठाई.

घर-आँगन में खुशियाँ आई,
प्रसन्नता और रौनक छाई.

दमक उठी देहरी अंगनाई
सतरंगी रंगोली है सजाई.

चौक-चौराहे रोशनी छाई,
चहल-पहल आज है भाई.

रंग-बिरंगी जली फुलझड़ियाँ
सब बच्चों में उमंग है आई.

बाल-सखा सब खाते मिठाई
एक दूजे को दे-देकर बधाई.

पंखुड़ी और पारुल

रचनाकार- दलजीत कौर



पंखुड़ी ने सुबह से रो-रो कर सारा घर सिर पर उठा रखा था. सुबह अचानक उसकी मम्मी की तबियत खराब होने पर उन्हें अस्पताल ले जाया गया था. तब से ही पंखुड़ी रो रही थी. उसके नाना-नानी उसके पास आ गए थे. परंतु वह तो एक ही रट लगाए बैठी थी-“मुझे मम्मी के पास जाना है, मुझे मम्मी के पास जाना है.” परंतु ऐसा हो नहीं सकता था. क्योंकि अस्पताल में छोटे बच्चों के जाने की मनाही है. अस्पताल में अनेक बीमारियों के कीटाणु होते हैं. जो छोटे बच्चों पर जल्दी आक्रमण कर देते हैं. इसलिए बच्चों को अस्पताल में जाना ही नहीं चाहिए.

पंखुड़ी के घर से कुछ ही दूर उसकी सहेली पारुल रहती थी. जब पारुल की दादी को पता चला कि पंखुड़ी की मम्मी अस्पताल में है तो वे पारुल को लेकर पंखुड़ी के घर आईं. पंखुड़ी अभी-भी रो रही थी. पारुल ने पंखुड़ी को समझाया-“रोने की क्या बात है? तुम्हारी मम्मी बीमार है. डॉक्टर उनका उपचार करेंगे. वे जल्दी ठीक होकर घर आ जाएँगी. रो कर तुम सब को परेशान कर रही हो.”

पारुल, पंखुड़ी का हाथ पकड़कर उसे घर में बने छोटे मंदिर में ले गई और उसे प्रार्थना करने को कहा -“भगवान, मेरी मम्मी को जल्दी ठीक कर दो.”

अब पंखुड़ी का रोना बंद हो गया था. पंखुड़ी की नानी ने पारुल की दादी से पूछा -“पारुल भी पंखुड़ी की उम्र की है. वह इतनी छोटी हो कर इतनी समझदार कैसे है?”

तब दादी ने बताया कि उन्होंने पारुल को यह सब बातें समझाई हैं. एक बार दादी के बीमार होने पर पारुल भी बहुत रोई थी. फिर दादी ने उसे समझाया कि कोई भी बीमार हो सकता है. हमें उस समय रोना नहीं चाहिए. बल्कि दूसरों की मदद करनी चाहिए.

पंखुड़ी और पारुल ने साथ-साथ खाना खाया. पंखुड़ी अब खुश थी. रात को दस बजे उसके पापा, मम्मी को ले कर घर आ गए. उसकी मम्मी की तबियत अब ठीक थी. पंखुड़ी ने पारुल को बाय किया और उससे वादा किया कि अब वह ऐसे कभी नहीं रोएगी.

फल

रचनाकार- अशोक 'आनन'



अनार, पपीता, चीकू, जाम;
सेब, नारंगी, केला, आम.

संतरा, अंगूर करते मेल,
शोभित बाग, बगीचा जंगल खेल.

गांव-गांव और शहर, हाट में,
मिल जाते ये कभी बांट में.

खनिज-विटामिन-लोहा इनमें,
शक्ति जो देते पल में.

ज्यूस नियम से जो पीते,
स्वस्थ सदा रहकर जीते.

निर्यात किए जब जाते फल,
मुद्राएं वहां से आतीं चल.

जन्म दिन या हो फिर शादी,
शोभा झट से फलों से आती.

जंगल

रचनाकार- अशोक 'आनन'



दशा देख, हैरान हैं जंगल.
हरे-भरे, वीरान हैं जंगल.

आरी यों ही चली अगर तो,
समझिए मेहमान हैं जंगल.

व्यक्ति बैरी आज बना हुआ है,
यही सोच, हैरान हैं जंगल.

जुल्म जो सहे इन्होंने,
उसके ये प्रमाण हैं जंगल.

रहे साथ पर लड़े कभी न,
लगे अच्छे इंसान हैं जंगल.

धर्म निभाएं कटकर भी ये,
हमारे भारत की शान है जंगल.

मत रोको गंगा की धारा

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय



मत रोको गंगा की धारा, अविरल बहने दो.
उर की सारी पीड़ा खुशियां, कल-कल कहने दो.

केवल नदी नहीं है गंगा, अपनी थाती है.
युग-युग से पुरखों की पढ़ती आई पाती है.
घाटों में इतिहास सुरक्षित, हलचल रहने दो.

संस्कृति की संवाहक गंगा, जीवन अविरल बहने दो.
सृजन प्रलय के तटबंध बीच, बहती आग भरे.
सुरसरि हैं शुभ श्वास हमारी, कलरव करने दो.

पोषण मुक्ति प्रदाता गंगा, जन विश्वास लिए.
उर भरती हैं उत्साह प्रबल, नव आकाश लिए.
वक्षस्थल पर वार मशीनी, अब मत सहने दो.
मत रोको गंगा की धारा, अविरल बहने दो.

महिला

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतीय कला और संस्कृति विश्व प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति महिलाओं को देवी के प्रतीक के रूप में सम्मान देती रही है। हम सुनते आ रहे हैं और देखते भी हैं कि, भारत में महिलाओं का जितना सम्मान है, उतना शायद ही विश्व में किसी अन्य देश में हो क्योंकि भारत हजारों साल से आध्यात्मिक, सेवाभावी, परोपकारी, दयावान और पारदर्शी विचारों वाला देश रहा है। भारत अनेक संत महात्माओं की जन्मभूमि भी है। यही ऐतिहासिक धरोहर और अनेकों मान्यताओं को देखने के लिए विश्वभर के सैलानी भारत आते हैं और प्रभावित होकर जाते हैं। क्योंकि मानवता की सच्ची मिसाल सबसे अधिक भारत में ही देखने मिलती है, जिसमें धर्मनिरपेक्षता चार चाँद लगा देती है।

भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति गहरे सम्मान की भावना एक श्लोक में वर्णित है, जिसमें कहा गया है, जहाँ एक महिला का सम्मान किया जाता है, वह स्थान दिव्य गुणों, अच्छे कर्मों, शांति और सद्भाव के साथ भगवान का निवास स्थल बन जाता है। हालाँकि, अगर ऐसा नहीं किया जाता है, तो सभी कार्यकलाप निष्फल हो जाते हैं। अगर हम भारत में महिलाओं के लिए सुरक्षित व अनुकूल माहौल तैयार करने की बात करें तो केंद्र व राज्य सरकारें इसके लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है और हम देखते हैं कि ढेर सारी सुविधाओं, प्राथमिकताओं के साथ महिलाओं का सम्मान होता है लेकिन मीडिया के माध्यम से हम अभी भी देखते सुनते आ रहे हैं कि महिलाओं के साथ भेदभाव, क्रूरता और हैवानियत भी होती रहती है जिसके लिए हमें वैचारिक परिवर्तन की ज़रूरत है। आज भी अनेक क्षेत्रों में महिलाओं पर पुराने ज़माने की कुप्रथाएँ, बंधन, रीति-रिवाज, मान्यताएँ, धार्मिक-प्रतिबंध इत्यादि के बंधन में रखा जाता है। हालाँकि इसके खिलाफ अनेक अधिनियम भी बने हैं परंतु अब ज़रूरत है वैचारिक परिवर्तन और जन जागरण अभियान चलाने की। अगर हम ऐसे क्षेत्रों की बात करें जहाँ अभी भी महिलाएँ सामाजिक, धार्मिक, बंधनों में हैं।

शुरुआत हमें खुद से करनी होगी कि महिलाओं के प्रति भाव, भाग्य, देवी का नज़रिया तैयार करें. महिलाओं के लिए सुरक्षित व अनुकूल माहौल तैयार करने की जवाबदारी की शुरुआत, हर नागरिक खुद करें और भारत की प्रगति तेज़ करने के लिए महिलाओं को आगे करके उन्हें प्रोत्साहित करना होगा. अगर हम युवाओं की बात करें तो उनमें प्रोत्साहन और अद्भुत ऊर्जा उत्साह की अनूठी शक्ति का संचार कर भारत की प्रगति को और तेज़ किया जा सकता है, जिसके आधार पर हम विजन-2047 में वैश्विक रूप से सर्वशक्तिमान देश के रूप में उभरेंगे. वर्तमान भारत आजादी के अमृत महोत्सव का समारोह मना रहा है, यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में हमारे देश में जारी प्रयासों का भी उत्सव है. महिलाओं ने आज राष्ट्र निर्माण और इसके सशक्तीकरण के लिए अग्रणी प्रतिनिधियों के तौर पर अपना उचित और समान स्थान ग्रहण करना प्रारंभ कर दिया है. अगर हम दिनांक 18 सितंबर 2021 को भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा संसद भवन में एक कार्यक्रम में संबोधन की बात करें तो उन्होंने भी जोर देकर कहा कि, भारतीय संस्कृति हमेशा ही महिलाओं को देवी के प्रतीक के रूप में सम्मान देती रही है. समानता के लिए भरतियार की सोच का उल्लेख करते हुए, उन्होंने ऐसी सभी बाधाओं और भेदभाव को खत्म करने की जरूरत पर जोर दिया, जो जाति, धर्म, भाषा और लैंगिक आधार पर समाज को बाँटते हैं. उन्होंने युवाओं से राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य में खुद को समर्पित करने और एक विकसित भारत- गरीबी, निरक्षरता, भूख और भेदभाव से मुक्त भारत के निर्माण के उद्देश्य से आगे आने के लिए कहा. उन्होंने कहा, मुझे भरोसा है कि हमारा युवा अपनी अद्भुत ऊर्जा और उत्साह के साथ भारत की प्रगति और तेज़ विकास को सक्षम बना सकता है. उन्होंने आज महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभावों को खत्म करने का आह्वान किया और सभी से उनके लिए सुरक्षित व अनुकूल माहौल तैयार करने का अनुरोध किया, जिससे वे आगे बढ़ सकें और अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें. अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन और विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि महिलाओं के लिए सुरक्षित व अनुकूल माहौल तैयार करना अत्यंत जरूरी है वैसे भारतीय संस्कृति हमेशा ही महिलाओं को देवी के प्रतीक के रूप में सम्मान देती है जो भारत के लिए गौरव की बात है.

सूरज

रचनाकार- अशोक 'आनन'



रोज़ सवेरे आता सूरज.
धूप सुनहरी लाता सूरज.

सोने जैसी लगती धरती,
किरणें जब फैलाता सूरज.

पक्षी स्वागत गीत सुनाते,
उन पर प्यार लुटाता सूरज.

नीर, नयन से बहता जिनके,
आकर उन्हें हंसाता सूरज.

रवि, सूर्य, दिनमान, भानु
आफ़ताब कहलाता सूरज.

अर्घ्य चढ़ाकर, शीश झुकाते
देवों सा रोज़ पुजाता सूरज.

तितली

रचनाकार- अशोक 'आनन'



डाल-डाल पर घूमे तितली.
फूल-फूल को चूमे तितली.

नीली, पीली, काली, तितली.
मन को हरने वाली तितली.

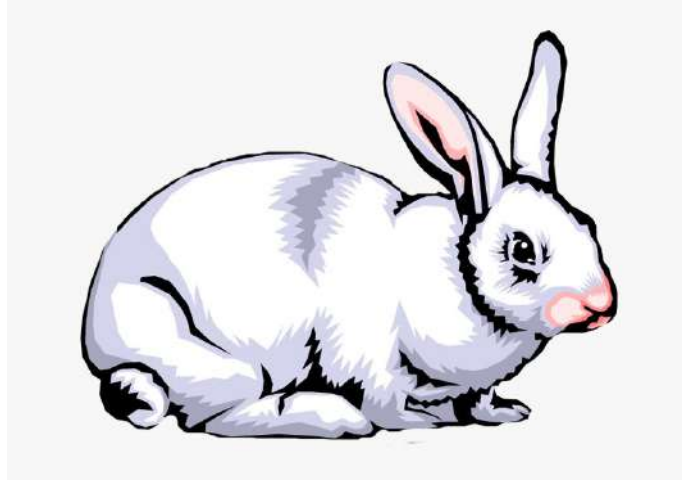
हाथ कभी न आए तितली.
लाख पकड़ना चाहें तितली.

रंग-बिरंगी सुहानी तितली.
बागों की महारानी तितली.

फूलों के मन भाए तितली.
आंख मीचते उड़ जाए तितली.

अहंकारी खरगोश

रचनाकार- आरती गुप्ता



एक समय की बात है, एक बहुत बड़ा जंगल था. उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे. उन जानवरों के बीच एक छोटा सा नन्हा सा खरगोश रहता था, जो बहुत ही सुंदर फुर्तीला और नटखट था. जंगल के सारे जानवर उससे हमेशा यही कहते कि खरगोश तुम दो बहुत सुंदर हो तुमको जो भी देखता है वह मंत्रमुग्ध हो जाता है, तुम्हारी नटखट अदाओं पर लटटु हो जाता है, अगर कोई शिकारी जंगल में शिकार के लिए आएगा तो तुम्हें देखकर वह शिकार करना ही भूल जाएगा, यह बातें सुन सुनकर खरगोश को अपनी सुंदरता का घमंड होने लगा, अहंकार होने लगा. एक दिन उसके सच्चे दोस्त हिरण ने उसे कहा मित्र खरगोश तुम तो बहुत ही फुर्तीले हो, तुम्हें इन सब की बातों पर नहीं आना चाहिए और अपनी सुरक्षा के लिए कुछ पैंतरे भी सीख लेनी चाहिए, ताकि शिकारी तुम्हें ना पकड़ पाए. हिरण की ऐसी बातों को सुनकर खरगोश को बहुत गुस्सा आया. उसने कहा अरे मुझे और पैंतरे सीखने की क्या जरूरत, मैं तो हूं ही इतना सुंदर कि हर कोई मुझे देख कर मंत्रमुग्ध हो जाता है, लगता है, तुम्हें मेरी सुंदरता से ईर्ष्या हो रही है. हिरण कहने लगा- नहीं मित्र, ऐसी बात नहीं है, मैं तो सिर्फ तुम्हारी सुरक्षा की बात कर रहा था. खरगोश ने कहा रहने दो, रहने दो, पहले तुम खुद की सुरक्षा कर लो फिर मुझसे कहना, ऐसा कहकर खरगोश वहां से चला गया.

कुछ दिन बीत गए खरगोश मस्त मौला होकर जंगल में इधर-उधर घूम रहा था. उसे दिन-रात की सुध-बुध न थी. एक दिन एक शिकारी उस जंगल में आया और जाल फैलाकर पेड़ पर चढ़ गया, सोचा कोई ना कोई जानवर तो फंस जाएगा. अपने मद में मस्त खरगोश को तो होश ही ना था कि वह अपने आसपास थोड़ा नजर भी रख ले, वह निर्भय होकर इधर-उधर घूमते हुए शिकारी के जाल में जा फंसा. उसने अपने आप को बहुत छुड़ाने की कोशिश की, पर खुद को जाल से आजाद नहीं कर पाया, तब उसे अपने मित्र हिरण की बात याद आई और वह पछताने लगा. शिकारी पेड़ से उतर कर नीचे आया और सुंदर से खरगोश को देखकर खुशी से झुमने

लगा कहने लगा इतना सुंदर खरगोश मैंने आज तक नहीं देखा, इसके बदले तो मुझे बहुत सारे रुपए मिलेंगे. शिकारी की बात सुनकर खरगोश अपना सिर पकड़ कर बैठ गया और कहने लगा मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई जो मैंने अहंकार किया, घमंड किया और अपने सच्चे मित्र की बात नहीं मानी.

सीख- हमें कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए.

खूब पढ़े हिंदी

रचनाकार- कु.अनुष्का, पाँचवीं, शा.प्राथमिक शाला नरेशपुर, सूरजपुर



हिंदी है हमारी मातृभाषा
हिंदी में है वर्णों का ज्ञान
सबको है सिखाती हिंदी
सबका नाम बताती हिंदी
हिंदी में है ज्ञान छूपा
हम बच्चों की प्यारी हिंदी
हम सबको है भाती हिंदी
जब जाएं हम स्कूल
खेले कूदे पढ़े हिंदी भरपूर
अक्षरों को पहले पहचानेंगे
तब शब्दों को जानेंगे
हर सपना तब होगा पूर्ण,
हिंदी पढ़ लेंगे भरपूर.

बच्चे मन के सच्चे

रचनाकार- अशोक कुमार पटेल



ये बच्चें मन के सच्चे
ये लगते हैं बड़े अच्छे.
ये उमर के रहते कच्चे
भोले-भाले हैं ये बच्चे.

ये होते हैं बड़े प्यारे
ये मा के राज दुलारे.
ये फूल से होते न्यारे
सबकी आंख के तारे.

इन्हें लोरी है बड़ा भाता
जन्मों से है इसी से नाता.
आनन्द इसी में है आता
सब कुछ है उसकी माता.

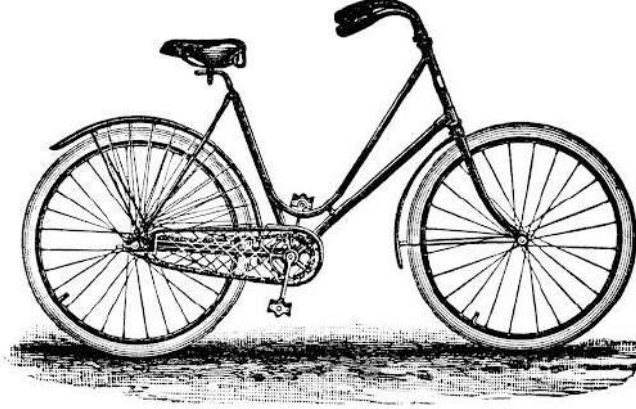
ये घर आँगन के रौनक
ये फूलों से मन मोहक.
इनकी आँखे सम्मोहक
ये होते हैं बड़े रोचक.

इनकी मीठी है किलकारी
इनकी बाते बड़ी निराली.
इनकी चाल है मतवाली
इनकी हँसी बड़ी निराली.

इन्हें खिलौने बड़े हैं भाते
ये खेलो में समय बिताते.
ये खिलौनो से बतियाते
इन्हें अपना दोस्त बनाते.

कबाड़ में जुगाड़

रचनाकार- अशोक कुमार पटेल



भरी दोपहरी का समय था.सिर पर सूरज की गर्मी सीधी पड़ रही थी.ऐसे ही समय पर हांफते और पसीने से तर-बतर एक कचड़ा उठाने वाला आदमी कबाड़ी की दुकान में आकर खड़ा हो जाता है और अपने आठ साल के बेटे की ओर इशारा करते हुए कहता है. "बेटा भोलू जरा मेरी सहायता करना"

भोलू जी पिता जी कहता हुआ उसके पीठ में लदे बोरी के गट्ठे को सहारा देते हुए नीचे उतारता है. फिर भोलू के पिताजी कहते हैं "जरा अपना हाथ देना" "जी पिता जी" कहता हुआ भोलू आगे बढ़ता है और उस बोरी के गट्ठे को सहारा देते हुए उसे कबाड़ी की दुकान में लगे तराजु के पास ले जाने में अपना सहयोग प्रदान करता है.

ठीक इसी समय उसकी नज़र पास के कबाड़ में पड़ी एक टूटी-फूटी जंग लगी सायकल पर पड़ती हैं. उस सायकल को देखकर वह उसके पास पहुंच गया और उसे सहलाने लगा. सहलाते हुए उसके बाल मन पर सुख और आनन्द की उजली किरण की भविष्य नज़र आने लगी,और वह भोलू गहरी सोंच के सागर में डूब गया.

तभी उसके पिता जी ने आवाज लगायी- "भोलू-भोलू" "कहां चला गए?" "अरे, वहाँ क्या देख रहे हो?" तभी भोलू हड़बड़ा कर कहता है- "जी पिता जी,"

मैं इस कबाड़ में पड़ी सायकल को देख रहा था. भोलू धीमी आवाज में जवाब देता है. उसके पिता जी उसकी जिज्ञासा और गहरी सोंच को अनदेखा करते हुए कहता है- "अरे,बेटा उस कबाड़ में पड़ी टूटी-फूटी जंग लगी सायकल को क्या देख रहे हो,जो किसी काम की नहीं रह गई है,"

तभी मौका पाकर उसका बेटा भोलू कहता है- पिताजी, पिताजी, "वह सायकल मुझे दिला दो न," उसके पिता जी कहते हैं- ये क्या बोल रहे हो बेटा? हम लोग कचड़ा बीनने वाले हैं, बेटा, और उस कचड़े से जो उपयोगी होता है उसे कबाड़ी दुकान में बेच देते हैं, हम लोग बेचने वाले हैं, न कि खरीदने वाले.

भोलू उसके पिता जी की बातों को गम्भीरता पूर्वक सुन रहा था उसके बाल मन पर कुछ और ही चल रहा था. तभी वह अपने पिता जी को कबाड़ी दुकान के बगल में लाकर यह बात कहता है- "पिता जी आप बोरी को पीठ में लादकर कितनी तकलीफें झेलते हैं मुझे देखकर बड़ी पीड़ा होती है क्यों न हम इस सायकल को खरीदकर उसे सुधारकर इसका उपयोग करें, इससे आपकी तकलीफें भी दूर होगी और आसानी से हम इसमें बोरी को लादकर कबाड़ी दुकान भी ला सकेंगे."

बेटा भोलू की बात सुनकर मानो उसके पिता जी की आंखें खुल गईं और हामी भरते हुए उसने अपने बेटे से कहा- "ठीक है बेटा, "हम यह सायकल खरीद लेते हैं"

तभी भोलू के पिता जी गहरी सांस लेते हुए अपने बेटे से कहता है कि- "बेटा पर इसे खरीदने के लिए हमारे पास तो इतने पैसे भी नहीं हैं, उस कबाड़ी वाले को पैसा कंहा से देंगे?" तभी उसका बेटा कहता है- "पिता जी हम लोग उपयोगी कचड़ा यहां बेचने तो आते ही हैं जब सायकल रहेगी तो हम और ज्यादा उपयोगी कचड़ा लाएंगे और उससे जो कमाई होगी उससे उसका भरपाई करते जाएंगे."

बेटा भोलू की बात पिता जी को उचित जान पड़ी और उसकी बात को मानकर उस कबाड़ी वाले को वस्तु स्थिति से अवगत कराकर वह सायकल खरीद ली, और वह कबाड़ी वाला भी मान गया.

भोलू खुश हो गया दोनों ने मिलकर सायकल को सुधार डाली, उससे सुंदर काम करने लगे और कुछ ही दिनों में भोलू के पिता जी ने सायकल की उधारी चुकता कर डाली.

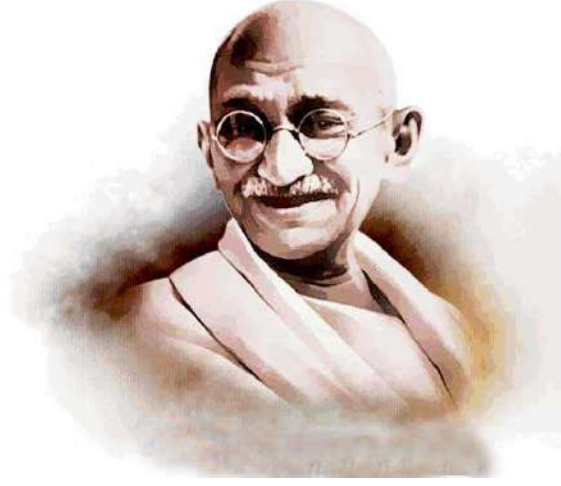
अचानक एक दिन भोलू की नजर छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल जाते देखा, उसने अपने पिता जी से कहा- "पिता जी मैं भी स्कूल जाना चाहता हूं. सुबह कचड़ा बीनने जाया करेंगे और वापस आने के बाद आप मुझे दस बजे उसी सायकल से स्कूल छोड़ दिया करेंगे."

भोलू की इस सुंदर बातों को सुनकर पिता जी प्रसन्न हो जाता है और अपने बेटे को कहता है- ठीक है बेटा, ठीक है, फिर भोलू को उसके पिता जी स्कूल में भर्ती कर देता है, वह स्कूल जाने लगता है और अपने बेटे को स्कूल जाता देख बहुत प्रसन्न हो जाता है.

इधर भोलू के पिता जी कुछ एक दिन कचड़ा बीनने के पश्चात उस काम को छोड़कर उसी सायकल से अपना खुद का व्यवसाय सब्जी बेचने का काम करने लगा. इस व्यवसाय से उसकी माली हालत सुधरने लगी.उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधर गई,फिर अपने बेटे की सकारात्मक सोंच को याद करते हुए और शाबाशी देते हुए उसे अच्छी शिक्षा और संस्कार दिलाने की कमर कस ली, और फिर उसके पिता जी ने भोलू को अपने हृदय से लगा लिया.

बापू

रचनाकार- सीमा यादव



सत्य, अहिंसा पर चलकर बापू ने
सदा सद्धर्म का पथ सुदृढ़ किया.

स्वावलम्बी का पाठ पढ़ाकर
सर्वदा उद्यम का महत्व सुदृढ़ किया.

वसन धोती का वरण करके
जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद दूर किया.

लाठी अपने हाथ में पकड़कर सदा ही
जनमानस को चैतन्य रहने का संदेश दिया.

अमीर-गरीबी की खाई को दूर करके
समाज में समानता का उपदेश दिया.

बुनियादी शिक्षा की अलख जगाकर
जन-जन तक शिक्षा के महत्व को सृढ़ किया.

आजादी का बीड़ा उठाकर उन्होंने
सर्वजन को एकता के सूत्र में बाँधने का अथक यत्न किया.

सादा जीवन, उच्च विचार का पक्ष लेकर
सादगी का सुन्दर संदेश दिया.

सत्य, अहिंसा के बल पर चलकर
सबको विश्व विजय का मूलमंत्र दिया.

गुलामी की त्रासदी से
सम्पूर्ण भारतवर्ष को स्वतंत्र कराया.

ऐसे संत पुरुष को बारम्बार वंदन और नमन
जिन्होंने सारे वर्ग में आत्मसम्मान का भाव जगाया.

A Beacon of Hope

Poet- Kaushik Muni Tripathi



A beacon of hope
from the darkness of pandemic.
A ray that seems to itinerant
to destroy the darkness which is spread over the world.

Pandemic engulfed all human beings,
darkness is dense everywhere.
All are waiting for the sun to rise
to kayo this wickedness.

A ray of hope is within us.
We must bring this silver line out,
we must fight against this pandemic.

Our rosy outlook empowers,
It fills us with great energy and enthusiasm.
We must build such domain,
where gloom is powerless to enter.

The mother nature is showing us
the path of being human.
Let's fight together
by being sensible and sensitive
and being dependable in unity.....
we win....

पितर देव को प्रणाम

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी



प्यार दे हमें विदा हुए जग से,
उनका स्वागत करें आज मन से.
हुए पुरखा जो थे कभी साथ अपने,
नमन करें हम आज मन के द्वार से.

पितर चरण में नमन कर हम,
ध्यान जो धरते हैं दिन रात.
कृपा दृष्टि सदा हम पर करें,
सिर धर दें आशीष का हाथ.

मेरा ये कुटुम्ब तो है आपके,
और आपका ही है परिवार.
आपके शुभ आशिर्वाद से ही,
फले - फूले हैं जग संसार.

हुई भूल -चूक को क्षमा करें,
कृपा करें हम पर भरपूर.
सुख सम्पत्ति से घर भर दें,
कष्ट हर करें हमसे कोसो दूर.

आप बसते हमारे दिल में,
हम हैं आपकी संतान.
आपके नाम से जुड़ी हुई,
हमारी तो हर एक पहचान.

हिंदी

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



हम हिन्द देश के वासी,
लोकेश्वरी कश्यप
हम हिन्द देश के वासी,
पहचान हमारी हिंदी है.

हिंदी के मस्तक पर शोभित,
देखो कैसी सजती बिंदी है.

स्वदेशी सब मिलकर अपनाओं,
क्योंकि विदेशो तक स्वदेशी पहुँचाना है.

आगत भाषाओं को अपना लेने वाली
ऐसी सरल, सहज हमारी हिंदी है.

जन- जन तक राष्ट्र चेतना भरने वाली,
हमारी प्यारी राष्ट्र भाषा हिंदी है.

सम्मान करते हैं हम सब इसका,
हमारी आन -बान -शान हिंदी है.

सब भाषाओं के शब्द है इसमें,
भाषाओं का पर्याय है हिंदी.

देश हमारा प्यारा हिंदुस्तान,
भाषाओं की सरताज हैं हिंदी.

लिपि है इसकी सुंदर देवनागरी,
हर ध्वनि में अलग पहचान है हिंदी.

कंप्यूटर को जो सबसे अच्छी लगती,
वो वैज्ञानिक भाषा हैं हिंदी.

हम सब की पहचान है हिंदी,
हम सब का मान है हिंदी.

बनोगे लाजवाब

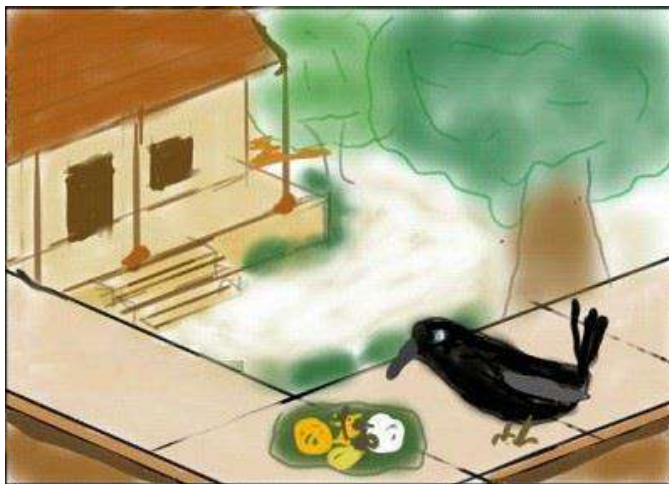
रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब.
खेलोगे कूदोगे बनोगे लाजवाब.
शुरुआत करने से हिचको नहीं
अभ्यास करने से बिचको नहीं
यदि ठान लें कुछ असंभव नहीं
सफलता निश्चित पाओगे जनाब.
सभी खेल रुचिकर हैं, मन से चुनो जनाब
औरों की छोड़ो, हृदय की सुनो
सर्वोत्तम प्रयास, जी भर करो आप
मलिन न होने पाए, सपनों की ताब.
रहे स्वस्थ तन, खेलना है जरूरी
बिना खेल रहती है शिक्षा अधूरी
अच्छा पढ़ने वाला भी खिलाड़ी बने
खिलाड़ी अपने क्षेत्र में रखे रोब और दाब.
प्रदेश, राष्ट्रीय और ओलंपिक खेल में
देश का मान सम्मान से कराएँगे मेल
चमकाने के अवसर मिलें और खिताबी जीत
पढ़ लिखकर बने नवाब और
खेलकूद कर बने लाजवाब.

पितृपक्ष

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



भारतीय काल गणना में वर्ष सौरमान से लिया जाता है. अतः संक्रांतियों के अनुसार काल विभाजन के क्रम में एक सौर में 360 अंश एवं 360 ही सौर दिन होते हैं जिसमें षडशीतिमुख नाम की चार संक्रांतियाँ होती हैं जो तुला राशि की संक्रांति के बाद से 86-86 अंश (सौर दिन) करके कन्या के 14 अंश तक आ जाती हैं.

इस क्रम में 16 दिन सौर वर्ष में बच जाता है, जिसे यज्ञ समान फल देने वाला कहकर पितरों को दे दिया गया है.

विश्व में भारतीय संस्कृति का कोई सानी नहीं है. हमारे प्रत्येक कर्तव्य, पर्व और परंपरा में यह बात स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है. पितृ पक्ष या श्राद्ध पर्व भी कुछ ऐसा ही है. जिन पूर्वजों के गुण, कौशल और आनुवांशिकी हमें विरासत में मिले और जिनके कारण हमारा अस्तित्व है, उनके प्रति हम श्राद्ध पर श्रद्धा, कृतज्ञता, आस्था और सम्मान प्रकट करते हैं. हमारे शास्त्र में तीन ऋण बताए गए हैं- देव, ऋषि और पितृ ऋण. पितृ ऋण से उऋण होने के लिए श्राद्ध कर्म किया जाता है. जिसके फलस्वरूप मनुष्य आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है. उन संस्मरणों के पुनः स्मरण और उनके द्वारा प्रदत्त संस्कार और विरासत को नई पीढ़ी में रोपने, उनके अनुपालन और अनुशीलन का पर्व है-श्राद्ध कर्म. सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो इन 16 दिनों में हम नवागत पीढ़ी को पूर्वजों से परिचित कराते हैं.

प्राचीन काल में श्रुति के आधार पर ही संपूर्ण समाज चलता था. नई पीढ़ी अपने पूर्वजों के इतिहास से परिचित हो, उन पर गौरवबोध करे, उन्हें कालबाह्य न समझे, इसी परंपरा का निर्वहन है श्राद्ध पर्व. कौवों, कुत्तों और गायों को अन्न का अंश निकालकर देना मनुष्य को

पशु-पक्षियों और प्रकृति के साथ सहभागिता को प्रकट करता है। जो समाज वृक्षों, नदियों, पर्वतों और स्थलों को पूजनीय और वंदनीय मान रहा हो, उसके लिए पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण तो होना ही है।

नवरात्र के अंतर्गत अनंत रूपों और अनंत गुणों में दिव्य माँ की पूजा की जाती है, देवी की पूजा करने के पहले हमें पितरों के आशीर्वाद की आवश्यकता होती है। उन्हें तर्पण अर्पित किया जाता है। यह परंपरा अपने देश में हजारों वर्षों से चली आ रही है। दुनियाभर की परंपराओं में दिवंगत लोगों को स्मरण करने की प्रथाएँ हैं। सिंगापुर में यह एक उत्सव की भाँति है- एक सार्वजनिक अवकाश। दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों में भी दिवंगत लोगों को स्मरण करने के लिए समारोह होते हैं। ईसाई परंपरा में 'आल सोल्स डे' (सर्व आत्मा दिवस) इसी उद्देश्य से मनाते हैं।

पितरों की आराधना का यह पुण्य काल प्रति वर्ष आश्विन कृष्ण पक्ष में आता है। इसके पहले ही दिन पितरों का अपने वंशजों के बीच धरती पर आह्वान किया जाता है, श्रद्धापूर्वक उनका श्राद्ध- तर्पण कर स्वागत और स्तुति गान किया जाता है। इससे प्रसन्न हो, वे वंशवृद्धि, यश- कीर्ति, सुख- समृद्धि समेत मंगलमय जीवन का आशीष दे जाते हैं। यह सब हमारी संस्कृति और परंपराओं में से एक श्राद्ध पर्व है। अब सोचें भला किसी भी घर का ऐसा कौन पूर्वज होगा जिसे घर में कोई शुभ कर्म होना या धन- संपदा के रूप में खुशहाली आना या नए सामान के रूप में कुछ खरीदारी करना, पसंद न हो, चाहे वे बुजुर्ग हमारे बीच में भौतिक रूप से विद्यमान हों या सूक्ष्म रूप में।

पितृ पक्ष के बारे में कुछ ऐसी धारणा बना दी गई है कि इन दिनों कोई नया काम नहीं कर सकते। यह धारणा कब बनी और किसने बनायी, किसी को नहीं पता। बस आँख मूँदकर उसका पालन किए जा रहे हैं। ऐसे में जो चीजें हमारे वश में होती हैं, वे तो हम कर लेते हैं और उसके पक्ष- विपक्ष में तर्क भी गढ़ लेते हैं लेकिन विचार करें कि यदि पितृ पक्ष में परिवार में संतान का जन्म हो तो इसे अशुभ कहेंगे। इसका सरलार्थ यह है कि यह सारी भाँति और अंधविश्वास समय के साथ- साथ भले ही फैला दी गई हो लेकिन आधुनिक समय में इनसे चिपके रहने का कोई औचित्य दृष्टिगत नहीं होता।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभागाध्यक्ष प्रो० विनय पाण्डेय के अनुसार पितृ पक्ष में पितरों के उद्देश्य से किया गया कर्म जैसे दान, तर्पण, श्राद्ध आदि यज्ञ के समान अक्षुण्ण फल देने वाला होता है तथा पितृऋण से मुक्ति प्रदान कर धन- धन्यादि से संपन्न करता है। इस काल में कोई भी नया काम करना या खरीदारी करना अशुभ नहीं है। श्री काशी विद्वत् परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारी डॉ० रामनारायण द्विवेदी के अनुसार पितृपक्ष पितरों के श्रद्धा समर्पित करने और उनसे सुख- समृद्धि का शुभाशीष प्राप्त करने का पर्व है। इस अवधि में भू- भवन या संपत्ति की खरीद पितरों को तृप्त करेगी। शास्त्रों में पितृपक्ष शुभ पक्ष है। तुलसीदास

जी ने शिव को पितर कहा है. ऐसा समय शुभ कार्यों और खरीद- बिक्री के लिए निषेध नहीं है. आचार्य शिवशंकर पाण्डेय का कहना है- शास्त्र में लिखा तो यह गया है कि पूर्वजों का प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए. जो प्रतिदिन विधि- विधान से उनका पूजन नहीं कर सकते, उनके लिए पितृपक्ष का प्रावधान किया गया है. इस काल में किसी भी खरीदारी को लेकर प्रतिबंध नहीं है. पितृ तो हमारे देवता समान हो गए तो वे अशुभ कहाँ से हो गए. हमें रूढ़ियों से मुक्त होना चाहिए.

विद्वज्जन बताते हैं कि पितरों का स्थान देव कोटि में आता है. उन्हें विवाह जैसे शुभ-कर्म में आमंत्रित किया जाता है. पितृपक्ष उनके स्मरण और श्राद्ध का काल है. ऐसे में होना यह चाहिए कि हम इतनी खरीदारी करें कि वे हमारी समृद्धि देखकर प्रसन्न हों. पितृपक्ष चातुर्मास में पड़ता है, इस अवधि में मुहूर्त नहीं होते. ऐसे में मांगलिक कार्य जैसे विवाह आदि वर्जित हैं. इसके अतिरिक्त न तो यह अशुभ काल है और न ही अन्य वर्जना. इस अवधि में दूकान-मकान का क्रय-विक्रय, गृहारंभ, गृहप्रवेश जैसे कार्य हो सकते हैं. अतः इन दिनों में कुछ शुभ कार्य न करना, नई वस्तु न खरीदना जो भ्रांति फैली हुई है, उसका न कोई शास्त्र सम्मत आधार है और न ही तर्कसंगत है.

समय आ गया है, जब हम अपनी संस्कृति और परंपरा के वास्तविक अर्थ, आशय, संदेश और उद्देश्य को समझें. इसके बीच किसी रूढ़िवादिता, भ्रांति और अंधविश्वास का औचित्य नहीं है और हमें चाहिए कि अतार्किक सोच से शीघ्रातिशीघ्र छुटकारा पाएँ. पितरों को प्रसन्न करने, उनकी आराधना और स्तुति का इससे अच्छा तरीका और कुछ नहीं हो सकता कि इस पितृपक्ष में शुभ- अशुभ भ्रांतियों का तर्पण अवश्य करें. अच्छे कार्य के लिए कोई शुभ- अशुभ समय नहीं होता. आवश्यक है कि यह कार्य अच्छे ढंग से संपन्न हो जाए. अभी कम कीमत पर मिलने वाला सामान बाद में शुभ समय समझकर अधिक मूल्य पर खरीदना भला कहाँ की समझदारी कही जाएगी. वास्तव में भ्रांतियों से जितनी जल्दी छुटकारा मिले, हम सब की खुशहाली के लिए उतना ही श्रेयस्कर होगा.

तर्पण

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



तर्पण करते हैं सभी, लेकर जौ तिल हाथ,
करते हैं सब प्रार्थना, जाते मानव साथ.
करे स्नान जल्दी सभी, देते हाथो नीर,
मीठा मेवा को बना, भोग लगाते खीर.
अर्पण करते नीर है, करते हैं जब याद,
मनोकामना पूर्ण से, पाते आशीर्वाद.
आते पूर्वज साल में, ले कागा का रूप,
होती मन में हैं खुशी, लगता रूप अनूप.
बच्चो को होती खुशी, दादा आये आज,
परिवारों के साथ में, जल्दी करते सब काज.

हमारे अपने पेड़

रचनाकार- कार्तिकेय त्रिपाठी, चौथी, Government Primary English Medium School,
Shantinagar Raipur Chhattisgarh



पेड़ बचाओ,
पेड़ बचाओ.

ये देते हैं शुद्ध हवा,
ये देते हैं हमको स्वस्थ जीवन,
ये देते हमको छाँव, फल-फूल, दवा,

आओ हम सब मिलकर करें,
इनकी सुरक्षा का प्रण.

पेड़ बचाओ, पेड़ बचाओ.

है ये संसार हमारा,
जानवर चिड़िया, देते ये उनको छाँव, घर, सुरक्षा, फल.

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
अब ये नारा है हमारा.

पेड़ लगाओ, प्रकृति को बचाओ.

पीपल लगाओ,
प्रकृति में तुम आक्सीजन लाओ.

नीम को तुम दोस्त बनाओ,
बीमारी को दूर भगाओ.

हैं ये हम सबके रक्षक,रक्षा करना हमारा है फ़र्ज़,

पेड़ लगाओ,पेड़ लगाओ,
दुनिया में हरियाली लाओ.

कबाड़ ले जुगाड़

रचनाकार- सरिता जायसवाल



कबाड़ ले जुगाड़ लगाबो जी,
पढ़ई ल मजेदार बनाबो जी.

हिन्दी के मात्रा अउर,
उल्टहा ल समझाबो जी.

परयायवाची अउर वाक्य बनाबो जी,
कबाड़ ले जुगाड़ लगाबो जी.

अंग्रेजी के अक्षर ल घलो बनाबो जी,
लईका मन ल सुग्घर समझाबो जी..

कबाड़ ले जुगाड़ लगाबो जी,
गणित के ज्ञान कराबो जी.

कठिन ल सरल बनाबो जी,
कबाड़ ले जुगाड़ लगाबो जी.

विज्ञान के जादू ल सिखाबो जी,
नवा नवाचार बनाबो जी.

कबाड़ ले जुगाड़ लगाबो जी,
अउर रोजे उपयोग म लाबो जी.

भूखा शेर

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



एक जंगल में शेर रहता था. वह बंदर के बच्चे से बहुत प्यार करता था. बंदर का बच्चा रात-दिन शेर के ही पास रहता था. बंदर का बच्चा दिनभर इस डाल से उस डाल में उछल-कूद करता रहता था. जब शेर को शिकार नहीं मिलता तब बंदर का बच्चा शेर के लिए फल और कंदमूल लाकर उसके सामने रख देता था. बंदर का बच्चा भी शेर को बहुत प्यार करता था. शेर ने कहा- 'अरे ! लटकू मैं मांस खाता हूँ. मैं फल और कंदमूल नहीं खाता हूँ. यदि तुम मुझे भूखा नहीं देख सकते तो मेरे लिए एक काम करो'

बंदर के बच्चे ने कहा- 'महाराज! मेरे लिए क्या आज्ञा है? यदि मेरे लायक काम होगा तो मैं जरूर करूँगा.' बंदर के बच्चे की बात सुनकर शेर ने कहा-'मैं दो दिनों से भूखा हूँ. दो दिनों से मैंने कुछ भी नहीं खाया है. तुम जाकर पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा में बैठ जाओ और देखो. कहीं कोई जानवर हो तो मुझे तुरंत बताओ?' शेर की बात सुनकर बंदर का बच्चा पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर जाकर बैठ गया. इधर-उधर नज़र दौड़ाई. उसे एक हिरण नदी के किनारे पानी पीते दिखाई दिया. बंदर का बच्चा शेर के पास पहुँचा और कहा-'महाराज! मुझे नदी के किनारे एक हिरण दिखाई दिया है. आप जाकर शिकार कर लीजिए.' बंदर की बात सुनते ही शेर, नदी की ओर गया. शेर के आने की आहट सुनकर हिरण वहाँ से भाग गया.

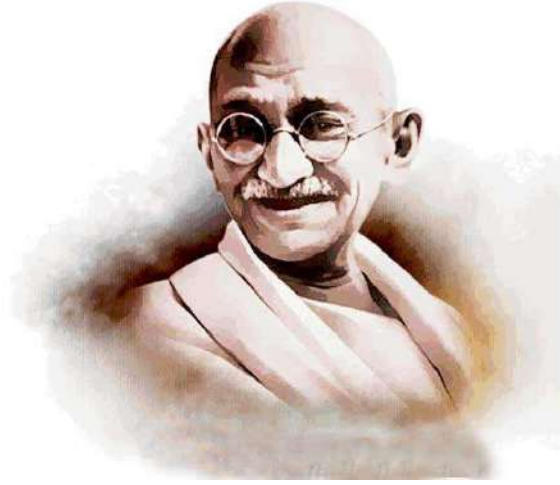
शेर वापस अपनी गुफा के पास आ गया और बंदर के बच्चे से कहा- 'हिरण तो मेरे आने की आहट सुनकर भाग गया. अब तुम फिर जाकर देखो कोई और जानवर दिखाई दे तो मुझे सूचित करना.' बंदर का बच्चा फिर पेड़ पर चढ़ गया और अन्य जानवरों को देखने लगा. अब उसे तालाब के पास एक गाय दिखाई दी. बंदर के बच्चे ने शेर को बताया. शेर फिर तालाब की ओर गया. शेर के आने से झाड़ियाँ हिलने लगीं. आहट सुनकर गाय वहाँ से भाग गई. शेर फिर वापस आ गया. शेर बंदर को बार-बार पेड़ पर चढ़कर देखने के लिए कहता और बंदर हर बार

उनको किसी न किसी जानवर के बारे में बताता था लेकिन शेर एक भी जानवर का शिकार नहीं कर सका. अंततः शेर और बंदर दोनों थक गए.

शेर ने सोचा-'मेरे पास तो मेरा शिकार है और मैं इधर-उधर भटक रहा हूँ, क्यों न मैं इस बंदर को ही अपना शिकार बना लूँ?' शेर ने बंदर के बच्चे से कहा-'लटकू मुझे माफ करना. मैं मजबूर हूँ. मैं भूख के कारण व्याकुल हो गया हूँ और पूरी तरह थक चुका हूँ. यदि मुझे आज खाना नहीं मिला तो मैं मर जाऊँगा. 'बंदर के बच्चे ने कहा-'महाराज! आपने क्या सोचा है? आगे आप क्या करने वाले हैं?' शेर ने जैसे ही बंदर की बात सुनी वैसे ही उसे अपने पंजों से दबोच लिया और लटकू को मार कर खा गया.

सत्य अहिंसा के तुम पुजारी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



सत्य अहिंसा के तुम पुजारी थे,
अस्तेय और अपरिग्रह धारी थे.

तुम मातृभूमि के लिए समर्पित थे,
तुम जन सेवा के लिए अर्पित थे.

तुम स्वदेशी के हिमायती थे,
तुम विदेशियों के विरोधी थे.

तुम जन-जन सब के सेवक थे,
तुम सत्यपुरुष देश के सेवक थे.

तुम आजादी के सच्चे सेनानी थे,
तुम देश के लिए स्वाभिमानी थे.

तुम राम राज्य के स्वप्नद्रष्टा थे,
तुम नवीन भारत के दूरद्रष्टा थे.

तुम ग्राम विकास को जोर देते थे,
ग्राम से देश का विकास देखते थे.

बुनियादी शिक्षा तुम्हीं ने लाई थी,
शिक्षा में तुमने संस्कार फैलाई थी.

व्यवसायिक शिक्षा भी तूने लाई थी,
स्वावलम्बन की पाठ भी पढ़ाई थी,

देश हेतु तन-मन तुमने बलिदान किया,
गुलामी से मेरे देश को आजाद किया.

बापू तुझको वन्दन है, अभिनन्दन है,
तेरे आदर्शों को मेरा शत-शत नमन हैं.

परम पूज्य चिकित्सक-गण

रचनाकार- सुप्रिया शर्मा



शरीर, देह, हो रोग-मुक्त.
हे ईश्वर, तुमने किया, कृतार्थ सबको.
सुंदर ऐसी दी जो काया.
पर जब आई कोई विपदा,
मानव नैं भी रूप धरा है.
हम सब के पूज्य चिकित्सक,
आभार बहुत आप सबका.
धरती पर हो ईश्वर-तुल्य,
मूर्त रूप देखा ईश्वर का.
पर ईश्वर की सबसे सुंदर कृति में,
आया जब कोई व्यवधान.
परम पूज्य चिकित्सक-गण ने,
हुनर दिखाया अपने उपचार का.
आभार बहुत आप सबका,
धरती पर हो ईश्वर-तुल्य.
निःस्वार्थ भाव से हो जब कार्य,
नहीं किसी का होता अहित.
आभार बहुत आप सबका,
परम-पूज्य चिकित्सक-गण.

पढ़ना जरूरी है

रचनाकार- सुप्रिया शर्मा



अपने सपनों के लिए,
पढ़ना जरूरी है.

आत्म-निर्भर बनने के लिए,
पढ़ना जरूरी है.

खुद को समझने के लिए,
पढ़ना जरूरी है.

अपने को विकसित करने के लिए,
पढ़ना जरूरी है.

लंबी छलाँग, ऊँची उड़ान,
शिखर पर डटे रहने के लिए,
पढ़ना जरूरी है.

शुभता की जिज्ञासा

रचनाकार- सीमा यादव



शुभता नाम की एक लड़की थी. वह तीसरी कक्षा में पढ़ती थी. शुभता से बड़ी तीन बहनें और दो छोटे भाई थे. शुभता सबसे अलग स्वभाव की थी. उसे चीजें जल्दी समझ में नहीं आती थीं. लोग उसकी बातों को बहुत कोशिश करने के बाद ही समझ पाते थे, क्योंकि वह तुतलाकर बोलती थी. शब्दों का उच्चारण सही नहीं हो पाता था. इस तरह से घर, बाहर सभी जगह वह उपहास का पात्र बन जाती थी. उसके मित्र भी उसकी नकल करके उसका मजाक बनाते थे.

इस तरह शुभता का समय हतोत्साह व उदासी भरे माहौल में गुजरता था या यूँ कहा जाए कि कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता था कि वह किसी के मजाक का शिकार न बनी हो. वह संकोची होती जा रही थी. मन के कौतुहल को दबाने की कोशिश में लगी रहती थी, क्योंकि ज्यादा बोलकर वह मजाक का शिकार नहीं बनना चाहती थी. बड़े हों या छोटे सबकी अपनी आत्मप्रतिष्ठा होती है. सबका आत्मसम्मान होता है. ये संवेदना उसके भीतर भी थी, वह अकेले में फूट- फूट कर रो लिया करती थी, अपनी व्यथा किसी के समक्ष प्रकट नहीं होने देती थी.

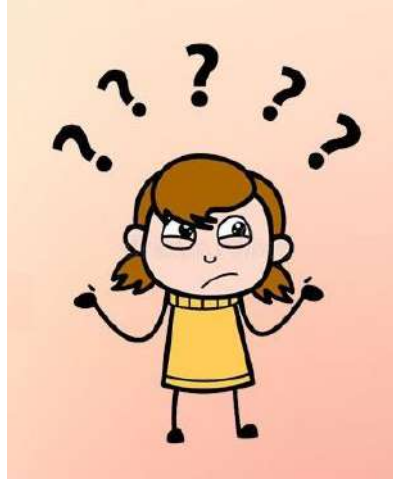
इस तरह शुभता गुमसुम रहने लगी थी. मित्रों से दूर दूर रहने लगी थी एक दिन वह अकेले में खुद से बातें कर रही थी. आत्मवार्तालाप करने की उसकी आदत हो गयी थी उसके मन में विचार आया कि क्यों न मैं किसी एक विशेष अक्षर पर जोर देते हुए बार-बार बोलूँ. शब्दों पर दबाव पड़ने से जिह्वा के उच्चारण में निश्चित ही स्पष्टता आयेगी. इस तरह शुभता में स्वयं की कमी को दूर करने की ललक पैदा हो गयी और उसने तुरंत ही उस पर अमल करना शुरू कर दिया. इस तरह से हफ्ते दो हफ्ते बाद शब्दों के उच्चारण में बहुत सकारात्मक परिवर्तन

दिखाई देने लगे. सब उससे वाक्शुद्धि का रहस्य पूछने लगे. तब उसने सबको वह महामंत्र बता दिया कि मैंने कोई चमत्कार नहीं किया है बल्कि मैंने बार- बार अभ्यास करके अपनी कमी पर जीत हासिल कर ली है. यह सुनकर उसके परिवार में सबने इस गूढ़ रहस्य को मान लिया कि सफलता का एक ही सूत्र है कड़ी मेहनत, पक्का इरादा एवं सच्ची आस्था.

इन तीनों को आधार बनाकर जो भी लक्ष्य साधेगा, उसे अवश्य ही विजय हासिल होगी. ये तीनों चीजें ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं सुसंस्कृत करती हैं.

विज्ञान पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव



1. मैं पौधों में ऐसे लिपटूँ,
जैसे उसका अंग.
पौधों से ही पोषण पाता,
पीला-पीला रंग.
2. मैं पौधा हूँ एक अनोखा,
कीड़ों को मैं खाऊँ.
1759 मैं मुझको खोजा,
बोलो क्या कहलाऊँ?
3. मैं पौधा हूँ एक अजूबा,
मेरे जैसा कोउ न दूजा.
कीट पतंगों को मैं खाता,
आकार घड़े के जैसा पाता.
4. कुछ पौधे हैं अजब निराले,
सड़ी चीजों से पोषण पाते.
मृत पदार्थ आहार है इनका,
बोलो बच्चों क्या कहलाते?

5. दूसरों से मैं भोजन पाऊँ,
छतरी जैसा अंग.
मुझे पकाकर बच्चों खाओ,
प्रोटीन मेरे संग.

उत्तर- 1. अमरबेल, 2. वीनस फ्लाई ट्रेप, 3. नेपेन्थीज, 4. मृतोपजीवी, 5. कुकुर मुत्ता

पानी

रचनाकार- यक्ष चंद्राकर



बिन पानी न चले जिंदगी,
जीव की रक्षा मुश्किल है.
इस जीवन रक्षक के बिन,
प्राण बचाना मुश्किल है.
पंचतत्व में प्रमुख तत्व भी,
होता समझो पानी है.
जन जीवन की आवश्यकता,
प्रमुख रूप से पानी है.
जल से अन्न पैदा होता,
जीवन रक्षक पानी है.
जल संकट का हल भी पानी,
नित्य बचाना पानी है.
है ईश्वर की देन समझो,
सचमुच में ही पानी है.
अमृत से कम न समझों,
संजीवनी-सा पानी है.
पानी कम जनसंख्या अधिक,
रोज बचाना पानी है.
पानी सबको मिले, ध्यान रखो,
व्यर्थ न कभी बहाना पानी है.

शिक्षा जन जागरण

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर



बेटा-बेटी ल खूब पढ़ाओ,
इही म हवय भलाई.
ज्ञान के दिया उही जलाही,
दाई ददा के नाम जगाही.

स्कूल मा आ के पढ़ही लिखही,
शिक्षा के अलख जगाही.
गाँव-गली अउ राज देश म,
अड़बड़ अपन नाम कमाही.

स्कूल ला तुम अपने जानव,
इन मानव जी सरकारी
आज नहीं तब काली भइया
तुँहरो तो पारी आही.
ज्ञान के दिया उही जलाही.
सरकार हर पुस्तक ल देथे
दाई-ददा ल नइ हे बोझ.
सुग्घर देथे मध्यान भोजन,
अउ खाये बर मिलथे रोज.
नवमी म जब नोनी जाही
नवा साइकील ला ओ पाही
ज्ञान के दिया उही जलाही.

आज ले परन कर लौ भइया,
पढ़े बर हम स्कूल भेजबोन.
का- का पढ़थे, कैसे पढ़थे,
जुरमिल के हम सब देखबोन.
पढ़ही-लिखही सुग्घर भइया,
तब तो देश म नाम कमाही
ज्ञान के दिया उही जलाही.

दादा जी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



मेरे प्यारे दादाजी,
सबसे न्यारे दादाजी.

बच्चों संग बनते बच्चा,
सदा हमारे दादाजी.

कभी नहीं होते गुस्सा,
चाँद सितारे दादाजी.

हरदम खुशी लुटाते हैं,
गुब्बारे बन दादाजी.

मीठी, तृषा, चीकू से,
हरदम हारे दादा जी.

सबसे प्यार जताते हैं,
प्यारे-प्यारे दादाजी.

मस्ती वाले खेल यहाँ,
खेलें हमारे दादाजी.

बेटियाँ

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



बेटी से परिवार, नाम कुल रौशन करती.
देना बेटी मान, जगत की पीड़ा हरती.

माँ पापा की जान, सदा वो प्यार लुटाती.
घर आँगन को रोज, फूल सी वह महकाती.

लेती घर में जन्म, गूँजती है किलकारी.
नन्ही होती जान, सभी को लगती प्यारी.

लेते पापा गोद, आँख उनके भर आते.
हँस-हँस कर वे रोज, प्यार अपना बिखराते.

करो नहीं तुम भेद, एक तुम इसको जानो.
होती दुर्गा रूप, सदा तुम इसको मानो.

बेटी से संसार, उजाला घर को करती.
बन लक्ष्मी की रूप, सदा अपना घर भरती.

नहीं समझना बोझ, जगत में इसको लाओ.
बेटी बेटा एक, खुशी घर में बिखराओ.

पढ़ लिख कर वो आज, हमेशा आगे बढ़ती.
करती है हर काम, राह वो अपना गढ़ती.

भारत ल स्वच्छ बनाना हे

रचनाकार- यक्ष चंद्राकर



गाँधी जी के सपना रहीस,
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.
लइका-सियान सबो जुरमिल के
सपना नवा सजाना हे
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.

गाँव, शहर, खोर, गली म,
करके हमला दिखाना हे।
चाहे तरिया, मंदिर- मस्जिद हो,
सब ला सरग बनाना हे.
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.
लइका-सियान सबो जुरमिल के,
सपना नवा सजाना हे,
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.

साफ- सफाई सेहत के राज,
सब ला एला बताना हे.
स्वच्छता ल अपना के भइया,
बीमारी ल दूर भगाना हे.
लइका-सियान सबो जुरमिल के,
सपना नवा सजाना हे,
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.

पर्यावरण ल स्वच्छ रखे बर,
पेड़ -पौधा घलो लगाना हे.
नवा सबेरा लाए बर जी,
मनखे ला घलो जगाना हे.
लइका-सियान सबो जुरमिल के,
सपना नवा सजाना हे,
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.

आज ले करव परन ग भइया,
खुला म शौच नइ जाना हे.
कचरा के निपटारा करके,
आदर्श गाँव बनाना हे.
लइका-सियान सबो जुरमिल के,
सपना नवा सजाना हे,
भारत ल स्वच्छ बनाना हे.

नदियों की धारा

रचनाकार- वन्दना गुप्ता



प्रकृति की गोद में नदियों की धारा है,
सात सुरों-सा संगीत उसका प्यारा है.

मुश्किलें चाहे जितनी राह में आये,
भरती और उत्साह, नहीं कभी घबराये.

बिना रुके वह धुन में बहती जाती है,
कर बाधा पार मंजिल अपनी पाती है.

जीवन जीने का सबक हमें सिखाती है,
करो संघर्ष, हार न मानो बतलाती है.

खेतों में जल देकर भोजन उपजाती,
वन-उपवन को जीवन दे वह सुख पाती.

प्रकृति की गोद में नदियों की धारा है,
सात सुरों-सा संगीत उसका प्यारा है.

काला बन्दर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



एक मनचला काला बन्दर.
घुस आया मेरे घर के अंदर.

किचन में उत्पात मचाया.
रखी मिठाई सब्जी खाया.

मेरे सभी खिलौने तोड़ा.
टी.वी.का सब बटन मरोड़ा.

पापा जब इयूटी से आया.
सभी वस्तुएँ बिखरे पाया.

मचा दिया था खूब बवंडर.
एक मनचला काला बन्दर.

रेल

रचनाकार- इंद्रजीत कौशिक



छुक-छुक करती जाती रेल,
सरपट दौड़ी जाए.
कभी यहाँ तो कभी वहाँ पर,
मंजिल पर पहुंचाए.

इंजन चल कर सबसे आगे,
जैसे राह दिखाए.
पीछे-पीछे डिब्बे झटपट,
कदमताल कर आये.

सैर करने का जब हो मन तो,
सबको रेल ही भाए.
नई-नई जगह दिखला कर,
मन को खुश कर जाए.

बच्चों का तो मन करता है,
कभी न छोड़े रेल.
उसमें ही जाकर बस जाएँ,
कर लें ऐसा मेल.

शेर का शिकार

रचनाकार- अशोक कुमार यादव



एक घने जंगल में बहुत सारे पेड़-पौधे एवं जीव-जंतु रहते थे. जंगल में एक शेर अपने परिवार के साथ गुफा में रहता था. शेर प्रतिदिन एक जानवर का शिकार करता था. शेर की इस हरकत से जंगल के सभी जानवर परेशान थे. एक दिन हाथी ने बैठक बुलाई. बंदर ने सभी जानवरों से कहा-'सुनो भाइयों! हाथी दादा ने बैठक बुलाई है. सभी लोग 'नदी पर्वत' के पास पहुँचो.' जंगल के सभी जानवर इकट्ठे हो गए. बैठक में शेर और लोमड़ी को छोड़कर अन्य सभी जानवर उपस्थित थे. हाथी ने कहा- ' भाइयों ! आज जंगल के सभी जानवर खतरे में हैं. शेर सभी जानवरों को प्रतिदिन मारकर खा जाता है. जिस परिवार का सदस्य मारा जाता है, उस परिवार के लोग रोते रह जाते हैं. क्यों न हम सभी मिलकर शेर का शिकार करें? शेर के मरने के बाद इस जंगल के सभी जानवर स्वतंत्र हो जाएँगे. शेर से पहले हमें लोमड़ी का शिकार करना होगा; क्योंकि लोमड़ी ही सभी जानवरों के बारे में शेर को बताता है. तभी शेर जानवरों का शिकार करता है. लोमड़ी, शेर का खबरी है इसलिए शेर से पहले लोमड़ी का मरना अनिवार्य है.'

हाथी की बात से सभी जानवर सहमत हो गए. बंदर ने कहा- 'हाथी दादा हम शेर का शिकार करेंगे कैसे? इसके लिए आपने क्या योजना बनाई है?' हाथी ने कहा- 'शेर को मारने के लिए हमको नर हिरण की सहायता लेनी होगी. हिरण ही सबसे तेज दौड़ सकता है.' हिरण इस काम के लिए तैयार हो गया. हिरण के पीछे-पीछे सभी जानवर जाते थे. बंदर, लोमड़ी के पास गया और कहा-'आज हिरण अकेला है. शेर उसका शिकार आसानी से कर सकता है. चलो मैं दिखाता हूँ.' बंदर, लोमड़ी को बेवकूफ बनाकर हिरण के पास ले आया. छुपे हुए सभी जानवरों ने झाड़ियों से बाहर निकल कर लोमड़ी पर हमला कर दिए. लोमड़ी वहीं पर मारा गया.

अब हिरण शेर की गुफा के पास गया. सभी जानवर जोर-जोर से आवाज़ करने लगे. सभी जानवरों की आवाज़ सुनकर शेर गुफा से बाहर निकला. सभी जानवर छुपकर शेर का इंतजार

कर रहे थे. हिरण घास खा रहा था. हिरण को अकेला देखकर शेर धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा. शेर को देखकर झाड़ियों में छुपे जंगल के सभी जानवरों ने शेर को आकर घेर लिया. हाथी ने अपनी सूँड से शेर को उठा कर पटका. शेर अधमरा हो चुका था. जंगल के अन्य सभी जानवरों ने उसे अपने पैरों तले कुचल दिया. अंत में गेंडा और जंगली भैंसा ने अपने सींग से शेर को छेदकर मार डाला. शेर के परिवार के सदस्य भी शेर का अंत होते हुए देख रहे थे. शेरनी ने अपने बच्चों से कहा- 'यदि हम लोग इस जंगल में रहे तो सभी जानवर हमको भी मार डालेंगे, इसलिए हम इस जंगल को छोड़कर किसी अन्य जगह चले जाते हैं.' शेरनी और उसके बच्चे उस जंगल को छोड़कर चले गए. जंगल के सभी जानवर खुशियाँ मनाने लगे. सभी जानवर अब उस जंगल में मिल-जुलकर शांतिपूर्वक रहने लगे.

गप्पू जी

रचनाकार- इंद्रजीत कौशिक



नाम है जिनका गप्पू जी
वह अपने बंदर मामा हैं,
पतलून पहन लेते कभी तो
पहने कभी पजामा हैं.

उछल-कूद दिन भर करते हैं
करते नहीं पढ़ाई हैं,
वहीं ढाक के तीन पात फिर
चलते कोस अढ़ाई हैं.

बात समझ की कोई कहे तो
गुस्से में भर जाते हैं,
जैसे हो कोई पका टमाटर
ऐसा मुँह बनाते हैं.

खुद को सबसे बड़कर मानो,
उनका बस यह नारा है.
कोई चाहे कुछ भी कह ले,
गप्पू सबका प्यारा है.

मैं किसान हूँ

रचनाकार- सुशीला साहू



भारत भूमि का निशान हूँ,
मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ.
परिश्रम से मिलती सफलता,
बंजर भूमि उपजाऊ होता.
खेत जोत कर फसल उगाता,
हरी-भरी हरियाली लाता.
सौंधी माटी का मितान हूँ.
मैं किसान हूँ.

रोज सुबह जल्दी उठ जाता,
रूखा-सूखा मुझको सब भाता.
थका हारा मैं जब सोता,
मीठे-मीठे सपनों में खोता.
मैं भारत माँ का वरदान हूँ.
मैं किसान हूँ.

गांधी-नेहरू जैसा मेरा सपना,
धोती-कुर्ता और लाठी अपना.
मैं तो कहलाता अन्नदाता,

अमीर-गरीब सबको खिलाता.
भारत भूमि पर बलिदान हूँ.
मैं किसान हूँ.

बोलो जय जय हिन्दुस्तान
जय-जवान, जय-किसान.

घड़ी

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया



टिक-टिक बोलूँ मैं हूँ घड़ी,
घर की दीवारों पे मैं हूँ जड़ी.

सबको कितनी जल्दी है पड़ी,
वक्त बताऊँ मैं होकर खड़ी.

अम्मा, दादी हो या बहन बड़ी,
काम करते सब बिना गड़बड़ी.

ना करो तुम जरा भी हड़बड़ी,
समय के पाबंद बनो, बात है बड़ी.

फुगड़ी

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया



रानू और उसकी बहन बस्तर के गाँव में छुट्टियां मनाने गईं. उन्हें गाँव के एक घर में बैठने का इशारा किया गया और कहा गया "बसा री".

रानू ने इशारे से समझ लिया कि उसे बैठने के लिए कहा जा रहा है. वह मुस्कुराकर बैठ गई. इतने में कई और ग्रामीण बच्चे भी वहाँ आ पहुँचे.

घर के मालिक ने गोंडी में उन सबसे उद्दा उद्दा कहा. अर्थात् बैठिए. गाँव का गुड़ खाकर रानू ने देखा कि सारे बच्चे उकड़ूँ बैठकर एक खेल खेलने लगे. उसने पूछा कि ये कौन सा खेल खेल रहे हैं. महिला ने मुस्कुराकर कहा ये उकड़ूँ बैठ कर खेला जाने वाला खेल है जिसे फुगड़ी कहा जाता है. रानू भी उतावली होने लगी. वह भी उकड़ूँ बैठने की कोशिश कर खेलने लगी.

बच्चों ने गाना शुरू कर दिया

उद्दा उद्दा उखड़ू,

फुग्गा फुग्गा फुगड़ी.

रानू खेलखिला उठी. आज उसने फुगड़ी का खेल भी सीख लिया और उसके शब्दकोष में भी वृद्धि हो गई कि बैठना को हल्बी में बसा कहा जाता है और गोंडी में बैठने को उद्दा कहा जाता है.

बाड़ी मेरी कितनी प्यारी

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया



बाड़ी मेरी कितनी प्यारी,
इसमें है फूलों की क्यारी.

तितली आती न्यारी-न्यारी,
सैर को आते बारी-बारी.

कोयल कूके कारी-कारी,
भंवरा पीता मधुरस सारी.

गौरैया का आना है जारी,
तुम भी आना पारी-पारी.

पतंग

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



भैया मेरे पतंग बना दो,
मैं भी उसे उड़ाऊँगी.
उड़ता देख उस पतंग को,
मैं भी खुश हो जाऊँगी.

बाँध दो उसमें पक्का धागा,
तेज हवा में जो टूटे ना.
उड़ता जाए वो दूर गगन में,
ऊँचे पेड़ों में उलझे ना.

दिखने में जो सबसे सुंदर हो,
भैया ऐसा पतंग बनाना.
मान लो अपनी बहना का कहना,
अब न करो कोई बहाना.

सर्र-सर्र, सर्र-सर्र पतंग उड़ेगी,
आसमान सज जाएँगे.
सूरज देखता रह जायेगा,
सब बच्चे ताली बजाएँगे.

गुब्बारा

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



उड़ते नभ में बिन पँखों के,
रंग-बिरंगे ये सुंदर गुब्बारे.
लाल, गुलाबी, नीले, पीले,
रंग है इनके कितने सारे.

दिन भर खेलूँ गुब्बारे संग,
लगते हैं ये मुझको प्यारे.
डरता रहता है मन सदा,
फूट न जाये मेरे ये गुब्बारे.

चुन्नू-मुन्नू जल्दी आओ,
गुब्बारे वाला आया है.
तरह-तरह के रंग बिरंगे,
देखो सुंदर गुब्बारे लाया है.

मुझे चाहिए लाल रंग का,
बाकी कोई भी तुम ले लो.
उड़ न जाये ये दूर गगन में,
जल्दी-जल्दी भीतर चलो.

सूरज से सीख

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर



रोज सुबह उगता है सूरज,
सीख नई दे जाता है,
हमको यह सिखलाता है,
रोज सुबह आप भी उठ जाओ,
जैसे मैं उठ जाता हूँ.

नित-नित सैर को जाओ,
जो आप सैर में जाएंगे.
मेरे साथ अपनी ताकत बढ़ाएँगे,
विटामिन डी भी पाएंगे.

ज्यों-ज्यों दिन चढ़े,
आपकी भी ऊर्जा बढ़े,
मुझ जैसा चमकना तुम,
सभी दिशाओं में महकना तुम
रौशन करके अपना नाम,
एक दिन बनना तुम महान.

हिंदी भारत की शान

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर



हिंदुस्तान की पहचान हैं हिंदी,
भारत माँ की शान है हिंदी.

जीवन की परिभाषा है हिंदी,
हर भारतीय का आधार है हिंदी.

प्यार की भाषा सिखाती है हिंदी,
माँ की भाषा बताती है हिंदी.

नए ख्याब सबको दिखाती हैं हिंदी,
भारत माँ की अभिमान है हिंदी.

वाणी का वरदान है हिंदी,
हम सबका आधार हैं हिंदी.

जन-जन की भाषा हैं हिंदी,
भारत माँ की आशा है हिंदी.

हिंदुस्तान की पहचान हैं हिंदी,
भारत माँ की आन,बान, शान हैं हिंदी.

बेटी

रचनाकार- रचना दीपेश पुरोहित 'बिहारी'



बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी,
घर की सारी जिम्मेदारी.

आँगन की बिखरी फूलवारी,
चाहे नल में जल की बारी, या कपड़ों से भरी अलमारी.

चीजें तेरी एक एक कर, सम्भाल रखूँगी,
बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

दादी के हाथों की माला, टूटा चश्मा, दादा वाला.
चाचा की मैं चमची बनकर, खोलूँगी खुशियों का ताला.

बन पापा की प्यारी, मैं कमाल कर दूँगी,
बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

दकियानूसों से माँ मत डर, आगे बढ़, जरा हिम्मत तो कर.
आँखें खुली नहीं हैं फिर भी, देख रही, दिल तेरे अंदर.

कदम रखूँगी जग में, ऊँचा तेरा भाल करूँगी.
बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

मैं तेरी खुशियों की पेटी, माँ तुम भी तो, हो एक बेटी.
मुझे खेलनी परियों के संग, क्यों बाहर आने ना देती.

सुंदर दुनिया देख, ये सवाल करूँगी,
बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

कोख ही तेरी, मंदिर मेरा, सारा जहाँ है, आँचल तेरा.
कफन, इसे ना बनने देना, तेरे जीवन का, मैं सवेरा.

सपने तेरे दिल में मैं, सम्भाल रखूँगी,
बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

बेटी हूँ माँ तेरी, मैं खयाल रखूँगी.

बंदर

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी



बंदर मामा,
पहन पजामा.
पहुंचे शेर के,
गुफा धाम.

शेर देख कहा,
मन मचली.
अब हालत हुई,
मेरी जो पतली.

करतब कर,
मन बहलाऊं.
कुछ काम मैं,
ऐसा कर जाऊं.

तू राजा वन का,
और मैं इतराऊं.
आपकी सभा में,
मैं मंत्री बन जाऊं.

तुम चलो आगे,
में उधम मचाऊं.
पीठ पीछे तेरी,
में शान दिखाऊं.

छत्तीसगढ़ के भुइयाँ

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू



छत्तीसगढ़ के भुइयाँ,
में लागव तोर पड़्यो.

छत्तीसगढ़ हमर जान आय,
इही हमर पहचान आय.
छत्तीसगढ़ी के करव सम्मान,
छत्तीसगढ़ के बढ़ही मान.

छत्तीसगढ़ी ल बीस बछर म
नइ मिलिच पहचान,
अपन भाखा बर लड़बो जुड़ मिल लइका सियान.

अरपा, पैरी, महानदी हे महान,
जेकर रखना हे ध्यान.

तीज तिहार एखर पहचान,
जेला मिल जुल के मानथे लइका सियान.

छत्तीसगढ़ धान के कटोरा,
बारो महीना म एला एक बार बटोरा.

छत्तीसगढ़ के खेल फुगड़ी, गिल्ली, चेर्रा नदागे,
लइका मन अब पबजी, मोबाइल, टीबी म भुलागे.

छत्तीसगढ़ के नाचा सुवा, करमा, ददरिया,
तेखरे सेती हवय छत्तीसगढ़ सबले बढिया.

नवा रङ्गपुर में बने हे जंगल सफारी,
नङ्ग हे संगी एमा थोरको लबारी,
छत्तीसगढ़ के जंगल ल कोन बचाही,
सही सही बताहू संगवारी.

बस्तर ह छत्तीसगढ़ के बढ़ाथे सान
जिहा के रहैया आदिवासी ल देबो सम्मान.

मैनपाट छत्तीसगढ़ के शिमला,
पता हे हमन ला.
रतनपुर म हावय महामाया धाम,
जेखर दुनिया म अङ्गबङ्ग नाम.

पितृ पक्ष

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



करते पूजा पाठ, पितर की करते सेवा.
मन में श्रद्धा भाव, और खाते सब मेवा.
करते अर्पण नीर, देव को सभी मनातें.
चाँवल जौ को साथ, हाथ लेकर सब जातें.
करतें पितृ को याद, साल में सब है आतें.
होते भगवन रूप, सभी अपने घर जातें.
छत के ऊपर बैठ, काग को भोग खिलातें.
है पितरों का रूप, यहाँ हम सभी मनातें.
पुरखों को दो मान, नियम उनकी अपनाओ.
मिलता है जी लाभ, हानि से नहीं घबराओ.
देते आशीर्वाद, खुशी जीवन में आते.
बच्चें बूढ़े साथ, सदा यूँ साथ निभाते.

नीम का पेड़

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



मेरे घर के पिछवाड़े
खड़ा नीम का पेड़.
ठंडी-ठंडी छांव देता
दिन भर नीम का पेड़.

तरह तरह के पंक्षी बंदर
आ कर उस में रहते.
आपस में अपनी खुशी
एक दूजे को बाँटा करते.

शुद्ध हवा और आक्सीजन
रोज हमें देता है.
सारा हवा प्रदुषण
अपने में सोख लेता है.

आता जब अप्रैल जून का महीना
फूल फलो से लद जाता.
नीम के बीज पत्तो से
साबुन दवा बनाया जाता.

नीम का दांतुन और तेल
बहुत फायदा देता.
नीम का पेड़ हमेशा
सारे सुख हमें देता.

नन्हा चित्रकार

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु"



आज आशु बिना पलक झपकाए चित्रकार के बनाते हुए चित्र को एकटक देख रहा था. आशु के मनोभावों को देख कर ऐसा लग रहा था मानो वह स्वयं चित्रकार बन गया हो. जैसे-जैसे चित्रकार अपनी तूलिका को चित्रों में रंग भरने के लिए उसको घुमाता फिराता वैसे-वैसे आशु के हाथ और उसके शरीर भी आगे पीछे होता जाता.

आशु चित्रों में इस तरह तन्मय हो जाता कि उसे अपनी उपस्थिति का भान ही नहीं रहता.

जब चित्रकार अपने चित्रों को पूर्ण करता तभी वह अपनी तन्द्रा को तोड़ पाता. तब आशु को पता ही नहीं रहता कि कब उसके स्कूल जाने का समय हो गया है.

फिर वह आशु उन चित्रों को अपने मन में स्थापित कर झट से वहाँ से स्कूल को निकल जाता. स्कूल में वह उन चित्रों में खोया रहता और जैसे ही उसको समय मिलता उन सारे चित्रों को अपनी कापियों में बनाना शुरू कर देता.

समय बीतता गया, वह उस चित्रकार के चित्रों को हूबहू बनाना शुरू कर दिया. उन चित्रों को देख कर ऐसा लगने लगा कि मानो वही चित्रकार बना गया हो. आशु चित्रों के रंग में पूरी तरह से रंग गया था. लोग उसके चित्रों को देख कर आश्चर्य चकित हो जाते और आशु की खूब प्रशंसा होती, उसको खूब प्रोत्साहन मिलता, अपने इस प्रोत्साहन से वह प्रसन्न हो जाता और जब कभी कोई दूसरी चित्र बनाता तो उसमें वह अपनी सारी शक्ति लगा देता था. अब वह आशु एक "नन्हा चित्रकार" के रूप स्थापित हो गया था, आसपास के सभी लोग उसे नन्हा चित्रकार के रूप में जानने लगे.

उसकी प्रसिद्धि चारों दिशाओं में फैलने लगी.

एक दिन अचानक पास के नगर में चित्र प्रदर्शनी का आयोजन हुआ, वहाँ पर नन्हा चित्रकार भी अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाई. वहाँ लोगो का तांता लग गया. जिधर देखो उधर नन्हा चित्रकार की प्रशंसा होने लगी, सभी के जुबान पर एक ही बात नन्हा चित्रकार, नन्हा चित्रकार.

ऐसे ही समय पर एक बुजुर्ग व्यक्ति आते हैं, जिनकी बड़ी-बड़ी दाढ़ी है, आंखों में चश्मे है, पैजामा कुत्ता पहने हैं कंधों में एक थैला लटकाए हुए हैं, जो प्रदर्शनी कक्ष में प्रवेश करते हैं. जैसे ही उनकी नजर चित्रों पर पड़ी वहीं ठिठक के रह जाते हैं और उनके मुख से अनायास ही निकल पड़ता है- वाह-वाह, बहुत खूब.

तभी वहाँ पर नन्हा चित्रकार आता है और गुरु जी, गुरु जी, कहता हुआ उसके चरणों को प्रणाम करता है.

दर असल में वह बुजुर्ग व्यक्ति वही महान चित्रकार था जिनके बनाते हुए चित्रों को वह नन्हा चित्रकार कभी ध्यान मग्न होकर देखा करता था. आज उनको पाकर वह धन्य हो गया था और बिना कुछ बताये गुरुजी को घुमाने में लग गया.

"आइए-आइए गुरुजी, मैं आपको पूरा कक्ष घुमा देता हूँ."

तभी वह बुजुर्ग व्यक्ति आशीर्वाद देते हुए- "ठीक है बेटा", कहते हुए नन्हा चित्रकार के पीछे-पीछे चलना शुरू कर देता है. जैसे ही वह अंतिम कक्ष में पहुँचता है, वहाँ पर उस बुजुर्ग व्यक्ति का सबसे प्यारा और सुंदर चित्र दिखाई देता है, जो बिल्कुल उससे मिल गया था. इसको देखकर वह बुजुर्ग व्यक्ति आश्चर्य से भर जाता है- "मेरा चित्र, हूबहू मेरी शकल"

और फिर वह बुजुर्ग व्यक्ति अपनी नजरों को यहाँ-वहाँ दौड़ता है, उसको वही नन्हा चित्रकार दिख जाता है जो उसको चित्र दिखाने लाया था. तभी वह बुजुर्ग व्यक्ति कहता है- "बालक, इन चित्रों को किसने बनाया और वह चित्रकार कहा है. मैं उससे मिलना चाहता हूँ."

तभी वह नन्हा चित्रकार उसके चरणों में गिर जाता है और कहता है- "गुरु जी वह चित्रकार आपके पावन चरणों में समर्पित है, आज मैं आपको पाकर धन्य हो गया, आप ही मेरे गुरु जी हैं आपने ही ने मुझे इन चित्रों में रंग भरना सिखाया है. मैंने आपको मन ही मन अपना गुरु मान लिया था और मैं अपनी साधना में लग गया था. आज मेरी साधना सफल हो गयी."

इतना सुनते ही वह बुजुर्ग व्यक्ति उस नन्हा चित्रकार को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया. दोनों की आंखें भर आती हैं. फिर गुरुजी कहते हैं- "तुम धन्य हो बेटा, तुमने आज मुझे बिना मांगे अनमोल गुरु दक्षिणा दे दिया और मेरी कला को जीवंत कर दिया."

मैंने नन्हा चित्रकार का नाम सुना था- "जैसा सुना था वैसा ही पाया."

बेटा तुमने अपने गुरु का और अपना नाम सार्थक कर दिया. तुम्हारा कल्याण हो, कल्याण हो.

फूल

रचनाकार- सुषमा बग्गा



रंग बिरंगे प्यारे फूल,
लाल पीले नीले फूल,
मुस्कराते यह प्यारे फूल,
फूल सुहाने सबको भाते,
तितलियाँ देख इसे मुस्कराते,
रंग-बिरंगे प्यारे फूल,
कितने प्यारे-प्यारे फूल,
हम सबको भाते फूल,
अपनी सुंदरता फैलाते फूल,
सबको पास बुलाते फूल,
धरती को सजाते फूल,
रंग-बिरंगे प्यारे फूल,
लाल, पीले, नीले फूल.

तितली रानी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार



तितली रानी तितली रानी,
चंचल मोहक चतुर स्यानी.

इतराती बलखाती आती,
हरसूँ खुशी लुटाती आती.

दिन भर करती हो मनमानी,
फूलों के संग छेड़खानी.

संग हवा के लो हिचकोले,
कलियों की तन्द्रा को खोले.

वन उपवन की राजदुलारी,
घूम रही है क्यारी-क्यारी.

बच्चे देखें खुश हो जाते,
लेकिन पकड़ न तुमको पाते.

कभी यहाँ तो कभी वहाँ,
ठौर-ठिकाना मिला कहाँ?

बदलाव

रचनाकार- बदलाव



10 वर्ष का बच्चा था रोहन, जो बहुत शरारती, बदमाश और सबको परेशान करने वाला लड़का था. वह छोटे- छोटे जीव जंतुओं को मारता उनको परेशान करता. छोटे- छोटे पेड़ पौधों को उखाड़ कर फेंक देता. घर में माता-पिता, दादा-दादी सभी उसे बहुत समझाते कि पेड़ पौधे, छोटे जीव-जंतु हमारे मित्र हैं, उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए. पर रोहन किसी की बात नहीं मानता.

एक दिन रोहन अपने आंगन में लगे अमरुद के पेड़ पर बने मधुमक्खी के छत्ते को गिराने के उद्देश्य से पेड़ पर चढ़ा, वह बहुत कोशिश कर रहा था कि छत्ते की मधुमक्खियों को मार भगाये और सारा शहद वो ले लें, पर अचानक एक मधुमक्खी उसके गाल को काट दी और रोहन का संतुलन बिगड़ा और वह नीचे गिर गया. उसके शरीर को अनेकों जगहों पर मधुमक्खी ने काटा, वह दर्द से कराहने लगा और रोने लगा.

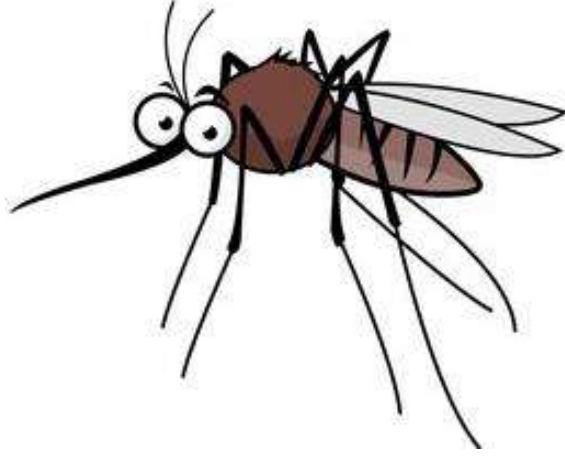
उसका रोना सुनकर उसकी माताजी दौड़ी चली आयी, उसे गोद में उठाकर कमरे में ले आयी, डॉक्टर को बुलाया, दवा खिलाई और डॉक्टर ने रोहन को कुछ दिन आराम करने कहा. रोहन अभी भी दर्द से कराह रहा था. उसकी माँ जब कमरे में आयी तो रोहन ने अपनी माँ से कहा, माँ मुझे बहुत दर्द हो रहा है. माँ ने उसे गले लगाकर कहा, बेटा जब तुम छोटे जीव जंतुओं को मारते थे, पेड़ पौधों को मरोड़ते थे उन्हें भी दर्द होता था, पर वो बेजुबान होने के कारण अपना दर्द बता नहीं पाते थे. आज तुम्हें दर्द हो रहा है तो तो सोचो उनको कितना दर्द होता होगा. रोहन के कमरे की खिड़की से उसके आंगन का बगीचा दिखता था, अब वह पेड़ों को, पंछियों को, भौरों को गौर से देखता, उनको महसूस करता.

धीरे धीरे रोहन ठीक हो रहा था और उसका प्रकृति के प्रति लगाव, संवेदनशीलता बढ़ती जा रही थी. वो सोच रहा था कब वो कमरे से बाहर निकल पेड़- पौधों की छाँव में पंछियों, तितलियों के साथ खेले उन्हें दुलार दें.

ऐसा ही हुआ रोहन अब पूरी तरह से ठीक है. वह अपने आंगन के बगीचे में भरपूर खेलता है. उसकी देखभाल करता है. पक्षियों, तितलियों को प्यार से सहलाता है, और अपने दोस्तों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है.

मच्छर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



भन-भन-भन की आवाज,
सदा निकालता रहता मच्छर.
झाड़ी और नाला नाली में,
तेजी से पनपता मच्छर.

रात को झुँड में निकल कर,
गांव शहर में फैल जाते मच्छर.
घुस- घुस कर घर के अन्दर,
लोगों को सताते मच्छर.

खून के बड़े भूखे होते हैं,
खून ही बस पीते मच्छर.
मलेरिया और डेंगू का रोग,
चारों ओर फैलाते मच्छर.

रोज रात को नींद में आ कर,
सब को काट-काट कर बदन में खुजुली,
हर एक को दे जाते मच्छर.

कौआ

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



आगम जानी होता कौआ,
बहुत ही जानी होता कौआ.
दुश्मन के आने से पहले,
बहुत दूर उड़ जाता कौआ.

ना किसी से नफरत करता,
ना मन में रखता बैर कौआ.
अपने काम में हमेशा,
सदा ही मस्त रहता कौआ.

ना किसी की चुगलाई करता,
ना किसी की बुराई करता कौआ.
जो मिल जाता रूखा-सुखा,
उसे खा कर पेट भरता कौआ.

अपना काला रूप देख कर,
मन ही मन मुस्काता कौआ.
ना कोई उसे पकड़ता छेड़ता,
ना किसी को डरवाता कौआ.

कोयल के अंडे को अपना समझ कर,
उसे सेता रहता कौआ.
जब तक बच्चे बड़े न हो जाए,
तब तक पालता रहता कौआ.

पुस्तक दिवस

रचनाकार- अज्ञात



दुनिया भर का ज्ञान हमें
देता रहता है पुस्तक.
वह ज्ञानी बन जाता है
जो पढ़ता रहता है पुस्तक
पुस्तक पढ़ महान बन जाते हैं.
डाक्टर वैज्ञानिक पत्रकार लेखक
देश विदेश की सैर हमें
कराता है यह पुस्तक.
घर बैठे सारी दुनियाँ
घुमाता है यह पुस्तक.

जो पुस्तक से प्यार है करता
वह टीचर प्रोफेसर इंजिनियर बन जाता है.
उदघोष बन कर वह
सारी दुनिया में छा जाता है.

पुस्तक सदा खरीद कर रखना,
खुद पढ़ना, सबको पढ़वाना
विश्व पुस्तक दिवस पर आज
देना है यह संदेश.
जो पुस्तक प्रेमी होता
महान कहलाता है वह देश.

पुराना जुता

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



एक शहर में बरखू नाम का एक मोची रहता था. वह अपने हाथों से जुते बना कर बेचा करता था. उसके बनाए जुतों की बड़ी मांग थी. उसके बनाए जुते राजे महाराजे पहना करते थे. उसके बनाए जुतों की विदेशों में भी बहुत मांग थी. एक बार बरखू मोची के दुकान पर एक व्यक्ति आया और बोला तुम हमारे पुराने जुते ले कर एक जोड़ी नए जुते हमें दे दो. उस व्यक्ति की बात सुन कर बरखू बोला मैं पुराने जुते नहीं खरीदता हूँ. इसलिए मैं तुम्हारे जुते नहीं ले सकता हूँ.

बरखू मोची की बात सुनकर वह व्यक्ति आदर भाव से बोला मैं तुमसे जुते का एक रुपया भी नहीं लेना चाहता हूँ. मेरे कहने का मतलब यह है कि तुम मेरे पुराने जुते अपने पास रख लो और हमें एक जोड़ी नया जुता दे दो. मैं इस पुराने जुते का क्या करूंगा. बरखू मोची को उस व्यक्ति की सारी बात समझ में आ गई. उसने उसे नये जुते दे कर उसका पुरा कीमत ले कर रख लिया. वह व्यक्ति नया जुता पहन कर वहाँ से चला गया.

कुछ दिनों बाद एक दूसरा व्यक्ति आया और बरखू मोची से बोला अगर तुम्हारे पास कोई पुराना जुता हो तो हमें दे दो. उसकी जो कीमत मांगो मैं उसे देने को तैयार हूँ. बरखू मोची बोला मैं पुराने जुते नहीं बेचता हूँ. मैं तो नए जुते बेचता हूँ. अगर आप को नये जुते चाहिए तो बताइए? नहीं नहीं हमें तो पुराने जुते ही चाहिए. तुम्हारे पास पुराने जुते नहीं हैं तो मैं चलता हूँ. इतना कह कर वह व्यक्ति बरखू मोची के दुकान से जाने लगा. कुछ देर बाद एक और व्यक्ति बरखू मोची के दुकान पर पुराना जुता खरीदने आया. वह बोला अगर तुम्हारे पास कोई पुराना जुता हो तो मुझे दे दो मैं उसकी बीस हजार रुपया कीमत दूंगा. तुम पुराने जुते की कीमत बीस हजार दोगे. इतने में तो दस बीस जोड़ी नये जुते मिल जाएंगे. मैं पुराने जुतो

को बेचने का काम नहीं करता हूँ तुम जा सकते हो? बरखू की बात सुन कर वह व्यक्ति बरखू मोची के दुकान से चला गया.

उस व्यक्ति के जाने के बाद बरखू ने सोचा पुराने जुते में जरूर कोई राज की बात छुपी हुई है तभी लोग पुराने जुते खरीदने आ रहे हैं. उस दिन रात को बरखू पुराने जुते को अपने झोले में रख कर उसे घर ले कर चला आया. और जुते को गौर से देखने लगा. उसने पुराने जुते के तल्ले को हिलाया तो अन्दर से खन खन की आवाज आने लगी. बरखू ने सोचा जरूर जुते में कुछ भरा हुआ है ऐसा सोच कर बरखू ने जुते का तल्ला खोल कर देखा तो दंग रह गया. क्योंकि जुते के दोनो तल्ले में हीरे भरे हुए थे. हीरे को पा कर बरखू बहुत खुश हुआ. बरखू सारे हीरों को जूते में ज्यों का त्यों रख कर उसे अपने संदूक में रख दिया. इस बारे में बरखू ने अपने बीवी बच्चों को कुछ भी नहीं बताया.

समय गुजरता गया और एक साल बाद एक नई चमचमाती गाड़ी से पुराने जुते देने वाला व्यक्ति गाड़ी से उतर कर बरखू के पास आया और बोला तुमने मुझे पहचाना नहीं मैं वही पुराना जुता दे कर नया जुता लेने वाला व्यक्ति हूँ. अगर उस दिन तुमने हमारे पुराने जुते नहीं लिए होते तो आज मैं जिन्दा तुम्हारे सामने नहीं होता. जुते के तल्ले में हल्ला हो जाए. मुझे पता है जुते के तल्ले में हीरे भरे हैं. मुझे मुफ्त की दौलत नहीं चाहिए. उन्ही दिनों हमारी दुकान पर दो विदेशी व्यक्ति बारी-बारी से आए और हमसे पुराने जुते मांगने लगे एक को तो ना कह कर हटा दिया. मगर दूसरा जब पुराने जुते का बीस हजार रूपया देने लगा तो जुते का राज हमें मालूम हो गया. उसे भी वापस भेज दिया.

बरखू की बात सुन कर वह व्यक्ति बोला मैं दिया हुआ चीज किसी से वापस नहीं लेता हूँ. इसलिए जुता और हीरा तुम्हारा है. मैं शहर चलता हूँ कल सुबह दस बजे तुम तैयार रहना मैं तुम्हें लेने आउंगा. इतना कह कर वह व्यक्ति अपनी चमचमाती गाड़ी से वापस लौट गया. बरखू के भाग्य पलट गए वह गरीब से करोड़ पति बन गया. मैनेजर की कुर्सी पाते ही बरखू ने सबसे पहले जुता फैक्ट्री को नाम दिया विशाल शू कम्पनी. यह नाम उसके मालिक को खूब पसंद आया. कुछ ही दिनों में विशाल शू कम्पनी का नाम सारी दुनियां में मशहूर हो गया. बरखू का पुरा परिवार लंदन में आ कर बस गया. बरखू के भाग्य बदलते रहें.

एक दिन विशाल शू कम्पनी के मालिक ने कहा बरखू आज से तुम मेरी विशाल शू कम्पनी के मालिक बन गए हो. मैंने दुनिया की सारी फैक्ट्रियाँ तुम्हारे नाम कर दी है. यह स्टैम्प पेपर पकड़ो. कल मैं अपनी बीवी के साथ अमेरिका चला जाउंगा. इतनी बड़ी फैक्ट्री का मालिक बन कर बरखू खुशी से फूला नहीं समाया. बरखू को पता था उसके मालिक की कोई औलाद नहीं

थी. उसके मालिक बरखू को बेटे की तरह मानते थे. बरखू की ईमानदारी पर उसके मालिक हमेशा खुश रहते थे. बरखू की मेहनत से उसके मालिक के पास इतनी दौलत जमा हो गई कि उसे बरखू के अलावा किसी और को नहीं देना चाहते थे. नाते रिश्तेदार भाई बन्धू किसी को उन्होंने कुछ नहीं दिया. उन्होंने बरखू को अपना बेटा बना कर सारी दौलत उसके हवाले कर दी. बरखू को उसकी ईमानदारी और सेवा का ऐसा फल मिलेगा उसने कभी सोचा नहीं था.

मेरे मन को

रचनाकार- सीमा यादव



हे विभो, मेरे मन को सरल सरस, सुमधुर, शुचिता व शुभता से युक्त बना देना.

हे आनंदकन्द, मेरे मन को निष्पाप, कामनारहित व मदमोह से विरक्त बना देना.

हे राजीवलोचन, मेरे मन को आसक्तिरहित, मानरहित व निर्भरा भक्ति से परिपूर्ण बना देना.

हे मधुसूदन, मेरे मन को आशारहित, गुणरहित व दर्परहित बना देना.

हे दीनदयालु प्रभो, मेरे मन को उदासीन, कपटरहित व हिंसारहित बना देना.

हे हिमराशि के स्वामी, मेरे मन को परुष वचन से रहित कर निष्काम भक्ति देकर विकार रहित बना देना.

हे रमाकांत, मेरे मन की सारी कामनाओं का शमन कर मुझे अपने चरणरज की धूल बना देना.

हे लक्ष्मीपति, हे श्री हरि, हे भगवन, मुझ पर अपनी कृपादृष्टि करके मेरे जीवन को संसारसागर से बेड़ा पार करा देना.

हे जगदीश्वर, मेरे मन को विषय रहित, अनासक्त व पवित्रता से परिपूर्ण करके स्थितप्रज्ञ बना देना.

महादेव

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी



कर्ता-धर्ता जग के, महादेव जगदीश.
कंठ नाग शोभित, जगत नवार्ये शीश.
जग पुकारत, हरो जग की कष्ट सारी.
हे महादेव, तुम तो जग के पालन कारी.
हे गणपति के तात, भोलेनाथ कष्टहर्ता.
तुम्हें वंदन बारम्बार, हे जग पालन कर्ता.

मेरी बगिया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मैं शौकीन पेड़-पौधों का,
छत पर करता हूँ बागवानी.

रंग-बिरंगे सारे गमले,
सजते मौसम के अनुकूल.
पौध नर्सरी से लाता हूँ,
सुंदर लगते जब खिले फूल.

खिलती चंपा, लिली, चमेली,
गेंदा, गुड़हल, रात की रानी.

देख-रेख करता पौधों की,
देता हूँ कार्बनिक खाद.
अति जाड़ा-गर्मी होने पर.
गमले ढकना रखता याद,

समय-समय पर करूँ गुड़ाई.
आवश्यकता भर देता पानी

छोटी-सी बगिया है मेरी.
मुझको देती खुशी अपार,
फल-फूलों से लदते पौधे.
हरियाली की अजब बहार,

वातावरण बनाओ मोहक,
देती सीख हमें हैं नानी.

चिड़ियाँ करतीं रहतीं चीं-चीं,
खूब तितलियाँ-भौरे आते.
पूजा के हित माता प्रतिदिन,
चुनतीं फूल, उन्हें जो भाते.

दूर-दूर जाती सुगंध है,
सबको बगिया लगे सुहानी.

बहन का स्नेह

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली



अनन्या और आस्था दो बहनें हैं. अनन्या बड़ी है जो छठी कक्षा में पढ़ती है दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं लेकिन आस्था प्रतिदिन अपनी माँ से बड़ी बहन को डाँट खिलवा देती है. अनन्या को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे वैसे तो वह अपनी छोटी बहन से बहुत प्यार करती है लेकिन रोज-रोज की डाँट से उसके मन में आस्था के प्रति चिड़चिड़ाहट पैदा हो गई. प्रतिदिन आस्था कोई ना कोई शिकायत करती रहती और माँ से फटकार दिलवाती रहती. कभी बाल खींचती तो कभी खिलौने तोड़ती. अनन्या कुछ न कह पाती. कई दिनों तक ऐसा ही चलता रहा.

अनन्या का जन्मदिन निकट आ पहुँचा वह बहुत खुश थी क्योंकि उसके माता पिता ने उसका जन्मदिन धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया था जन्मदिन आया और धूमधाम से मनाया गया. केक काटा गया. उत्सव के बाद अतिथि धीरे धीरे जाने लगे. जब सब लोग चले गए तो आस्था अपनी बहन के पास आकर स्नेह भरे शब्दों में बोली, जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई दीदी, यह लो आप का उपहार जो मैंने अपने जेब खर्च के पैसे बचाकर खरीदा है अनन्या ने पैकेट खोला तो उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा उसके अंदर मोतियों का एक सुंदर हार था. अपनी छोटी बहन का अपने प्रति प्यार देखकर वह खुशी से झूम उठी अचानक उसके मुख से निकला मेरी बहन कितनी भोली है. कितनी प्यारी है. मेरी अच्छी बहन.

सुंदर और सजीला आम

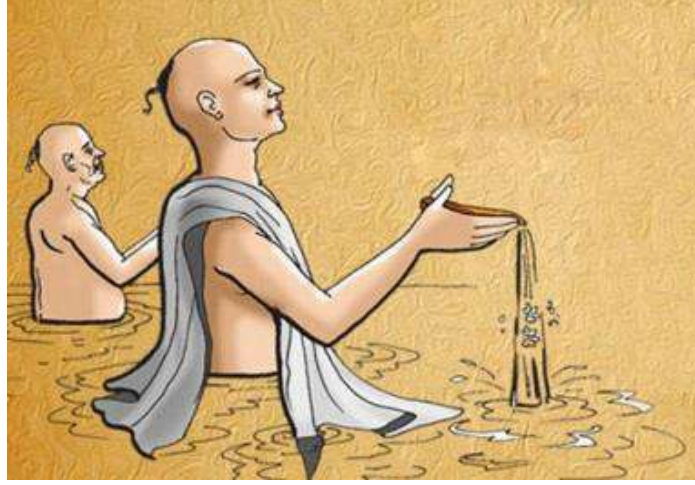
रचनाकार- श्वेता तिवारी



सुंदर और सजीला आम
हम सबको है भाता आम,
बागों में मुस्काते आम.
हम सबका हैं मन हरते आम,
मीठी-मीठी महक बिखरे.
पेड़ों पर लटके हैं आम,
आओ बच्चों जल्दी आओ.
हम बुलाते हैं सबको आज ,
इसमें विटामिन ए है भरे.
सेहद सबकी इससे निखरे,
स्वादिष्ट गुणकारी खाए आम.
लू को दूर भगाए आम,
पना पीए हम सब मिलकर.
खाएँ आम सभी मन भर कर.

पितृगण

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



बारंबार करती हूँ,
पितृगण आपका अभिनंदन
कितनी अनूठी है अपनी हिंदू संस्कृति,
धर्म यह सनातन.
जहां हर धर्म, कर्म का बड़ा गहरा है,
मर्म हे पितृगण.
बारंबार करती हूँ.

श्रद्धा से तर्पण हेतु आप सभी,
पितृ गणों का करती हूँ आह्वान.
दीजिए आशीष बना पाए,
आपकी वंश बेली को महान.
बारंबार करती हूँ.

स्वागत की इस बेला में,
थाली में सजाया है, जौ, तिल, चंदन.
विनम्र भाव से आप सब को यह अर्पण, करने हैं, हे मेरे पितृगण.
बारंबार करती हूँ.

हे मेरे पितृगणों आप सबका,
मैं करती हूँ वंदन.
श्रद्धा भाव से आप सबको अर्पित, जौ, तिल, कुश दूब, चंदन.
बारंबार करती हूँ.

पितृपक्ष के यह पंद्रह दिवस,
होते हैं बड़े पावन.
जब आशीषों की गठरी बांध,
घर आते हैं हमारे पित्रगण.
बारंबार करती हूँ.

आपसे मिला हमें आस्था,
प्रेम, शिक्षा, धर्म-कर्म और जीवन.
सदा ही कम पड़ जाते शब्द मेरे,
आपके आभार व्यक्त हेतु है पितृगण.
बारंबार करती हूँ.

पितरों की आत्मशांति और तृप्ति हेतु, करते हैं हम तर्पण.
हे पित्रगणों स्वीकार करें,
अर्पण- तर्पण के यह श्रद्धा सुमन.
बारंबार करती हूँ.

हमारे लिए देव तुल्य हैं,
आप सभी हे हमारे पितृगण.
कामना बस यही हमारी,
हमें मिले सदा ही आपके मंगल आशीर्वचन
बारंबार करती हूँ.

चिड़िया

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



आसमान में उड़ती चिड़िया,
लगती सुन्दर प्यारी चिड़िया.
पेड़ों की डाली में चिड़िया,
अपना घर बनाती चिड़िया.

बच्चों को घर में छोड़ चिड़िया,
दाना चुगने जाती चिड़िया.
घर आंगन में जाकर चिड़िया,
चू-चू गीत सुनाती चिड़िया.

कुश बेटा जब दाना देता,
दाना चुग उड़ जाती चिड़िया.
लगी प्यास तब आती चिड़िया,
पानी पी उड़ जाती चिड़िया.

दिनभर मेहनत करती चिड़िया,
ना थकती, ना रुकती चिड़िया.
देख आसमां सूरज ढलता,
घर को लौट जाती चिड़िया.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव



1. तम को दूर भगाने वाला,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
प्रथम हटे तो "पक" बन जाता,
नाम बताओ भोलू राम.

2. ऐसा त्योहार अनोखा बच्चों,
जग रोशन कर देता.
चहुंदिश चलती फुलझड़ियाँ,
तुम से कुछ न लेता.

3. तीन अक्षर का मेरा नाम,
हर त्योहार में मुझको खाओ.
प्रथम अक्षर "म" है मेरा,
झटपट मेरा नाम बताओ.

4. तम को दूर भगाने वाली,
दीपक मुझको समझ न लेना.
प्रथम अक्षर "झ" मेरा,
नाम मेरा बच्चों अब कहना.

5. धूम-धड़ाका खूब करूँ मैं,
तीन अक्षर का मेरा नाम.
अंतिम अक्षर 'ख' है मेरा,
नाम बताओ भोलूराम.

उत्तर- 1. दीपक, 2. दीपावली, 3. मिठाई, 4. झालर, 5. पटाखा

आओ ज्ञान का दीप जलाएं

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न



आओ ज्ञान का दीप जलाएं,
आओ ज्ञान का दीप जलाएं,
अज्ञानता को दूर भगाएं.
अक्षर- अक्षर को जोड़कर,
शब्दों का संसार बनाएं.
आओ ज्ञान का दीप जलाएं.

आड़ी-तिरछी रेखा बनाएं,
छोटी-बड़ी बिंदुओं को मिलाएं.
करके इसमें कोई चित्रकारी,
लाल -पीले रंगों से सजाएं.
आओ ज्ञान का दीप जलाएं.

एक-एक अंक को जोड़ते जाएं,
नई-नई संख्या बनाते जाएं.
घटाते जाएं, बढ़ाते जाएं,
गणित के गुर को सीखते जाएं.
आओ ज्ञान का दीप जलाएं.

दिन को जानें, महीने को जानें,
प्रकृति व आकृति को समझते जाएं.
मातृ-भाषा के साथ-साथ मैं,
हिंदी,अंग्रेजी भी सीखते जाएं.
आओ ज्ञान का दीप जलाएं.

तितली रानी

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



तितली रानी तितली रानी,
बहुत भली तुम लगती हो.
सुबह-शाम उड़ती रहती,
कब सोती कब जगती हो.

रंग-बिरंगे रूप तुम्हारे,
सबका मन लुभाती हो.
छूने जो तुम्हें हाथ बढ़ाओ,
शरमाकर उड़ जाती हो.

फूलों का रस चूस-चूसकर,
मनुहर काया बनाई हो.
फूलों संग अंतर्मन में,
सबके तुम ही समाई हो.

फूल पराग तुम्हें भातें,
सबका मन तुम हर्षाते.
घर द्वारे आँगन आते,
बच्चों को तुम खूब लुभाते.

इस डाली से उस डाली,
पूरी बगिया घूमकर आई हो.
आसमान के इंद्रधनुष जैसे,
अनगिन रंगों से नहाई हो.

तितली तुम हो सबको प्यारी,
लगती हो तुम न्यारी - न्यारी.
उड़ती रहती क्यारी - क्यारी,
तुम लगती बगिया की रानी.

बचपन

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



फूलों सा महकता बचपन,
तारों सा चमकता बचपन.
इठलाता हँसता हुआ बचपन,
प्यारी हँसी खिलखिलाता बचपन.

सहगामी संग हँसी ठिठोली,
कितने रंग दिखाता बचपन.
कभी रुठना कभी मनाना,
सच्ची यारी निभाता बचपन.

चाँद तारे जमीं लाते बचपन,
मन को बहुत लुभाते बचपन.
बचपन कितनी प्यारी होती,
रंग बिरंगी सतरंगी बचपन.

विहंगों सा चहकता बचपन,
बासुंंदी सा रसीला बचपन.
आँगन गूँजे किलकारी बचपन,
भोलापन सबका निराला बचपन.

हे नवदुर्गे माँ

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



आ गई नवरात्रि की पावन बेला,
घर मेरे तुम भी आ जाओ माँ.
करूँ मैं आपका सुबह शाम वंदन,
दरस हमें भी अपना कराओ माँ.

कष्टों और विघ्नों से घिरा है ये जीवन,
हे अम्बे, हे जगदम्बे, हे गौरी माँ.
साक्षात् शक्ति और भक्ति का रूप,
तुम हो, हे जगतजननी जगदम्बे माँ.

पुनः धरा असुरों से भर गई है हे माँ,
पुनः असुरों का मर्दन करो हे माँ.
दो शक्ति हमें हे शक्तिदायनी हे माँ,
हे सरस्वती, दुर्गा, हे ब्रम्हाचारिणी माँ.

जगतजननी तुम जगत की आधार हों,
करुणा, दया, प्रेम का तुम ही प्रकार हों.
तेरे दरबार में खड़े हैं सब हे भवानी,
नित हाथ जोड़े सुर, नर, मुनि, ज्ञानी.

सबको खुशियाँ दीजिये माता अपार,
जीवन सबका हों जाये बसंत बहार.
शेर पे सवार होकर आओ फिर माता,
तेरी भक्ति मिले जिसे, भवसागर तर जाता.

नारी जाति का अस्तित्व

रचनाकार- सीमा यादव



कहते हैं किसी स्त्री में तब तक सम्पूर्णता नहीं आती है, जब तक कि वह माँ नहीं बन जाती है. माँ होने का गौरव अपने आप में ईश्वर और प्रकृति का अनुपम उपहार है. जो कि हर किसी के भाग्य में नहीं होता. स्त्री होकर किसी संतति को जन्म न दे पाना उनकी वंध्यता होने की पहचान है. उनके स्त्रीत्व पर अनेकानेक प्रश्नवाचक चिन्ह लग जाते हैं. इस दारुण दुःख को उस स्त्री से ज्यादा भला कौन बता सकता है. जो कि पति के साथ होते हुए भी इस असहनीय दर्दनाक पीड़ा की अनुभूति को प्रतिपल सहन करती है. ऐसी स्त्री को समाज का एक तबका क्या, समाज, रिश्ते से जुड़े स्वयं सभी स्त्रियाँ ही हेय नजरों से देखती हैं. आखिर क्यों? क्या स्त्री में बच्चा ही पूर्णता लाता है. क्या संतान पैदा करेगी तभी वह स्त्री जाति की गिनती में होगी यह बहुत ही दुःखदायी प्रतिक्रिया है उस स्त्री के लिए जिनके अस्तित्व को उनकी माँ बनने या न बन पाने की स्थिति से आँकलन किया जाता है.

स्त्री किसी संतति को अपने गर्भ से जन्म दे या न दें. इस बात से स्त्री की ममता की हत्या नहीं होनी चाहिए. एक स्त्री में ममत्व होता ही है. क्योंकि बच्चा पैदा करने का उनके मूल स्वभाव से क्या कोई सरोकार है? नहीं!बिल्कुल नहीं!आपने विशेष परिस्थिति में कभी न कभी एक स्त्री के कोमल स्वभाव के बारे में महसूस किया होगा कि वह चाहे किसी भी भूमिका में हो, किन्तु उसके भीतर की ममता जाग ही जाती है. वो एक बेटी की भूमिका में होगी तो भी अपने पिता को माँ सी ममता देती है. एक पत्नी अपने पति की परवाह माँ की जैसी ही करती है. इसी प्रकार और भी कई बातों या हालातों में घर की स्त्रियाँ या बेटियाँ माँ जैसा ही व्यवहार करती हैं. फिर प्रश्न यह उठता है कि केवल एक कमी के कारण उनके सम्पूर्ण वजूद या अस्तित्व पर कलंक क्यों लगा दिया जाता है? क्या उनका वजूद सिर्फ इसी से होता है कि वह

एक बच्चे की माँ हो जाय? या फिर किसी लड़का या लड़की को चाहे जिस किसी भी तरीके से अपने शरीर से ही उत्पन्न करें? ऐसा तो किसी भी शास्त्र में नहीं लिखा है कि एक स्त्री में ममता तब तक नहीं होती है, जब तक कि वह स्वयं किसी बच्चे की माँ नहीं बन जाती है.

स्त्रियां स्वभाव से ही सरल, कोमल एवं निश्छल चरित्र वाली होती हैं. इतिहास में भले ही कई स्त्रियों का नाम उनकी निर्ममता, क्रूरता एवं ईर्ष्या स्वभाव के कारण कलंकित हुआ है. और उनमें ये दुर्गुण इसलिये भी उपजा होगा कि कहीं-न-कहीं उनको स्त्रीत्व के प्रति घृणा परिलक्षित हुई होगी. या और भी बहुत सी वजह हो सकती हैं. जिसके कारण कुछ क्षण के लिए उनके अन्तःकरण से ममत्व जड़ मूल विलुप्त हो गया होगा. क्योंकि स्त्री प्रेम, दया, करुणा, सहानुभूति इत्यादि गुणों की खान होती हैं. उनमें केवल सद्गुण ही सद्गुण होते हैं और अपनी इन्हीं गुणों के कारण स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होने का महान् पद से विभूषित हैं. माँ धरती और जननी को वेद, पुराणों एवं शास्त्रों में विद्वानों के द्वारा स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बतलाया गया है. उनकी सहनशीलता ही उनके स्त्री होने की परिचायक है. स्त्री स्वयं में अद्भुत शक्ति लेकर पैदा होती हैं और इस निर्मम संसार में तरह-तरह की यातनाएँ झेलकर स्वयं को मिटा बैठती हैं. वे इस निर्मोही संसार से मुक्ति पाकर ईश्वर में तल्लीन होकर भगवद्भक्ति में विलीन हो लेना चाहती हैं. किन्तु पुरुषवादी समाज के भेदभावपूर्ण व्यवहार ने उन्हें कहीं का भी नहीं छोड़ा है. तपती अग्नि में परीक्षा ही जैसे उनकी योग्यता को परखने का मुख्य माध्यम है. एक स्त्री को आजीवन बार-बार अग्नि परीक्षा का भीषण सामना करना पड़ता है. इसी से वह खरा सोना सिद्ध होती हैं. नहीं तो उनकी कीमत एक छोटे सिक्के से भी बदतर हो जाती है. यही सच्चाई है. जो एक स्त्री को जीवन भर असहनीय दारुण व वेदनाओं में बंधकर जीना पड़ता है. कभी स्वयं के लिए, तो कभी औरों के लिए.

दीवाली आई

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



दीवाली आई, दीवाली आई.
मन लुभाती दीवाली आई.

कार्तिक मास की सौगात.
अमावस की श्यामल रात.
ठंडी हवा बही सुखदाई.
दीवाली आई, दीवाली आई.

स्वच्छ सुंदर नील गगन.
बाँहें फैलाये धरा मगन.
चहुँ ओर हरियाली छाई.
दीवाली आई, दीवाली आई.

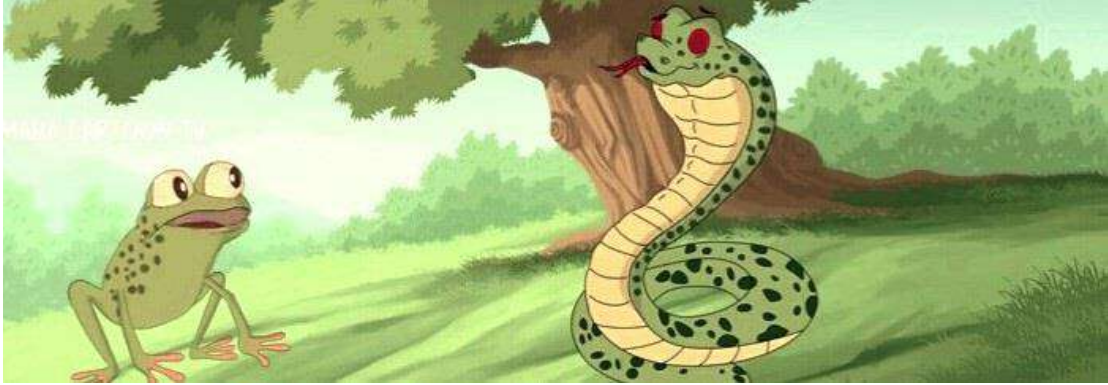
घर-आँगन साफ सुथरा.
गाँव-गली उजला उजला.
सबको रौनकता भाई.
दीवाली आई, दीवाली आई.

सबके घर बनी मिठाई.
सबने थाली भर-भर खाई.
हर जगह खुशियाँ छाई.
दीवाली आई, दीवाली आई.

राकेट, अनार, बम फटाका.
बहुत हुआ धूम-धड़ाका.
बच्चों ने फूलझड़ी चलाई.
दीवाली आई, दीवाली आई.

मेंढक और साँप

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



मेंढक देख साँप राजा,
बोले तुमको खा जाऊँगा.
मेंढक हँस-हँसकर बोला,
मुँह तुम्हारे ना आऊँगा.

साँप सुन,मेंढक की बोली,
करने लगी हँसी ठिठोली.
सरपट दौड़ लगाऊँगा,
मैं तुमको खा जाऊँगा.

मेंढक बोले सुन ओ लल्लू,
तू मुझको क्या खाएगा?
ऐसी दौड़ लगाऊँगा मैं,
तू पीछे ही रह जायेगा.

बचना है तो दौड़ लगाओ,
मैं सरपट पीछे आऊँगा.
कितनी ही फुर्ती से भागो,
पकड़ तुमको खा जाऊँगा.

गुड़िया रानी

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



प्यारी-प्यारी गुड़िया रानी.
मम्मी-पापा की राजदुलारी.

गूँजे घर-आँगन किलकारी.
तुम घर-आँगन की फुलवारी.

आँखें तेरी हैं जुगनू जैसी.
नटखट, चंचल परी हो मेरी.

प्यारी मुस्कान सूरत भोली.
लगती हो मिश्री की गोली.

फ्रॉक है तुम्हारी रंग-बिरंगी.
मानो हो इंद्रधनुष सतरंगी.

सर पे टोपी पहने गुड़िया.
लगती है सोने की चिड़िया.

जूती तुम्हारी बहुत ही प्यारी.
इनकी चहक चिड़ियों सी न्यारी.

आकर्षक खिलौने

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



अध्यापक ठाकुर जी कक्षा सातवीं में आए. बोले- "बच्चों, कल से दशहरे की छुट्टी हो रही है पाँच दिनों के लिए; यानी शुक्रवार तक. बच्चे खुश हो गए. ठाकुर जी फिर बोले- "दशहरे की छुट्टी का आनंद लेने के साथ तुम सबको एक गृहकार्य भी करना है; और उसे कम्प्लीट करके जब स्कूल आओगे तब लाना है.

"क्या करना है सर जी गृहकार्य में; और जिसे स्कूल भी लायेंगे?" बच्चे एक स्वर में बोले.

"सबको खिलौना बनाकर लाना है; चाहे वह मिट्टी का हो, लकड़ी का हो या चाहे फूल, पत्ते, पत्थर का हो; पर स्वयं का बनाया हुआ होना चाहिए. ध्यान रहे, सुंदर हो, मजबूत हो और आकर्षक भी हो. स्कूल आने के दिन उसे अनिवार्य रूप से लाना ही है." ठाकुर जी ने कहा. बच्चों ने हाँ में सर हिलाया. फिर छुट्टी हो गयी.

दशहरे की छुट्टी खत्म हुई. बच्चे खुद के बनाये हुए खिलौने लेकर स्कूल आए. सबने बरामदे पर खिलौनों को रखा. अध्यापक ठाकुर जी ने सभी बच्चों से कहा कि तुम सब बारी-बारी अपने-अपने खिलौने के बारे में बताते जाओ."

"सर जी, यह एक कार है. इसके सभी कल-पुर्जे बहुत मँहगे हैं. इन सबको मैंने स्वयं खरीद कर बनाया है. बहुत खर्च करना पड़ा, तब यह इतना अच्छा बन पाया." नीतिश ने सबसे पहले अपना खिलौना दिखाया.

फिर राघव बोला- "यह एक डबलस्टोरी बिल्डिंग है सर जी. इसकी डेंटिंग-पेंटिंग मैंने खुद की है." राघव की आवाज में बड़ा दम था.

महेंद्र की बारी आई. उसने भी अपने खिलौने का मुस्कुराते हुए परिचय दिया- "सर जी, देखिए न... मैं स्वयं हूँ. मैंने स्वयं को एक खिलौने का आकार दिया है. इसके लिए मैंने अपनी मम्मी से पैसा लिया है. मेहनत तो कम की है मैंने, पर पैसा बहुत लगाया है सर. क्यों, मैं अच्छा लग रहा हूँ न सर?"

"यह एक एंड्राइड मोबाइल फोन है सर जी. गीतिका सबको अपना खिलौना दिखाते हुए बोली- "लग रहा है ना सर बहुत बढ़िया?"

इस तरह बच्चों ने अपने-अपने खिलौने का प्रदर्शन किया. अब सबकी नजर नीरज पर टिकी. वह चुपचाप से सकुचाया हुआ बैठा था. अपनी बारी आने पर भी वह खिलौना नहीं दिखा रहा था. कहने लगा- "मेरा खिलौना तो इन खिलौनों के सामने कुछ नहीं है सर जी, मैं क्या दिखाऊँ?"

"अरे नीरज, तुम जो भी बना कर लाए हो; दिखाओ." अध्यापक नीरज की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले.

"सर जी मेरे मम्मी पापा तो चंद्रपुर कमाने खाने गए हैं. घर में मैं, दादी और मेरी छोटी बहन रहते हैं. हमारे घर पैसा वैसा नहीं है सर." नीरज अपने खिलौने वाले थैले को पीछे छुपाने लगा.

"क्या है उसमें जी, हम लोग भी देखेंगे." ठाकुर जी ने बड़े प्यार से नीरज के सर पर हाथ रखा.

"अंत में नीरज ने अपना खिलौना सबके सामने टेबल पर रख दिया. खिलौनों को देखकर अध्यापक ठाकुर जी गदगद हो गए. बच्चे भी बड़ी अचरज भरी नजरों से एक-दूसरे को देखते हुए नीरज के खिलौनों को निहार रहे थे- ढेर सारे मिट्टी के सुंदर छोटे-छोटे व विभिन्न आकृतियों के दीये थे. तभी अध्यापक ठाकुर जी मुस्कुराते हुए बोले- "वाह, बहुत सुंदर-सुंदर दीये बनाये हैं तुमने. यह सबसे बड़ा व सुंदर दीया किसलिए, नीरज?"

नीरज ने कहा- "सर जी, इसे मैं दीपावली की रात को अपने स्कूल के मुख्य द्वार पर जलाऊँगा.

सभी बच्चों की नजर सिर्फ नीरज की दीये पर थी.

दीपावली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



जगमग दीपावली आ गयी,
झिलमिल दीपों की है माला.
तम से जीत गया उजियाला,
मन में नई उमंग छा गयी.
चहल-पहल है, धूम-धड़ाका,
तड़-तड़, भड़-भड़ दगें पटाखा.
मावस नवल प्रकाश पा गयी,
प्रेम से दो उपहार-बधाई.
शेष न मन में रहे बुराई,
मुझको भाई-दूज भा गयी.
जगमग दीपावली आ गयी.

काँटन कैँडी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



काँटन कैँडी नाम कमाल,
रंग-स्वाद में नहीं मिसाल.

कितनी आकर्षक दिखने में,
मीठी-मीठी है चखने में.
मुँह में जाते ही घुल जाए,
रुई-सी हल्की, भरे उछाल.

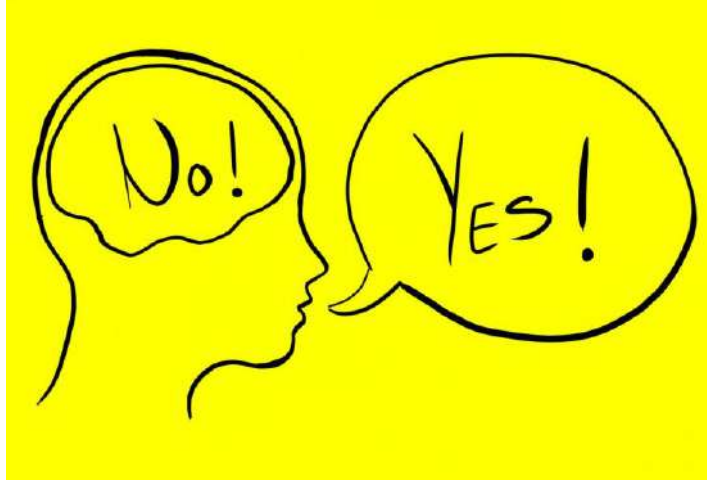
नाममात्र है इसका भार,
बच्चे इसको करते प्यार.
'गुड़िया के बाल', 'हवा मिठाई',
या कह दो 'बुढ़िया के बाल'.

रंग हरा, गुलाबी, नीला,
कहीं बैंगनी अधिक सजीला.
खट्टा आम या अदरक फलेवर,
मन करता खाएँ तत्काल.

लगेँ पार्टियों में स्टॉल,
मेलों में हो धूम धमाल.
हर कोई खाने को लपके,
महिला, पुरुष, वृद्ध और बाल.

झूठ - फरेब की दुनिया

रचनाकार- पूर्णिमा देशमुख



झूठ-फरेब की इस दुनिया में,
सच्चा दिल ही रोया यहाँ पे.
कैसी-कैसी साजिश रचते,
परिणामों से भी नहीं है डरते.
सच का नहीं है मोल जहाँ में.

जिसको भी समझा था अपना,
उसने ही ठुकराया है.
देख लिया है अपनों को भी,
देख लिया परायों को भी.
झूठे मुखौटे में हरदम हैं.

झूठ-फरेब की इस दुनिया में,
सच्चा दिल ही रोया यहाँ पे.

झूठ कहोगे इंसानों से,
ईश्वर से सच कहाँ छुपा है.
आज नहीं तो कल मिलेगा,
आखिर कब तक बचा रहेगा.
कर्मों का परिणाम अटल है.

बचपन से सुना था हमने,
किस्से, कहानी, किताबों से भी.
बार्ते यही जानी थी हमने,
कलयुग का तो यही विधान है.
कर्म ही होता प्रधान है.

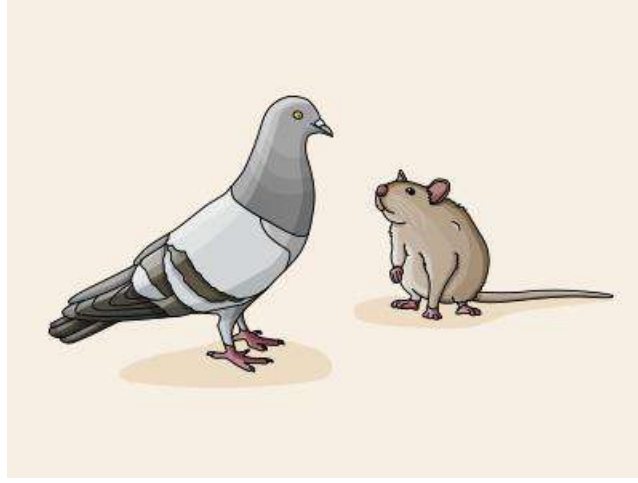
झूठ-फरेब की इस दुनिया में,
सच्चा दिल ही रोया यहाँ पे.
जैसी करनी करते हैं,
वैसा ही फल पाते हैं.
एक बीज लगाकर भी यहाँ,
हजारों फल बदले में पाते.
क्यों पाप करके फिर दुनिया,
नियति का नियम है भुलाती.

आह निकलती है जब दिल से,
पूछता यह दिल ही दिल से.
क्या छुपाऊँ क्या करूँ बयान,
दर्द और सच्चाई जहाँ में.
झूठ के बोझ से दबे पड़े हैं.

झूठ-फरेब की इस दुनिया में
सच्चा दिल ही रोया यहाँ पे.

चूहा और कबूतर

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



सुन्दर वन नामक जंगल में चूहा और चुहिया अपने तीन बच्चों के साथ एक बिल में रहती थी. भूख लगने पर भोजन की तलाश में बिल से बाहर आते और फल-फूल को खाकर अपना पेट भरते.

इस तरह से चूहे का जीवन चल रहा था. एक दिन चूहिए ने चूहा से बोली बहुत दिन हो गए हैं इसी बिल में रहते चलो कहीं दूर घूमने को चलते हैं. चूहा चुहिया कि बात से सहमत हो जाता है. और सपरिवार घूमने को निकल जाते हैं.

घूमते-घूमते चूहे एक ऐसे पहाड़ पर चले जाते हैं जहाँ दूर-दूर तक खाने पीने का कुछ नजर नहीं आता. भूख प्यास से सभी कि हालात खस्त होने लगती हैं.

तभी आसमान में उड़ते हुए कबूतर का झुंड नजर आता हैं. जो अपने चोंच में दाना लिए जा रहा था. चूहे की आवाज सून सभी कबूतर उनके पास आ जाते हैं.! और अपना चुगे हुए दाना चूहों को दे देता है. साथ ही दाना, पानी वाले जगह का पता भी बताता हैं.

चूहा कबूतरों का शुक्रिया अदा करता है और दाना, पानी वाले उस जगह पर जाकर अपने और अपने परिवार कि जान बचाता हैं. और वही पास में बिल बनाकर रहने लगता है.

कबूतर अपने झुंड में सुबह दाना चुगने के लिए आता और दिन भर दाना चुगकर शाम को घर वापस लौट आता.

एक दिन शिकारी की नजर दाना चुग रहे कबूतर पर पड़ती है. शिकारी कबूतर को अपने जाल में फसाने के लिए दाना, पानी वाले जगह पर जाल बिछा कर चल देता है.

हर रोज की तरह कबूतर अपने झुंड में दाना चुगने के लिए जैसे ही दाना, पानी वाले जगह पर बैठता है शिकारी के जाल में फंस जाता है और जाल से बाहर निकलने के लिए चहकने लगती हैं.

कबूतर के चहकने की आवाज सुन चूहे कबूतर के पास आता है तो देखते हैं की कबूतर जाल में फंसा हैं.

चूहा मुसीबतों की इस घड़ी में बिन देर किए शिकारी के आने से पहले ही जाल को कुतरकर कबूतरों को जाल से बाहर निकालता है. इस तरह चूहा कबूतर की जान बचाता है.

इसलिए कहा जाता है कि मदद करने से ही मदद मिलती हैं.

शेरावाली

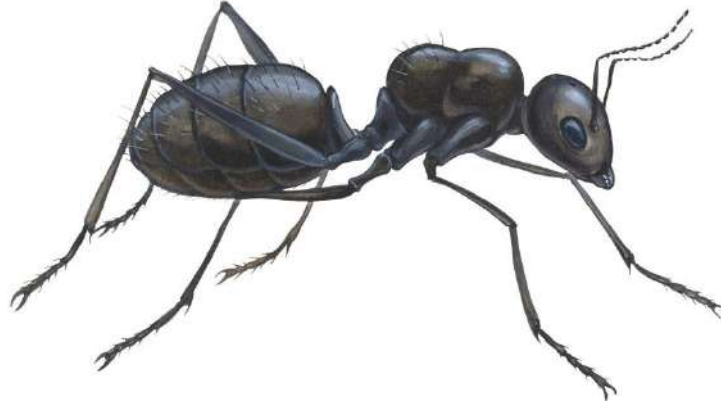
रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



शेरावाली माता आयी,
घर-घर में खुशियाँ बिखरायी.
माँ अम्बे का रूप भयंकर,
राक्षस दानव काँपे थर-थर.
एक हाथ में खप्पर पकड़े,
पापी राक्षस को वो जकड़े.
देख क्रोध में सिंह दहाड़े,
महिषासुर के मुख को फाड़े.
अत्याचार मिटाने वाली,
आयी है माँ दुर्गा काली.
काली रूप देख सब भागे,
नव दिन तक सब सेवक जागे.
लाली-लाली चुनर चढ़ाओ,
शेरावाली सभी जगाओ.
करो आरती धूप जलाओ,
मनवांछित फल तुम भी पाओ.

चिंटी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



चिंटी हरदम मेहनत करती,
अपनी धुन में चलती रहती.

क्रम से जाती क्रम से आती,
अनुशासन का पाठ पढ़ाती.

चिंटी दिन रात सबको बताती,
कोशिश करना हमें सिखाती.

राहें अपनी खुद वों गढ़ती,
लक्ष्य मार्ग पर आगे बढ़ती.

गिरकर उठती उठकर चलती,
बाधाओं से कभी ना डरती.

रगों में चिंटी साहस भरती,
मुश्किलो से डटकर लड़ती.

हार कर भी कोशिश करती,
लक्ष्य अपनी प्राप्त करती.

यादें मेरे गाँव के

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



यादें मेरे गाँव के आने लगे हैं,
मिट्टी मेरेगाँव के बुलाने लगे है.
बचपन की यादें, बसी हैं गाँव में,
खेले हैं खेल बरगद की छाँव में

यादें मेरे गाँव के आने लगे है.

पहली बारिश में जमकर नहाना,
घर की छत से पतंग को उड़ाना.
नदी नहर मेंडुबकियाँ लगाना,
कागज की नाव पानी में बहाना.

यादें मेरे गाँव के आने लगे है.

रेत में अपना आशियाना बनाना,
कीचड़ में मस्ती से खेल खेलना.
हाथों से मिट्टी के खिलौने बनाना,
बरगद के बरोह में झूला झूलना.

यादें मेरे गाँव के आने लगे हैं.

पेड़ पौधों में पक्षियों का चहकना,
घर आंगन में तुलसी का महकना.
गर्मी में घर के आँगन में सोना,
ठण्ड के दिनों में अलाव जलाना.

यादें मेरे गाँव के आने लगे हैं.

पापा के सपने

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



संजय घर में खेल रहा था. तभी उनकी नजर दीवाल में चित्र बना रहे पापा पर पड़ती है. संजय नजदीक आकर बैठ जाता है और पापा को चित्र बनाते हुए गौर से देखने लगता है.

संजय के पापा पेशे से पेंटर है और उनका सपना है की बेटा डॉक्टर बने. पर संजय पढ़ाई में कमजोर था. पढ़ने में उनका मन नहीं लगता था. पढ़ाई को लेकर संजय के पापा संजय को बहुत डाट लगाते.

डाट के वजह से ही संजय हर रोज स्कूल जाता और घर आकर अपने ड्राइंग बुक में पापा के बनाए गए चित्र को देखकर नकल करता.

धीरे-धीरे समय बीतने लगता है. एक दिन संजय के पापा अपने काम के सिलसिले में शहर चले गए. छुट्टी का समय होने के कारण संजय भी घर में ही था. संजय अपने पापा का पेंट ब्रश लेकर चित्र बनाने लगता है. पापा के शहर से घर आते तक संजय बहुत सारे चित्र बना लेता है.

घर में संजय के बनाए चित्र देख पापा हैरान हो जाते हैं. और पुछने लगते हैं कि ये चित्र किसने बनाये हैं ? संजय झट से बोल पड़ता है मैंने बनाया है पापा.

संजय को सबासी देते हुए पापा अपने गले लगा लेता है. धीरे-धीरे संजय बड़ा होने लगा. अब संजय अपने पापा के काम में हाथ बटाने लगता है. छुट्टी के दिनों में संजय अपने पापा के साथ पेंटिंग करने शहर भी जाया करते थे.

एक दिन संजय के पापा सोये रहते हैं तभी उनके हाथ को लकवा मार जाता है. अब वह काम करने में अक्षम हो जाता हैं. घर की पुरी जिम्मेदारी संजय पर आ जाता है.

संजय पापा के डॉक्टर बनने के सपने को छोड़ पेंटर का व्यवसाय चुन लेता है और अपने घर परिवार की जिम्मेदारी को पूरा करने लगता है. एक दिन संजय, पापा के मार्गदर्शन में बहुत बड़ा पेंटर बन जाता है. दौलत और शोहरत दोनों कमाने लगता है अब संजय के पापा संजय पर गर्व करने लगता है.

मौसम

रचनाकार- सुनीता साहू



मौसम हैं आते जाते,
सारे मौसम हमको भाते.
आसमान में काले-काले
बादल हैं छा जाते.

ऐसा हमको लगता है,
अब बारिश हो जाए.
बारिश के मौसम में,
मन सबका खो जाए.

पानी में नाव चलाएँ,
और चलाएँ फौवारा.
धीरे-धीरे ठंडी का,
मौसम आया प्यारा.

कितना मजा है आता,
पालक रोटी खाने में.
दो चार दिन बचे हुए हैं,
दिवाली को आने में.

धीरे-धीरे ठंड गई,
और गर्मी है आई.
दीदी ने आज सभी को
मीठी लस्सी पिलाई.

यूँ ही नहीं मिलती मंजिल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



यूँ ही नहीं मिलती मंजिल,
सतत है चलना पड़ता.
कोशिशें हैं करनी पड़ती,
कष्ट सहना पड़ता है.

मेहनत दिन- रात कर,
लक्ष्य के मार्ग पर,
लोगों से लड़ कर,
राहें अपनी गढ़ कर.
चलना पड़ता है.

सपने को साथ लिए,
जोश और जुनून लिए,
जीत का लक्ष्य लिए,
हार कर भी जीत के लिए.
चलना पड़ता है.

काँटों भरी इन राहों में
संघर्ष के इन मैदानों में
सुखों का त्याग कर,
लक्ष्य अपना साध कर
चलना पड़ता है.

मेरा एक घर है

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



शहर से दूर गाँव में,
बरगद की छाँव में,
घास से बना हुआ,
मिट्टी में सना हुआ,
मेरा एक घर है.

पड़ोसी मेरे अच्छे हैं,
दिल के वे सच्चे हैं,
माँ-बाप मेरे रहते हैं,
ना किसी का डर है,
मेरा एक घर है.

पक्षी की चहक है,
तुलसी की महक है,
शीतल शुद्ध हवा है,
शांत नीरव जगह है,
मेरा एक घर है.

बागों में हरियाली है,
घरों में खुशहाली है,
पहाड़ों का सेहरा है,
सूरज का पहरा है,
मेरा एक घर है.

डिबिया का रहस्य

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



रीमा हमेशा दुखी रहती थी. उसके घर में सब सुख-सुविधा थी, पर उसे शांति नहीं मिलती थी. कारण बस एक था, उसकी सासू माँ दिन भर उसे खरी खोटी सुनाती रहती थी. रीमा भी कैसे चुप रहती भला. इस तरह घर का माहौल हमेशा तनाव ग्रस्त रहता था. घर में झगड़े होना स्वाभाविक और दैनिक गतिविधि हो गई हो जैसे.

इस तीज पर जब रीमा अपने मायके गई तो उसने अपनी परेशानी माँ से कही और कहा मुझे अब उस घर में नहीं जाना. मैं अपनी सास के साथ नहीं रह सकती मुझे उनसे अलग रहना है. माँ ने उसे समझाया ऐसा नहीं कहते रीमा. मेरे पास तुम्हारी समस्या का समाधान है. जिससे साँप भी मर जायेगा और लाठी भी नहीं टूटेगी. बस तु जरा धीरज रख. माँ ने उसे वापस आते समय एक छोटी सी डिब्बी दी और कहा रीमा अब जब भी तुम्हारी सासू माँ तुम्हें कोई कड़वी बात बोले और तुम्हें गुस्सा आये तो तुम उनको कुछ मत कहना. बस यह डिब्बी खोलना और इसमें जो भी है उसे अपने मुँह में चुपचाप दबा लेना, पर ये सावधानी जरूर रखना कि जब तक यह तुम्हारे मुँह में रहें तुम उनको कुछ भी अपशब्द मत कहना. बस चुप रहना और अपना काम करते रहना.

रीमा खुशी-खुशी अपने ससुराल चली गई. दूसरे दिन जब उसकी सासू माँ अपनी आदत के अनुसार उसे बुरा भला कहने लगीं तब रीमा ने उस डिब्बी को खोला पर उसमें 1 मोती था और उसमें एक पर्ची थी जिसमें लिखा था यह एक चमत्कारी मोती है इसे हमेशा छुपाकर रखना. इसे जब मुँह में रखो तो गलती से भी कभी किसी के लिए ना कुछ गलत सोचना ना ही कुछ गलत कहना. अगर किसी को कुछ गलत कह दिया तो इसका असर उल्टा हो जायेगा.

रीमा नें किसी को कुछ नहीं बताया. उसने चुपचाप वह मोती अपने मुँह में रख लिया. माँ के खेल अनुसार अपने काम में व्यस्त हो गई. उसे अपनी सासू माँ पर गुस्सा तो बहुत आ रहा था पर सावधानी वाली बात भी वह नहीं भूली थी. वह मन मारे चुप सब सुनती रही और अपना काम करती रही.

रीमा को आश्चर्य जनक रूप से महसूस हुआ कि धीरे धीरे उसकी सासू माँ के व्यवहार में अब बहुत सुधार होने लगा है. अब वह पहले कि तरह उसे खरी खोटी नहीं सुनाती थी. उसे भी अब सब कुछ शांति लगता था. उसकी सासू माँ से उसने रीमा कि कभी कभी बड़ाई भी करते सुना था. अब उन दोनों का व्यवहार एक दूसरे के लिए काफी सम्मानजनक हो गया था.

अब जब वह ससुराल से मायके आई तो उसने अपनी माँ को उस चमत्कारी मोती के बारे में बताया और कहा कि माँ यह मोती तो स्कूल में बहुत चमत्कारी है. इसकी वजह से आज मेरी सासू माँ का व्यवहार मेरे लिए बहुत बदल गया है. अब मुझे उनसे कोई प्रॉब्लम नहीं है.

रीमा कि माँ धीरे से मुस्कुराई और बोली इसे तुम अपने पास ही रखो. यह शायद कभी तुम्हारी बेटी या किसी और के भी काम आ जाये.

इस प्रकार से अब रीमा अपने ससुराल में खुशी खुशी रहने लगीं.

प्रश्न- आखिर उस मोती में ऐसा क्या रहा होगा? जिससे रीमा कि समस्या का समाधान हो गया.

प्रश्न- क्या मोती वाकई चमत्कारी था?

हे अविनाशी, हे अनंत

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



तू अनंत तेरी महिमा अनंत,
तेरी लीलाओं का नहीं कोई अंत.
हे प्रभु, हम दीन दुखी हैं
अपनी शरण में लो भगवंत .

हममें न ज्ञान है ना भक्ति है,
सिर्फ आसक्ति ही आसक्ति है.
हमें बचा लो हमें उबारो,
भक्ति का हमें वरदान दो.

माया पल-पल सता रही है,
तेरी भक्ति से तेरी शक्ति से.
तेरी माया को हम तोड़ दें,
ऐसी युक्ति हमें दे दो.

तुम व्यक्त तुम ही अव्यक्त हो,
तुम ही शक्ति हो तुम शशक्त हो.
तेरी प्रभुता का नहीं कोई ओर-छोर,
मेरे मन को तुम चुरा लो हे चितचोर.

तुम ही आदि हो तुम मध्य, तुम ही अंत हो.
हे अविनाशी, हे अन्तर्यामी तुम अनंत हो.
तुम आस हो, विश्वास हो, तुम ही श्वास हो.
तुम जल हो तुम पवन हो तुम धरती आकाश हो.

तुम जीव में तुम कण-कण में व्याप्त हो.
हम हैं पापी, हम हैं भूले-भटके,
हमें सन्मार्ग दिखा दो हे अविनाशी.

हम हैं आए तेरी शरण में,
हमें बचा लो हे अन्तर्यामी.
अपनी माया के त्रास से हमें बचा लो हे भगवन्त.
हमें अपनी सुरक्षा में ले लो हे अविनाशी, हे अनन्त.

राम

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



मानव को मानवता का अर्थ बताया,
मर्यादा क्या है जग को समझाया,
पुरुषों में जो उत्तम, वो मेरे राम मर्यादा पुरुषोत्तम.

सतपुरुषों की रक्षा को अपना कर्म और धर्म बनाया,
शरण तुम्हारी जो आया, उनको अपना दरस कराया.

जिनके रज कण से भी पाषाणों में प्राण आ जाए,
उन राम की भक्ति से मानव बोल तु क्या ना जाए.

बेटे का कर्तव्य क्या होता है यह राम ने हमें बताया,
प्राण जाए पर वचन ना जाए' इसका मर्म समझाया.

पत्नीव्रत धर्म निभाया, पति कर्तव्य जग को समझाया,
कैसा हो भाई-भाई का सम्बन्ध यह प्रमाण दिखलाया.

ऊँच-नीच का भेद मिटाया, शरणागत को गले लगाया,
भक्तिज्ञान दिया शबरी को, प्रेम-भक्ति पर सर्व लुटाया.

भक्ति और प्रीति की रीत, कैसे निभे यह समझाया,
मर्यादा रक्षा को जिनने, अपना जीवन ध्येय बनाया.

पुरुषों में जो उत्तम, वो मेरे राम मर्यादा पुरुषोत्तम.

नारी

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



नारी के बारे में क्या कहूँ,
नारी तो सर्व शक्ति का अवतार है.
बेटी, बहू, माँ, पत्नी सब रूपों में नारी,
नारी बिन सूना ये संसार है.

नारी से ही है जीवन में
नौ रसों की अनुभूति.
नारी है तो जीवन बगिया में
हर तरफ बहार ही बहार है.

त्याग की साक्षात् मूर्त होती नारी,
समर्पण इसका विश्वविख्यात है.
सबने है जाना और माना,
नारी से ही जगत में सुर, लय और ताल है.

सुमति और लक्ष्मी का वास वहाँ,
जहाँ नारी का होता सम्मान है.
नारी के हर रूप में माँ अन्नपूर्णा,
जगतजननी स्वयं विद्यमान है.

इस जहाँ में नारी का विकल्प नहीं,
नारी बिन सब बेकार है.
जाने इस समाज में फिर क्यों,
नारी इतनी बेबस और लाचार है.

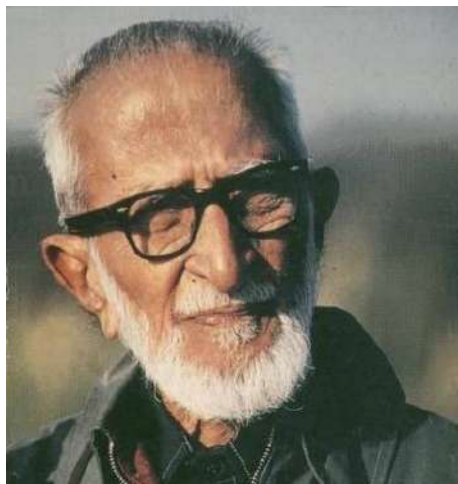
क्यों उसे जीवन में मिलता नहीं,
कहीं किसी से कोई अधिकार है.
नारी के त्याग, समर्पण, प्रेम बिना,
चहुँओर घना अंधकार है.

वंश पुष्प को जो फल बनाती,
नारी ही वह बेल है.
उसे भी उन्मुक्त आसमान दो,
जिंदगी क्यों उसकी अब भी जेल है.

नारी के कर्ज से दबी ये दुनिया,
उसका नहीं किसी से मेल है.
यह दुर्गा, काली, सबला है,
अत्याचार सहना मात्र उसका खेल है.

हमारे प्रेरणा स्रोत

डॉक्टर सलीम अली



बच्चों, आप रोज आकाश में उड़ने वाले पक्षियों को देखकर सोचते होंगे कि वे कहां से आते हैं और कहां को चले जाते हैं. उनकी प्रकृति कैसी होगी. ऐसे बहुत सारे सवाल आपके मन में आते होंगे. जी हां बच्चों हम बात कर रहे हैं डॉक्टर मोइजुद्दीन अब्दुल अली की. वह ऐसे शख्स थे जो पक्षियों के व्यवहार और उनकी प्रकृति को समझते थे. वह एक ऐसे पक्षी वैज्ञानिक थे जिन्होंने संपूर्ण भारत में व्यवस्थित रूप से पक्षियों का सर्वेक्षण किया, और पक्षियों पर ढेर सारे लेख और किताबें लिखी. जिन्हे हम बर्ड मैन ऑफ इंडिया के नाम से भी हम जानते हैं.

आइए जानते हैं उन्हें पक्षियों में दिलचस्पी कैसे पैदा हुई. जब वह एक साल के हुए तभी उनके अब्बा चल बसे और 3 साल के थे तब उनकी अम्मी नहीं रही. उनके मामा ने उनकी परवरिश की. एक दिन वह जंगल में अपने मामा के साथ शिकार करने गए. वहां उन्होंने एक पक्षी को मार गिराया. उस घायल पक्षी को गोद में उठाकर वह बड़े ध्यान से बार-बार देखते रहे और सोचते रहे. यह कौन सा पक्षी है कहां से आया होगा. वह पक्षी गौरैया जैसा लगता था परंतु उस पक्षी के गले पर पीला धब्बा था सलीम बड़े असमंजस में था. पक्षी के बारे में उसने अपने मामा से पूछा, तो वह भी उस उनके प्रश्नों का उत्तर ना दे सके. यहीं से उनके अंदर पक्षियों के जीवन और उनके अन्य पहलुओं के बारे में जानने की जिज्ञासा पैदा हुई.

इसके बाद उन्होंने सन 1913 में मुंबई विश्वविद्यालय से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की. परीक्षा पास कर वह अपने भाई के साथ वर्मा चले गए. वहां उनका इमारती लकड़ियों का व्यवसाय था. उनका मन वहां व्यवसाय में नहीं लगता. वह वहां भी ज्यादातर समय जंगल में चिड़ियाओं को देखने में गुजार दिया करते थे. उनके व्यवहार से नाराज होकर उनके भाई ने उन्हें वापस मुंबई भेज दिया. सात साल वर्मा में रहने के बाद वह वापस लौटे तो उन्होंने पक्षी शास्त्री

विषय में प्रशिक्षण लिया. फिर उन्होंने प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम के हिस्ट्री सेक्शन में नौकरी कर ली.

डॉक्टर सलीम ने जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय में दाखिला लिया. वहां उन्होंने प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक इरविन स्ट्रासमेन से शिक्षा ली. बर्लिन में शिक्षा लेने के बाद वह 1930 में भारत लौट आए. फिर यहां उन्होंने पक्षियों पर अध्ययन प्रारंभ किया. कहा जाता है कि डॉक्टर सलीम पक्षियों की जुबान समझते थे उन्होंने पक्षियों की अलग-अलग प्रजातियों के बारे में अध्ययन किया. उन्होंने देश के कई भागों और जंगलों में भ्रमण किया. उन्होंने कुमायूं के जंगलों से बया पक्षी की एक ऐसी प्रजाति ढूंढ निकाली जो लुप्त घोषित हो चुकी थी. बच्चों कुमायूं क्षेत्र उत्तराखंड राज्य में है. जिसकी सीमा तिब्बत और नेपाल से भी लगती है. यहां साइबेरियन सारस भी प्रवास पर आते हैं. डॉक्टर सलीम ने उन्हें भी नजदीक से देखने का प्रयास किया. उन्होंने उनका बारीकी से अध्ययन कर यह मालूम किया कि साइबेरियन पक्षी मांसाहारी नहीं होते, बल्कि वह पानी के किनारे पर जमी काई खाते हैं.

डॉक्टर सलीम ने पक्षियों को पकड़ने के लिए प्रसिद्ध डॉ एंड फायर व डक्कन विधि की खोज की. इस विधि में पक्षियों के साथ दोस्ताना व्यवहार किया जाता है. इसमें पक्षियों को बिना कष्ट पहुंचाए पकड़ा जा सकता है. इस विधि में पक्षियों के व्यवहार, गुण-अवगुण, प्रवासी आदतों पर रिसर्च किया जाता है. इसके बाद उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी द फॉल ऑफ ए स्पैरो. जिसमें उन्होंने पक्षियों के बारे में अनेक रोचक और महत्वपूर्ण जानकारी दी.

डॉक्टर सलीम को उनके कार्यों के लिए कई सम्मान भी मिले. हैं. वह बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी में एक महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे. उनके महत्वपूर्ण कार्यों के लिए उन्हें भारत सरकार ने भी सन 1976 में पद्म विभूषण से नवाजा. उनके नाम पर जम्मू कश्मीर में एक राष्ट्रीय उद्यान भी है.

डॉक्टर सलीम द्वारा लिखित यह पंक्ति-

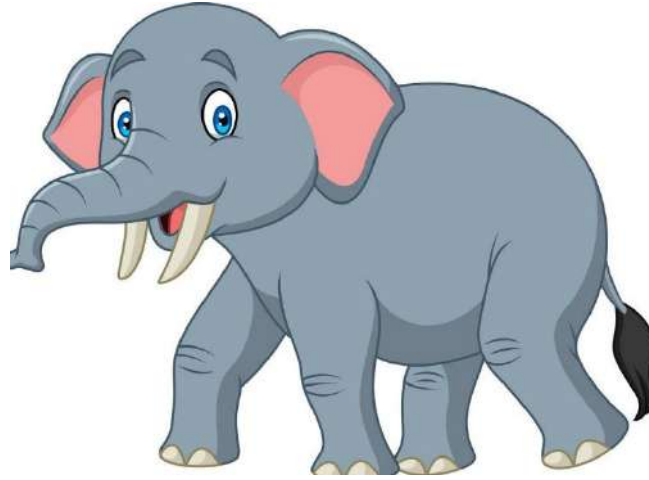
कौन पूछता है पिंजरे में बंद पंछियों को

याद वही आते हैं जो उड़ जाते हैं

बच्चों यह थे डॉक्टर सलीम जिन्होंने बचपन में अपने मां-बाप को खोने के बाद भी हार नहीं मानी. आर्थिक परेशानी के बाद भी उन्होंने कठिन परिश्रम से देश का नाम रौशन किया. इसी वजह से वह आज हमारे प्रेरणा स्रोत हैं.

हाथी आया

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



कुश, परी, गीताली आओ,
नाचो, गाओ, शोर मचाओ.
देखो-देखो हाथी आया,
साथ में अपने साथी लाया.

सुंदर, गोल मटोल है तन,
लगता है हर्षित है मन.
अपनी धुन में हाथी चलता,
चींटी से हरदम है डरता

लंबे-लंबे हाथी के दांत,
सबको देते हैं वो मात.
सूपा जैसे उसके कान,
देखो-देखो उसकी शान.

मोटे- मोटे हाथी के पैर,
करते हैं वो हरदम सैर.
लंबी सूंड, पूँछ है छोटी,
गरदन उसकी अच्छी मोटी.

गन्ना मीठा जब मिल जाता,
खूब खाता,खूब पचाता.
देख हाथी को सर झुकाता,
हाथी को वो गजब भाता.

चलो दीपावली मनाएंगे

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न



चलो दीपावली मनाएँगे, सब मिलकर दीप जलाएँगे,
मिट जाए जग से अंधियारा, हम ऐसा दीया जलाएँगे.

मानव -मानव में प्रेम बढ़े, हृदय से ईर्ष्या-द्वेष हटे,
रहे न बैर अतंस में ऐसी, प्रेम की जोत जलाएँगे.

रोशनी से भर जाए मन, प्रकाशमय हो जाए जीवन,
उपवन बन जाए आँगन, खुशियों के फूल खिलाएँगे.

शिक्षा मिले संस्कार मिले, मन में ज्ञान का दीप जले,
गाँव-शहर के हर बच्चे को, शिक्षित हम कर जाएँगे.

चारों तरफ़ खुशहाली हो, आँखों भर हरियाली हो,
सब होठों पर मुस्कान खिले, ऐसी दीवाली मनाएँगे.

भेदभाव दिल से मिटाएँगे, मिलकर दीप जलाएँगे.
मिट जाए जग से अंधियारा, हम ऐसा दीया जलाएँगे.

ये भोले भाले बच्चे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



ये भोले-भाले बच्चे,
ये मन के होते सच्चे.
ये गम से होते बेगाने,
ये खिलौनों के दीवाने.

इनके साथी हैं खिलौने,
इनको लगते बड़े सलोने.
ये खिलौना ही संसार है,
ये खुशियों का आधार है.

ये फूल से होते प्यारे,
ये रूप के होते न्यारे.
ये माँ के होते दुलारे,
ये माँ- माँ तभी पुकारे.

ये माँ के नन्हें राजा,
ये पिता के युव राजा.
माँ की गोद है भाता,
इसी में हैं मज़ा आता.

माँ की गोद ही संसार है,
यही खुशी का आधार हैं.
इसी में मिलता प्यार है,
माँ में ही ममता दुलार है.

भगवान का स्वरूप

रचनाकार- सीमा यादव



भ-भूमि, ग-गगन व-वायु, अ-अग्नि, न-नीर. हमारा शरीर इन्हीं पाँच तत्वों से मिलकर बना है. जब तक प्राण में साँस चलती है, तब तक शरीर जिन्दा होता है और जब साँस रुक जाती है, तो शरीर निष्प्राण होकर मृत हो जाता है. अंत में इन्हीं पंच तत्वों में पूरा शरीर विलीन हो जाता है. जब तक व्यक्ति जीवित रहता है, तब तक वह धरातल पर कुछ-न-कुछ कर्म अवश्य करता है. इसी से शरीर गतिमान होकर सक्रिय रूप से कार्य कर पाता है. और आजीवन शुभ-अशुभ कर्मों को करके अंत में इस संसार के प्रति वैराग्य धारण करके विरक्त हो जाता है. सारे रिश्ते-नातों से मोह छूटने लगता है. ऐसे व्यक्ति अनासक्त भाव से संसार सागर से निकलने के बहुत से उपक्रम करते रहते हैं. किन्तु अपने पूर्व जन्म के प्रारब्ध से वह अल्पायु या दीर्घायु होकर जीवन जीता है.

जन्म-मरण का यह चक्र चलता-रहता है. कई कल्प बीत गये हैं. कईयों महापुरुष हुए हैं. जिनका वर्णन करोड़ों मुख से भी नहीं किया जा सकता है. सभी युगों में भगवान के अवतार प्रत्यक्ष-परोक्ष रूपों में हुए हैं, और आगे भी होते रहेंगे. यही अटल सत्य है. भगवान के स्वरूप को जानने व समझने हेतु हमें अपने अन्तःकरण के चक्षु को ज्ञानमय बनाना होगा. जब ज्ञान के विभिन्न रूपों की परिभाषा को हमारा अन्तःकरण समझ लेता है, तभी हम जीवन के यथार्थ स्वरूप को समझने के योग्य हो जाते हैं. जब हम बिना किसी स्वार्थ के, बिना किसी प्रयोजन के परमार्थ के कार्यों या उद्देश्यों में तल्लीन हो जाते हैं, तभी हम भगवान के स्वरूप के दर्शन हेतु एक कदम आगे बढ़ा देते हैं. फिर आप तत्क्षण ही भगवद् भक्ति के मार्ग की दिशा में मग्न हो जाते हैं. जब कोई व्यक्ति यहाँ तक पहुँच जाता है, तब उसके लिए मान-अपमान, भय-शोक, घटा-नफा इत्यादि चीजों से कोई सरोकार नहीं होता है. ऐसा व्यक्ति आत्मोत्थान के लिए ही संघर्षरत होता है. वे स्वयं में ही प्रतिस्पर्धा करते रहते हैं. आत्मविजय की प्राप्ति हेतु कितने ही त्याग, दुःख एवं कठिनाईयों से होकर गुजरना पड़ता है. ऐसी तपस्या और उससे मिलने वाली असहनीय पीड़ा को केवल वही अनुभूति या महसूस कर सकता है.

सत्य ही भगवान का साक्षात् स्वरूप है। जहाँ पर सत्य विराजमान होता है, वहाँ पर निश्चय ही भगवान के स्वरूप की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। और यह अनुभूति केवल उन्हीं व्यक्ति को होती है, जो वास्तव में निर्मल, पावन और निश्छल हृदय वाले होंगे। लेशमात्र भी यदि हमारे मन में गंदले विचार, कुटिल पूर्वाग्रह और षड्यंत्र होंगे तो हमें कभी-भी सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। चित्त की शुद्धि सिर्फ और सिर्फ सच्चा ज्ञान ही कर सकता है। जिस प्रकार जल से शरीर शुद्ध और पवित्र होता है, ठीक उसी प्रकार आत्मा और मन की शुचिता के लिए सत्य के निर्मल जल से सिंचित होना होगा। तभी हम तत्त्वज्ञान की प्राप्ति कर सकने में सफल हो सकेंगे। यदि इतना भी नहीं कर पाये, तो फिर मानव शरीर में आपका जन्म होना व्यर्थ ही होगा। मनुष्य अपने सुकर्मों के कारण अपने हिस्से के दारुण दुःखों से भी छुटकारा पा लेता है। क्योंकि यह सारा जगत कर्म प्रधान के सिद्धांत पर आधारित है। अच्छा कर्म अच्छा परिणाम देता है। सम्पूर्ण सृष्टि में ही शक्ति की माया निवास करती हैं। उन्हीं की प्रेरणा से समस्त चराचर जीव इस संसार में अपना कार्य करते हैं और मुक्ति पाकर पुनः जीवन-मरण के पाश में बंधकर अपने नियोजित कर्मों के प्रतिफल को भोगते हैं। यही भगवान का वास्तविक स्वरूप है। वे जड़-चेतन सभी में वास करते हैं।

पाप के घड़ा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



घड़ा पाप के भर जथे, बढ़थे अत्याचार.
दुःख दर्द मिलथे सदा, होथे ओकर हार.

करे जनम भर पाप जे, बुढ़त काल पछताय.
यज्ञ करे कतको जगह, तभो नरक मा जाय.

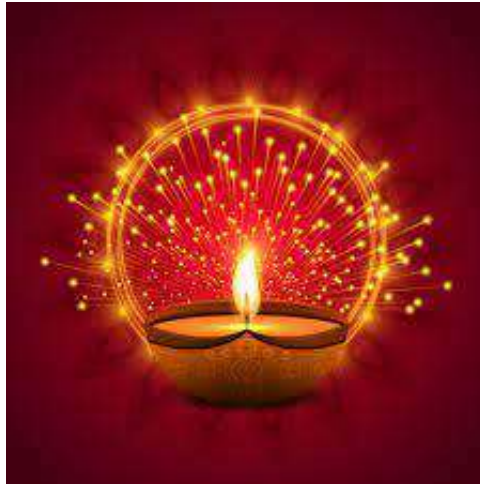
माटी के जी घड़ा बने, जिनगी करम भराय.
ऊपर छलकय पाप जब, बेरा मा फट जाय.

पाप पुण्य के लेख ला, करथे जी भगवान.
राम नाम के जाप से, बने नेक इंसान.

पशु पक्षी ला मार के, जे मनखे हा खाय.
तड़प-तड़प के मर जथे, राक्षस योनी जाय.

दीपावली

रचनाकार- रश्मि अग्रवाल



चलिए हम सब मिलकर
इस दीपावली दीपकों के साथ,
कुछ नवाचार करें.

एक ऐसा दीपक निर्मित करें
जिसमें सादापन हो,
जैसे एक साधु का जीवन.

जो सुंदर हो उतने
जितने देवों के उपवन
जो ऊंच-नीच और अमीर-गरीब का भेद मिटाएं,

हर अंधियारी रात का होता एक सबेरा
यह याद दिलाए,
जो अच्छे बुरे का फर्क समझाए.

जो नाउम्मीदों को उम्मीद दिलाए
हारे हुए की आस बंधाए
भटके पथिकों को राह दिखाए.

एक दिया सीमा के रक्षक
अपने वीर जवानों के नाम
मानवता-रक्षक इंसानों के नाम.

एक ऐसा दिया प्रज्वलित करें जो
अंतर्मन को प्रकाशित करे,
जो मानव मन को प्रेम एवं प्रकाशमान करें.

गुपचुप वाला

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न



अरे अरे! मीना, रीना, सतू रूको तो सही, मैं भी आ रही हूँ.

एक मिनट, जरा मुझे पैसे निकालने दो. ऐसा कहते हुए मीतू अपना बटुवा टटोलने लगी. शायद लड़कियों ने मीतू की आवाज नहीं सुनी.

दोपहर का समय था, भोजन अवकाश की घंटी बजने के बाद सारे बच्चे अपने-अपने कक्षा से बाहर निकल गए. उन दिनों गाँवों में ज्यादातर केवल पांचवीं तक का स्कूल हुआ करता था. माध्यमिक स्तर की पढ़ाई के लिए गाँव से चार-पाँच किलोमीटर की दूरी तय करके, दूसरे गाँव का स्कूल जाना पड़ता था. आसपास से कई गाँव के बच्चे वहाँ पढ़ने के लिए आया करते थे.

आज के समय में जिस तरह से स्कूलों में दोपहर का भोजन दिया जाता है, पहले इस तरह का कोई सुविधा नहीं हुआ करता था. वहीं से आने वाले स्थानीय बच्चे भोजन करने घर चले जाया करते थे. दो चार बच्चे घर से पन्नी में बांधकर रोटियाँ लाया करते और किसी भी जगह छांव देखकर छुपते छुपाते हुए खा लिया करते थे. स्कूल के बाहर मैदान चाट गुपचुप के ठेले और चना- चबेना बेचने वाले दुकान लगाये रहते थे, इससे उन्हें भी आमदनी हो जाते और बच्चों को भी भूख मिटाने के लिए खाई-खजाना मिल जाया करते थे. मीतू जैसे बहुत सारे बच्चे एक रुपये, दो रुपये पैसे लाते और पास में बिक रहे चना चबेना, गुपचुप, गुलगुल भजिया खाकर पानी पी लेते थे. बहुत सारे बच्चे भूखे रह लेते थे.

मीतू अपनी कक्षा में सबसे छोटी थी, लेकिन पढ़ने लिखने में सबसे होशियार थी वह. आज सुबह मीतू ने ठीक से खाना भी नहीं खा पाई थी क्योंकि आज उनकी माई ने करेले की सब्जी बना रखी थी और मीतू को करेले की सब्जी बिल्कुल भी पसंद नहीं है.

स्कूल का समय सुबह के दस बजे रहती है लेकिन चार किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए दो घंटे पहले यानी आठ बजे से ही घर से निकलना पड़ता था. पैदल चलते-चलते मीतू बहुत थक जाती थी, सभी सहेलियों में सबसे पीछे रहती थी. इसी प्रकार चार बजे स्कूल की छुट्टी हुआ करती तो घर पहुँचते पहुँचते एकदम शाम हो जाया करता था। दोनों पैर दुखने लगते भूख और थकान से आँखें धंस जाया करती थी. उस समय स्कूल जाने वाले बच्चों की यही दिनचर्या हुआ करता, पढ़ाई करने के लिए कुछ घंटे का समय निकालना पड़ता. कभी कभी तो गृहकार्य किये बिना ही सो जाया करते थे फिर अगले दिन गुरुजी के डंडे खाने पड़ते.

मीतू के आवाज लगाने पर भी उनकी सहेलियाँ भागकर गुपचुप वाले के पास चले गए और सारे बच्चे गुपचुप खाने लगे. मीतू ने पूरा बस्ता खंगाल डाली लेकिन आज तो वह पैसे लाना भी भूल गई थी. उसे बहुत जोरों से भूख लग रही थी और उनके आँखों में आँसू आ गए. मीतू खाली हाथ गुपचुप के ठेले के पास गई और कुछ दूरी पर पेड़ की छांव में खड़े होकर गुपचुप वाले को देखने लगी.

वह उनके ठेले से रोज़ दो रुपये का गुपचुप खाया करती थी. आज ठेले वाले की आँखें भी उन लड़कियों के बीच में मीतू को ईधर-उधर तलाश कर रही थी. आज वह छोटी लड़की दिखाई नहीं दे रही है.

फिर दूर में खड़ी मीतू पर उनकी नजरें पड़ी, वह बहुत उदास और भूख के कारण सुस्त दिखाई पड़ रही थी. गुपचुप वाले को समझते देर नहीं लगा, उसने एक प्लेट में आठ दस गुपचुप भर लिए और मीतू के पास पहुंचा. क्यों? छोटी मीतू, आज गुपचुप नहीं खाओगे? मीतू ने ललचाई आँखों से प्लेट की तरफ देखा फिर उदास होकर बोली नहीं, आज मेरे पास पैसे नहीं हैं और इसलिए मुझे भूख भी नहीं है.

गुपचुप वाले ने कहा आज मेरी बेटी की जन्मदिन है इसलिए ये गुपचुप मैं आपको फ्री में खिलाना चाहता हूँ ऐसा कहकर उसने एक फुल्की उनके मुँह में डाल दिया और मीतू झट से उनके हाथों से प्लेट लेकर एक मिनट में सारे के सारे फुल्कियाँ चट कर गई, फिर कुछ ही पल में बैठने की घंटी बज गई और मीतू प्लेट वहीं छोड़कर, गुपचुप वाले को हाथ हिलाते हुए अपनी कक्षा की तरफ दौड़कर चली गई.

तेरी महिमा अपरंपार है

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



अंबे जगदंबे मैया तेरी महिमा अपरंपार है.

हम हैं बालक छोटे-छोटे, तू करुणा की अवतार है.
जब धरती पर बढ़ता पाप तो तू लेती अवतार है.
मुझे पार लगा दो मैया, नैया फँसी मझधार है.

तू ही है शैलपुत्री माता, ब्रह्मचारिणी तू कहलाती.
कालरात्रि, कुष्मांडा तू है, चंद्रघंटा तू ही कहलाती.
स्कन्दमाता भी नाम तुम्हारा, तुम ही हो कात्यायनी.

हे माता तुम हो शंभू प्रिया, तुम माता महागौरी.
सिद्धियों को देने वाली, तुम हो सिद्धिदात्री.
भवसागर से पार लगा दो, ममतामयी भवानी.

काली का रूप धरो फिर ओ मैया महाकाली.
जगत में बढ़ रहा पाप का पुनः बोलबाला है.
करुण हृदय से तुम्हें पुकारें, ओ मैया शरावाली.

मुझे दे दे अपनी भक्ति, तू शक्ति का अवतार है.
तेरी भक्ति के बिना मैया, मेरा जीवन बेकार है.
तेरी शरण में आए बिना, मेरा कहाँ उद्धार है.

अंबे जगदंबे मैया तेरी महिमा अपरंपार है.

नन्ही चींटी

रचनाकार- जयंती खमारी "रूही"



हाथी दादा हाथी दादा, जोर-जोर चिल्लाती.
हाथी दादा के कानों में आवाज न मेरी जाती.

कैसे पहुँचे बात मेरी, सोच-सोच घबराती.
पुरखों के उपदेश को, क्या हूँ मैं अपनाती.

कुछ सोच फिर से नन्ही, चींटी जोर लगाती.
दम लगा कर हाथी दादा का नाम पुकारती.

हाथी दादा हाथी दादा फिर से मैं चिल्लाई.
अरे-अरे यह कौन आया, देखें नीचे भाई.

मैंने कहा हाथी दादा देख-देख के चलना.
पहले की भाँति अपना, बुरा हाल न करना.

छोटी सी चींटी भी अपना, बड़ा कमाल दिखाती.
अच्छे-अच्छे को अक्सर, है वह पानी पिलाती.

बड़ी शान से हाथी दादा आगे बढ़ते जाते.
हम जैसे नन्हे-मुन्ने को भाव नहीं क्यों देते.

आँखें चौड़ी करके दादा, बोले नन्ही चींटी.
ऐसी वैसी बात नहीं यादें हैं मीठी-मीठी.

छोटे बड़े हम सब मिलकर ही हैं रहते.
दंभ भाव छोड़ दिया, अब नेहभाव में बहते.

सुनकर नन्ही चींटी बोली, यह हुई ना बात.
हाथी दादा अब रोज होगी आपसे मुलाकात.

सरदी आई

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू



चुपके-चुपके सरदी आई
देना अम्मा हमें रजाई
आइसक्रीम हमें ना भाती
हमको देना दूध मलाई.

दी को दे दो शाल पुरानी
छोटू को मफलर पहनाना
बाबा माँग रहे हैं कंबल
बस दादी को तुम समझाना
सुबह नहार्ती ठंडे जल से
फिर खाती हैं खूब दवाई.

पापा जब आफिस जाते हैं
देर रात तक वे आते हैं
खुद करते हैं लापरवाही
औरों को बस समझाते हैं
पापा से कह देना अम्मा
छोड़े अपनी जरा ढिठाई.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

कुम्हार और कबूतर

इंसानों का सफल होना, उनके विचारों पर निर्भर करता है. एक पाजीटिव सोच इंसान की, पूरी लाइफ बदल सकता है. इसे समझने के लिए एक कहानी, मैं सुनाता हूँ. कुम्हार और कबूतर की है कहानी, उसे बताता हूँ. एक गांव में श्याम नाम का कुम्हार रहता था. बच्चों के लिए मिट्टी के सुंदर खिलौने बनाता था. श्याम पैसा कमाने की चाह में, कुछ अलग बनाने का विचार किया. खिलौने तो बनाता ही हूँ, इस बार चिलम बनाने का निर्णय लिया. कुम्हार मिट्टी इकट्ठा की, पानी डाला और गुथना शुरू कर दिया. इतने में कबूतर वहाँ पहुँचकर, कुम्हार से कुछ प्रश्न किया. कुम्हार भैया, आज आप इतनी ज्यादा मिट्टी गुथकर क्या बनाओगे. कुम्हार बोला, आजकल चिलम बड़े फैशन में है खूब बिकेगी तुम देखते रह जाओगे. अधिक से अधिक चिलम बनाकर बाजार ले जाऊँगा. इसे बेचकर मोटी रकम कमाऊँगा. कबूतर ने कहा-गर्मी आ रही है चिलम छोड़, सुराही बनाओ. अपना विचार बदल लोगों को जहर नहीं, ठंडा जल पिलाओ. कबूतर की सलाह से उसने अपना विचार बदल दिया. चिलम छोड़ इस बार सुराही का रूप दिया. जैसे ही सुराही का आकार देना शुरू किया, मिट्टी से आवाज आई. पहले तो कुछ और रूप दे रहा था, अब कुछ और रूप दे रहे हो भाई. मेरा विचार बदल गया, इसलिए तुम्हें सुराही का रूप दे रहा हूँ भाई. मिट्टी बोली-तेरा तो विचार बदला मेरी तो जिंदगी ही बदल गई भाई.

वो कैसे?

अगर चिलम बनती तो मुझ पर आग भरी जाती. खुद भी जलती और दुनिया को भी जलाती. अब सुराही बनी हूँ, जल से भरी रहूँगी. खुद भी शीतल रहकर, दुनिया को भी ठंडक रखूँगी. मिट्टी की बातों को सुनकर कुम्हार अपने विचारों पर गर्व किया. जिसके वजह से यह संभव हुआ उस कबूतर को धन्यवाद दिया. सही कहा है- इंसानों का सफल होना विचारों पर निर्भर करता है. एक पाजीटिव सोच से अपनी जिंदगी और दुनियां बदल सकता है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ठ	2				4				5
				6 ह			7		
8 लु									
			9 ठ			10 क			11
	12 ल							13	
					14 झी				
15 क		16							
17					18 गो		19		
									20 का
		21 म					22		

बाएँ से दाएँ

- पता चला 4. नाती की पत्नी, बहु, 6. एक पेड़ का नाम 7. बड़ा मूँछ वाला
- फसल काटने का समय
- एक पक्षी का नाम
- नजदीक 13. मट्ठा
- रसा 17. आदतन
- वक्ता 21. माता
- रात

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 भ		2 ज	ग	र	ब	ग	3 र		4 हा
5 ल	जा	त					6 म	ख	ना
भ		7 र	द	ख	द		के		
ल		ख		रा			8 लि	मा	9 न
10 हा	11 ल	त			12 आ		या		न
	13 क	र	म	ता	भा	जी		14 बो	ज
	र								ती
15 अं	ध	र	झं	व	र		16 स	झी	या
	क				ग		इ		
17 उ	र	मा	ल		18 द	र	घो	ट	नी

ऊपर से नीचे

- उदण्ड 4. गोरा, 5. तेज हवा, तूफान 9. पिटना
- महिलाओं का त्योहार
- आएगा 13. शराबी
- गलत का निशान
- दवाई (उर्दू)
- बिस्तर 19. किसका
- शरीर, तन



अपनी **किलोल** की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने की रुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर खाता क्र. 45730100004644 आई.एफ.एस.सी कोड BARBOMOWAXX(O is zero others are 'O' in IFSC CODE) में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात www.kilol.co.in में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहित अपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।